रजि० नं० ७४७६/६४ ❀ ओ३म् ❀ पो०रजि० P/RTK-188

वैदिक भक्ति साधन आश्रम, रोहतक की मासिक पत्रिका

यज्ञ योग ज्योति

आश्विन–कार्तिक २०४३, तदनुसार अक्तूबर, नवम्बर १९८६

वर्ष २२ } { अङ्क १ २

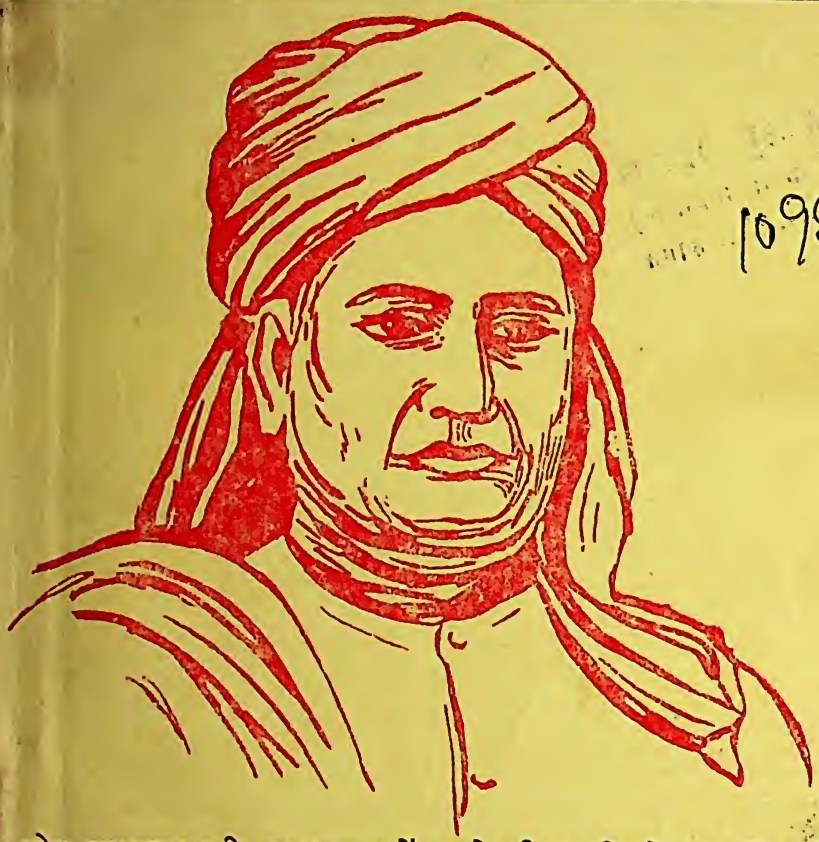

घोर अन्धकारमयी अमावस्या में अपने जीवन दीप से सहस्रों-लक्षों दीपों को ज्योतित करने वाले ! महर्षि दयानन्द जी को हमारा कोटि-कोटि प्रणाम ।

सम्पादक–विद्याव्रत शास्त्री सह-सम्पादक–पं० लखपति शास्त्री

विदेश से शुल्क १५०० रुपये वार्षिक शुल्क २० रुपये

संरक्षक शुल्क २०० रुपये

—: विषय सूची :—

क्र० सं०	शीर्षक	पृष्ठ
१.	राष्ट्र-यज्ञ भूमिका	१
२.	राष्ट्र-यज्ञ प्रथमा संस्कृति	६
३.	राष्ट्र-यज्ञ राष्ट्र को सींचना	१३
४.	राष्ट्र-यज्ञ दुर्दिन मिटावें	१७
५.	राष्ट्र-यज्ञ सफलता कैसे ?	२२
६.	राष्ट्र-यज्ञ विजय रहस्य	२६
७.	राष्ट्र-यज्ञ विदुषी महिलाएं	३२
८.	राष्ट्र-यज्ञ पितर	३८
९.	राष्ट्र-यज्ञ अध्यापक	४०
१०.	राष्ट्र-यज्ञ उपदेशक	४४
११.	राष्ट्र-यज्ञ प्रचारक	५०
१२.	राष्ट्र-यज्ञ अतिथि	५५
१३.	राष्ट्र-यज्ञ याज्ञिक बुद्धि	५९
१४.	राष्ट्र-यज्ञ राष्ट्र नेता को वेदोपदेश	६४
१५.	राष्ट्र-यज्ञ वीर नेता	६८
१६.	राष्ट्र-यज्ञ भक्त वीर	७२
१७.	राष्ट्र-यज्ञ क्षत्रिय-अग्नि होता=	७६
१८.	राष्ट्र-यज्ञ वेदानुयायी राष्ट्र वीरो	८०
१९.	राष्ट्र-यज्ञ संयमी राजपुरुष	८४
२०.	राष्ट्र-यज्ञ राष्ट्र सेवक के गुण	८९
२१.	राष्ट्र-यज्ञ सुराज्य	९५
२२.	आवश्यक समाचार	१०१
२३.	आश्रम के आँचल से	१०२

हरियाणा शिक्षा विभाग के सरकुलर क्रमांक 3352–यू 25 पु दिनांक 4/11/71 के अनुसार 129 नं० पर यज्ञ योग ज्योति पत्रिका को स्कूलों, कालिजों तथा पुस्तकालयों के लिए स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है।

मुद्रक तथा प्रकाशक विद्याव्रत शास्त्री के प्रबन्ध से लोकचेतना प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपकर अक्तूबर, नवम्बर 1986 को प्रकाशित हुई।

1098

राष्ट्र यज्ञ : भूमिका

राष्ट्र =मातृ भाषा–मातृ संस्कृति–मातृ भूमि। अनिवार्यतः राष्ट्र की भाषा संस्कृति भूमि को अपनाना पड़ता है। बल्कि देश की भाषा वेश भूषा, रीति रिवाज, पर्व त्योहार सब को मनाने चाहिएं।

राष्ट्र-जन राष्ट्र भूमि को उपजाऊ, सीमा को सुरक्षित, आन्तरिक सुव्यवस्था, मातृ भूमि को निष्कण्टक बनाएं। बाहर-भीतर से कोई राष्ट्र की भूमि का अपमान न करे न सहे। देश को सुन्दर और निरापद बनाकर वे बल वीर्य पराक्रम, पुरुषार्थ, चरित्र, शक्तिशाली, समृद्ध बनाकर आदर्श सुराज्य बनावें, राष्ट्र की भूमि का सम्मान बढ़ाने के लिए इस भूमि को मातृ भूमि कहें।

यह आर्यावर्त ही वह समृद्ध राष्ट्र रहा है जिसके चरणों में बैठ कर मानव जाति ने बहुत कुछ सीखा आर्यावर्त देश में धर्म को प्रमुखता दी जाती रही, धर्म का अर्थ मजहब न समझें, परन्तु धर्म का सुन्दरतम अर्थ है कर्तव्य, सदाचार और न्याय। अतः धर्मात्मा शासक का अर्थ हुआ कर्तव्य परायण, सदाचारी न्यायकारी शासक। धर्म तन्त्र का अर्थ हुआ धर्मात्माओं का शासन। जिस राष्ट्र में कर्तव्य सदाचार, न्याय को प्रमुखता दी जाती हो वही धर्म तन्त्र राष्ट्र होगा। धर्म तन्त्र में ज्ञानी, मनीषी, विद्वान् मिल कर अपना दृढ़ व्यापक संगठन बनावें और शासन में धर्मात्माओं के विचारों को प्रमुखता/वजन दिया जाता हो। इतिहास बताता है कि रामायण महाभारत काल में राज पुरोहित होते थे, उनकी स्वीकृति हर कार्य में आवश्यक समझी जाती थी, क्योंकि राज पुरोहित बड़े तपस्वी, ज्ञानी, राष्ट्रहितैषी होते और राष्ट्र

की सेवा समुन्नति वृद्धि के कार्य में सदैव अग्रसर सन्नद्ध रहते वही सम्मान-पात्र पुरोहित होते और बड़ी बात है कि वे निःशुल्क राष्ट्र सेवा में रत रहते थे।

यज्ञः—राष्ट्र के साथ यज्ञ शब्द जुड़ा हुआ है। आर्य संस्कृति में इन छोटे-छोटे शब्दों में बहुत बड़े रहस्य हैं, यज्ञ, योग, तप, संयम, इत्यादि। यज्ञ का अर्थ प्रायः विद्वान् देव पूजा, संगतिकरण दान करते हैं। वस्तुतः परहित निस्स्वार्थ बलिदान होना, अर्पित होना, जीवन में अग्नि के गुण, कर्म स्वभाव को धारण करने की साधना करना ये सब कार्य यज्ञ कोटि में गिने जाते हैं। यदि इतना अधिक कोई न समझे तो ऋषियों ने कहा कि यज्ञ की आत्मा है स्वाहा, यज्ञ के प्राण हैं इदं न मम, यज्ञ का सार है सुगन्धि, यश। यह सब भावना राष्ट्र के प्रति हो। राष्ट्रहित में जो अर्पित किया, बलिदान किया, वह श्रेष्ठ हुआ जो कुछ सेवा की उसके प्रति अहंकार आसक्ति न रहे—राष्ट्र की निस्स्वार्थ सेवा से यश अवश्य होगा। उससे विनम्रता आवे, अभिमान न उपजे। यह है राष्ट्र यज्ञ, श्रेष्ठतम राष्ट्र सेवा।

दैनिक यज्ञ से लेकर अश्वमेध यज्ञ तक नाना प्रकार के छोटे-बड़े, दैनिक, नैमित्तिक, बृहद् यज्ञों के विधान ब्राह्मण व स्मृति ग्रन्थों में मिलते हैं, परन्तु पंच महायज्ञ और राष्ट्र यज्ञ महान् यज्ञ कहलाते हैं। प्रत्येक आर्य नर-नारी द्विज को प्रतिदिन अवश्य करने का आदेश है, गीता में भगवान कृष्ण ने तो ३/१२ श्लोक में यहाँ तक लिख दिया कि जो यह यज्ञ किए बिना खाता है वह देवों का चोर है। पूज्य म० प्रभु आश्रित जी ने सिद्धान्त रूप में लिखा कि सब आस्तिक-जनों को पहले आत्मा को भोजन देना

चाहिए फिर शरीर को भोजन देना चाहिए। आत्मा का भोजन ब्रह्म-यज्ञ, देव-यज्ञ ही तो हैं। यदि इस प्रकार का दृढ़ संकल्प बना लिया जावे तो फिर नियम टूटता नहीं, एक प्रकार का स्वभाव बन जाता है, इन यज्ञों को करने वालों को किसी प्रकार का अभाव नहीं होता—याज्ञिक कभी ऋणी नहीं होते इत्यादि वेद प्रमाण मिलते हैं, यह अनुभव में भी आता है।

२- राष्ट्र यज्ञ :-यह आज के युग की मांग है। आर्य जाति सर्व-प्रथम व सर्वश्रेष्ठ संस्कृति की स्वामिनी है। यही आर्य जाति करोड़ों वर्षों तक विश्व पर अपना साम्राज्य रखती थी, परन्तु समय का कुप्रभाव कहिये अथवा आर्यों के अपने कुकर्मों के दुष्परिणाम समझिये कि ये आर्य १३०० वर्ष तक गुलाम रहे, अपमानित हुए नारी जाति का बहुत बड़ा तिरस्कार हुआ, लुटेपिटे यहां तक कि मातृभूमि के कई बार विभाजन हुए, इन सबका कारण आत्म विस्मृति—या—वेद आज्ञाओं की विस्मृति व उल्लंघन है।

समय फिर करवट ले रहा है। युग प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज इस आर्यावर्त देश में पैदा हुए। नैष्ठिक ब्रह्मचर्य लेकर। गुजरात से गंगोत्री अलक्षनन्दा तक। जेहलम से कलकत्ता तक पैदल घूम-घूम कर सत्य सनातन आर्यसंस्कृति का पुनः उद्धार किया। वेदों के भाष्य कर के आर्यों के हाथोंमें दिए। उन्हीं की उज्ज्वल बुद्धि ने देश की कुरीतियों पर कुठाराघात किया और स्वदेशप्रेम व स्वराज्य का सुन्दर संदेश आर्यों को देकर मुर्दा-सी जाति में जान डाल दी। अपने कार्य को चलाने के लिए एक क्रान्तिकारी पवित्र संस्था आर्य समाज बना दी।

३- परन्तु यह हमारा दुर्भाग्य है कि राष्ट्र की बागडोर उनके

हाथों में है जो पाश्चात्य वातावरण में पले पढ़े–जिन्हें अपनी संस्कृति की जानकारी नहीं। उसके महत्व का सम्मान नहीं : जो विधर्मी देश को इस्लामी देश व ईसालैण्ड बनाने पर तुले हुए हैं जो आर्य संस्कृति को मिटाने के लिए कोई प्रयत्न छोड़ते नहीं। जिनको आर्यावर्त देश का न सम्मान है न इसके प्रति कृतज्ञ हैं उनका मुंह मक्का मदीना और योरोशलम की ओर रहता है। जो भारत का अन्न खा कर भी पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे लगाते हैं। "हंस कर लिया पाकिस्तान, लड़कर लेंगे हिन्दुस्तान" जो लोग यह घोषणा करते हैं–जिन्होंने लक्ष्य बनाया कि सन् २००० तक भारत को अवश्य इस्लामी देश बनाकर छोड़ेंगे।

४- यही अभागा देश है जहां अल्प संख्यकों के लिए असमानता के कानून हैं और फिर भी ये असन्तुष्ट हैं राष्ट्रविद्रोह करते लजाते नहीं। हिन्दु आर्य इसी लिए शान्त रहते हैं कि गृह युद्ध की स्थिति न बन जाए देश कहीं लैबनान की तरह बरबाद न हो जाए। परन्तु विधर्मी इसे इनकी कायरता मानते हैं और प्रतिदिन नित्य नई मांग पेश करतें हैं। जहां भी इन में कुछ शक्ति होती है वहीं सांप्रदायिक दंगे होते हैं। अलीगढ़–मुराबाद–संबल अलाहाबाद–बिहारशरीफ–बम्बई--अहमदाबाद–बड़ौदा–हैदराबाद इत्यादि।

इस रोग का उपचार क्या ? यह नितान्त सत्य है कि हम भारत वर्ष में गृह युद्ध की स्थिति नहीं उत्पन्न नहीं होने देना चाहते यह भी सत्य है कि आर्य किसी आवेश में आकर अपने अन्दर चरित्रहीनता नहीं लावेंगे। परन्तु मातृभूमि, मातृ संस्कृति, मातृ शक्ति को बचाना हमारा परम कर्तव्य है। इसके लिए आर्यों को जगाना, ज्ञान, क्षात्र शक्ति, आर्थिक सुदृढ़ता लाना।

इतनी शक्ति पैदा करना कि पापी कुदृष्टि से देखने का साहस न कर सके। यदि करे तो कमर तोड़ सजा दी जाए।

आर्य नर नारी तो आत्मा को अमर मानते हैं। एक शरीर को त्याग कर आत्मा दूसरा शरीर अवश्य पाता है प्रभु विधान अनुसार यदि मुक्त न हुआ। तो फिर मृत्यु कोई घाटा नहीं। पुराने शरीर की जगह नया शरीर मिलेगा और गीता कहती है। जहां पर काम छोड़ जावेंगे वहींसे आरम्भ की सुमीता भी मिलेगी यह भाव दृढ़ता से भर कर आर्य नर नारी स्वयं वीर बनें। अपनी रक्षा के लिए पुलिस मिल्ट्री व चौकीदारों पर निर्भर न रहकर आत्म निर्भर बनें। बुद्धियुक्त क्षात्रबल व अर्थ शक्ति को मजबूत बनाकर किसी भी परिस्थिति संकट का मुकाबला करने को तैयार बर तैयार रहें। अपने अन्दर संगठन सुदृढ़ बनावें। बलिदान की भावना को पक्का कर लें तो कोई कमी नहीं।

५) क) आज आवश्यकता है वेदोक्त मार्ग पर चलने वाले नेता की जो सर्वप्रथम हमारे अन्दर वीरता संगठन को भरने राष्ट्र के अन्दर Living standard ऊंचा करने की भावना को बदले सादा जीवन ऊंचे विचार। उद्यमेन परा पूजा। राष्ट्र के प्रति कर्तव्य परायणता, चरित्र बढ़ावें।

ख) शिक्षा प्रणाली हो तो गुरुकुल पद्धति पर, सादगी, समानता, ब्रह्मचर्य, तप, शरीर को वज्र बनाना, बुद्धि में वेद ज्ञान भरना परन्तु केवल अष्टाध्यायी व महाभाष्य व्याकरण ग्रन्थों तक न रहें।

संस्कृत की पुठ रहते अपने ब्रह्मचारियों को वीर सैनिक IPS, ICS, IAS मैजिस्ट्रेट, इंजीनियर, Navy Airforce के लिए

तैयार करें ताकि ये हमारे संस्कृति से उपजे नवयुवक संस्कृति के ध्वज को ऊंचा करें उसकी रक्षा करें, रामराज्य स्थापित करें। इसी तरह व्यापार के क्षेत्र में प्रवेश करें। देश देशान्तर में सत्य आधारित व्यापार ख्याति को प्राप्त करे।

ग) राष्ट्र के अन्दर आश्रम प्रणाली को पुनः जागृत किया जाए ताकि निःस्वार्थ पढ़ाने वाले चिकित्सक, प्रचारक, शास्त्रार्थ महारथी मिलें और महंगाई अभाव भ्रान्तियां दूर हों। यहाँ निस्स्वार्थ तपस्वी विद्वान् ही तो राष्ट्रजनों के अन्दर राष्ट्रीयता भर कर राष्ट्र को अजेय स्थिति व सन्मान योग्य बना दें। राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व–राष्ट्रसम्मान तो नवप्रविष्ठ विद्यार्थियों से लेकर स्नातक बनने तक भरा जावे, बल्कि इन्हीं के संस्कृति के आधार पर जीवन-उद्देश्य राष्ट्रहित भरा जावे तो यह जीवन पर्यन्त अमिट हो जावेगा।

घ) भारतवर्ष में कुछ काल इस प्रकार राष्ट्रीयता उपजाने में कष्ट अवश्य आवेंगे क्योंकि अङ्गरेजों और फिर कांग्रेसियों द्वारा अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए Reservation of seats Minority Previliges इत्यादि अन्यायजनक बातें की गई Minorities के अनुचित Concessions असमानता के कानून, गोवंशवध जैसी बुराइयों को दूर करने में बड़ी दृढ़ता से काम लेना होगा, जिन्हें यह मन्जूर न हो वह कहीं भी पलायन कर जावें। यह सहन न होगा कि यहां का अन्न खाकर इसी राष्ट्र से विद्रोह करें और हम आर्य बेबसी में देखते ही रह जावें। शराफत से रहें तो ठीक परन्तु यह नहीं बर्दाशत किया जावेगा कि विदेश के धन से धर्म परिवर्तन करके देश में विद्रोह उपजने दिया जावे इत्यादि।

कठिनाइयों को दूर करने के लिए आर्य जनता को राष्ट्रीय कर्तव्य के प्रति जगाना, क्षात्र शक्ति का भरना, आवश्यक होगा। कठिनाइयों की निवृत्ति का अचूक साधन है ज्ञानयुक्त पुरुषार्थ तपस्वीजीवन। ज्ञान की प्राप्ति होगी स्वाध्याय व सत्संग से और पुरुषार्थ में प्रवृत्त होंगे, परमेश्वर की प्रेरणा से। तप की भावना महान् पुरुषों के जीवन चरित्रों को पढ़ने से मिलेगी।

७) इस लघु पुस्तक के लिखने की प्रेरणा भी परमेश्वर की दया से हुई कि इन भावनाओं को उभारना वर्तमान समय में आर्यावर्त देश की परम आवश्यकता है। अतः इसका सम्पूर्ण श्रेय प्रभुदेव को अर्पित है। मनुष्यों के प्रत्येक वर्ग-व्यवसाय के लोगों के लिए परमेश्वर के आदेश भी प्रभु प्रदत्त वेद भगवान् से प्राप्त किए गए हैं। मैं चूंकि संस्कृत का विद्वान् नहीं हूं। इस लिए महर्षि वेदानन्द जी महाराज के वेद भाष्यों का तथा स्वर्गीय पूज्य स्वामी विद्यानन्द जी विदेह कृत वेदालोक, व श्री अभयदेव जी कृत वैदिक विनय, व स्वामी दयानन्द जी कृत स्वाध्याय संदोह अथवा पूज्य महात्मा प्रभुआश्रित जी महाराज के लिखे ग्रन्थों का सहारा लिया गया है, इस लिए परमेश्वर के उपरान्त श्रेय इन पूज्य महान् पुरुषों को है।

विद्वानों से विनम्र प्रार्थना है कि वे त्रुटियों से अवगत करेंगे जिन पर अवश्य विचार किया जावेगा। उपरोक्त ग्रन्थों से यदि मेल खाते होंगे या नई सूझ सिद्धान्तों के अनुसार होगी तो उसका समावेश किया जावेगा।

८) मैं यज्ञ योग ज्योति के सम्पादक महोदय का भी कृतज्ञ हूं कि उन्होंने इस पुस्तक को संशोधनपूर्वक अपने विशेष अंक के रूप में छपवाने की कृपा की और साथ ही श्री परशुराम शर्मा जी

मालिक लोक चेतना प्रैस, रोहतक का भी आभारी हूं जिन्होंने बड़ी लग्न से इसे छापकर पाठकों के कर कमलों तक पहुंचाया है।

पाठकों से भी निवेदन है कि इस पुस्तक को स्वयं पढ़ें तथा अपने अन्य भाई बहिनों मित्रों को पढ़ावें ताकि राष्ट्र चरित्र के प्रति भारत वासी जागरूक हों यही मेरा मुख्य उद्देश्य है।

ओ३म् शम्

३ पटेल नगर, लखनऊ दयानन्द वानप्रस्थी

२४-८-८६

राष्ट्र यज्ञ : प्रथमा संस्कृति

ओं अच्छिन्नस्य ते देव सोम सुवीर्य्यस्य रायस्पोषस्य ददितारः स्याम । सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्वारा स प्रथमो वरुणो मित्रोऽअग्निः ॥ यजु० ७-१४

अन्वय :–देव सोम ते अच्छिन्नस्य, सुवीर्यस्य, रायः पोषस्य ददितारः स्याम सा प्रथमा संस्कृतिः विश्वारा, स प्रथमः वरुणः मित्रः अग्निः ॥

क) आर्यो ! प्रजा को सब कुछ देने वाला होने से रष्ट्र देव है।
प्रजा द्वारा सुसेवनीय होने से राष्ट्र देव है ।
नागरिकों का पूजनीय होने से भी राष्ट्र देव है ।

ख) यह भारत भूमि तो वसुन्धरा है । वसु=धनैश्वर्य, धरा= धारण करने वाली । यह मातृ भूमि वसुओं,ऐश्वर्यों ,रत्नों को अपने गर्भ में धारण किए हुए हुए है । निरन्तर पुरुषार्थियों को सब कुछ देती है, अतः यह भी देव है ।

ग) विश्व की सबसे पहली, सबसे श्रेष्ठ होने के नाते आर्य संस्कृति प्रथमा है ।

पठित जगत् में तीन शब्द प्रचलित हैं, कला, सभ्यता, संस्कृति ।

i) कला प्रत्येक देश की अपनी-अपनी होती है ।

ii) सभ्यता प्रत्येक समाज की अपनी-अपनी होती है । (social behaviour,) परन्तु सभ्य व्यक्ति जरूरी नहीं कि चरित्र के धनी भी हों । ठग कितना अच्छा बोलते हैं, सेवा भी करते हैं, परन्तु ध्येय लूटना होता है ।

क्रिश्चियन मिशनरी कितना अच्छा व्यवहार, सेवा करते हैं परन्तु लक्ष्य उनका धर्म परिवर्तन करना, भारत को ईसा-लैण्ड बनाना है।

iii) संस्कृति=सं+कृति, सुन्दर क्रियात्मिक जीवन, यह मनुष्य-मात्र को निर्विकार निर्दोष जीवन वाला बनाती है। उपमा के लिए लीजिए, यम, नियम—ये सार्वभौम धर्म हैं, किसी देश, किसी मजहब, किसी युग में क्यों न हों ये सर्व मान्य हैं।

१- **देव सोम अछिन्नस्य** :–हे प्रकाशदातृ, गुणदातृ, शान्ति की पुञ्ज आर्य संस्कृति तेरे आदेश तो (eternal laws) सर्वकालीन नियम हैं। इन में कभी परिवर्तन नहीं किया जाता। परिवर्तन आवश्यक ही नहीं होता।

२- **सुवीर्यस्य** :–आर्य संस्कृति अत्यन्त बलवर्धक, उत्साह दायक भी है (उन्नति के नियम) राष्ट्रीय वीर्य का निर्माण करने वाले पांच स्तम्भ हैं ! सदाचार, स्वास्थ्य, शिक्षा, श्रम, निष्ठा:— इन्हीं के सेवन से राष्ट्र बलवान् होगा।

बंधुओ ! संयम, सदाचार का मूलमन्त्र है। इसी सत्=आचार की भित्ति पर खड़े हो पावेंगे स्वास्थ्य, शिक्षा, श्रम और निष्ठा।

भारत का दुर्भाग्य है कि यह ऋषियों का देश १३०० वर्ष तो पाश्चात्य के पापी दरिन्दों की गुलामी में रहा, जो संयम के समीप नहीं जाते थे और फिर आजाद होने पर पाश्चात्य वातावरण में पले पढ़े कर्णधारों के हाथ में पड़ गया, जो अपने को By accident of Birth Hindu कहते थे वर्ना आर्यत्व से नितांत कोरे थे, उन्होंनें living standard ऊंचाकरने की घोषणा कर दी। संयम सदाचार, राष्ट्रीय चरित्र(National character,) को न स्वयं सेवते न प्रजाकि

अन्दर भरा। परिणाम सारा राष्ट्र चरित्रहीन, भ्रष्ट अनार्य बना। जहां अन्न, इलाज इन्साफ, इल्म, अत्यन्त महंगे, साधारण व्यक्ति की पहुंच से बाहर हो गये। फ्रिज, टी. वी. तो हम ने ली परन्तु रिश्वतखोरी मिलावट और टैक्स चोरी द्वारा। राष्ट्र में industry बढ़ी परन्तु ऋणों के आधार पर।

३- **रायः पोषस्य ददितारः स्याम** :–धन वही धन्य होगा जो पुष्टि दे, धन्य बनावे, संसार व संस्कृति की सेवा में लगे, यशस्वी बने। वह धन किस काम का जो चरित्रहीन व्यसनी, रोगी, कायर, बनावे, चिन्ताएं बढ़ावे। पुष्टिदायक व आर्थिक उन्नति के साधन ईमानदारी, पुरुषार्थ, विज्ञान, उत्पादन, व्यापार हैं। इस प्रकार से प्राप्त की आर्थिक उन्नति नागरिकों के रहनसहन को स्वच्छ समुन्नत करेगी, सुख सुविधाओं, संतोष व शान्ति में वृद्धि होगी।

उन्नति इतने मात्र तक पर्याप्त नहीं। महर्षि दयानन्द जी ने अत्यन्त उपयुक्त लिखा कि अपनी उन्नति में संतुष्ट न होवें, सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझें, यही भावना प्रस्तुत मंत्र में है **'ददितारः स्याम'** कि हम याज्ञिक बने, दूसरों को देखकर, खिला कर खावें–यह ज्ञान–दान प्रभु की दात मान सब में बांटें, मानव-मात्र को सुखी करने की चेष्टा व प्रयत्न करें।

सा प्रथमा संस्कृतिः विश्ववारा :–आर्य संस्कृति सब से पुरानी है। प्रथमा का अर्थ है सब से श्रेष्ठ व सब का अग्रणी है। विश्व दोष निवारिका है और विश्व वरणीया भी है। सब मजहबों ने इसे आंशिक रूप में अपनाया। आर्य संस्कृति के अन्दर धार्मिकता, आध्यात्मिकता, संयम, शालीनता व न्याय सन्निहित हैं। इस माप दण्ड पर संसार की अन्य कोई संस्कृति नहीं ठहरती।

इस लिये भी यह विश्ववरणीया और सर्व प्रथम कोटि की संस्कृति है। सुनो आर्यो ! संस्कृति जननी होती है; धर्म, सत्य, संयम, सदाचार, न्याय व पवित्रता की।

सभ्यता जननी है शिष्टाचार और शिष्ट व्यवहार की। कला जननी है सुरूपता व भौतिक सुखों की।

५- **स प्रथमः वरुणः मित्रः अग्निः** अब जो इस आर्य संस्कृति को अपनावेंगे वह सर्व प्रथम मानवता के अग्रणी होंगे। मन्त्र में तीन विशेषण दिए गए।

क) **वरुणः**–निर्दोष जीवन फिर न्याय में परिपक्व हो। इसलिए यह भाग्यवान् वरणीय और वन्दनीय होंगे। साधारण जनता इन्हीं का अनुकरण करने वाली बनी तो राष्ट्र जगत् गुरु, वन्दनीय बनेगा Handsome is he who does handsome. खूबसूरत तो वही होता है जिस के कर्म खूबसूरत हों।

ख) **मित्रः**–प्राणि मात्र का हितैषी-सब के अन्दर अपने जैसी आत्मा को मानने वाला-सब घटों में प्रभु प्रीतम का निवास है, ये घट प्रभु के मन्दिर ही तो हैं। सब से स्नेह करने से स्वयं परम शान्त होता हैं।

ग) **अग्निः**–अग्नि के गुणों से विभूषित, प्रकाशक, आलस्य रहित, गति दाता, पावक, दोष निवारक, सिद्धान्तों पर परिपक्व, और फिर अनासक्त भी रहे। शरणागत को अपना रंग रूप शक्ति प्रदान करे।

आर्य संस्कृति पर आचरण करने वाले सच्चे आर्य के अन्दर वरुण, **मित्र, अग्नि** के गुण विद्यमान होंगे, वह राष्ट्र का सर्वमान्य मानव होगा।

निष्कर्षः—आर्य संस्कृति सार्वभौम नियमों पर है, वेद प्रतिपादित है, आर्य संस्कृति उत्साह दायिनी, बल वर्धक, पुष्टिकारक ऐश्वर्यों से पूर्ण उदार दाता बनाती है। इसलिए विश्व में वरणीय है। अपने पुजारी को वरुण मित्र अग्नि बनाती है। इस संस्कृति पर स्वयं आचरण करना फिर इस का प्रचार राष्ट्र कल्याण की भावना से करना, राष्ट्र यज्ञ का रूप बनता है जो सब भारत वासियों के लिए अनिवार्य है। इसी के सेवन से मानव जाति में परम सुख उपजेगा, यह सत्य है।

'राष्ट्र यज्ञ : राष्ट्र को सींचना

ओं पीवोअन्ना रयिवृधः सुसेधाः श्वेतः सिषक्ति नियुतामभिश्रीः।
ते वायवे समनसो वितस्थुर्विश्वेन्नरः स्वपत्यानि चक्रुः॥ यजु. २७/२३

अन्वय :—नरः सिषक्ति नियुतां पीवोअन्ना ते वायवे वि तस्थुः समनसः श्वेतः सुमेधा रयिवृधः अभिश्रीः विश्वा स्वपत्यानि चक्रुः।

नरः सिषक्ति :— नारायण में रमण करने वाले —प्रभु भक्त नर ही राष्ट्र को सींचते हैं। इनके मत अनुसार मनुष्य की मुकम्मल उन्नति होती है, शारीरिक-सामाजिक-आध्यात्मिक तीनों का जहां मिश्रण हो। यदि एक में भी कमी होगी तो उतनी मात्रा में जीवन, राष्ट्र दुःखी होगा। इसी ध्येय को सम्मुख रखते हुए हमारे पूज्य ऋषियों ने आश्रम प्रणाली चलाई। जीवन के चार विभाग किये ब्रह्मचर्य आश्रम में शरीर को वज्र सदृश बनाओ, ज्ञान ग्रहण करो गृहस्थ में राष्ट्र को समृद्धिशाली बनाओ, अभावों को मिटाओ, समूचे राष्ट्र की सेवा करो, वानप्रस्थ में अनासक्त बन राष्ट्र की पौद—राष्ट्र के बच्चों को पढ़ावो, योग्य नागरिक बनाओ, संन्यास

में घूम-घूम कर राष्ट्र में धर्म-प्रचार करो और कुरीतियों को मिटाओ।

यह है आदेश वेदमाता का कि राष्ट्र की वाटिका को अपने अपने स्तर पर सब सींचें। इस महान् कार्य को करने से पूर्व निजी साधना/योग्यता आवश्यक होगी तो निम्न आदेश दिए :—

१) **नियुतां** :—जीवन अनुशासित हो, समय की पाबन्दी कठोर हो, प्राणों का सदुपयोग हो, धर्म-मार्ग पर चलना, अपने कर्तव्यों को जो वर्ण-आश्रम-परिस्थितियों के अनुसार लागू होते हों उन्हें बड़ी श्रद्धा व तत्परता से निभावे—मरे मन से नहीं, उत्साही बनकर।

२) **पीवो अन्ना** :—कर्तव्यनिष्ठ जीवन बनाने के लिए शरीर का स्वस्थ और बलवान होना नितान्त आवश्यक है। स्वास्थ्य व बल प्राप्ति के लिए आहार का संयम आवश्यक है वेद माता का दूसरा आदेश है कि खाद्य व पेय सात्विक अवश्य हों। प्रकृति माता नित्य नए अन्न, फल, सब्जियां प्रदान करती है, शुद्ध पेय है जल, दूध, लस्सी इत्यादि। इनके सेवन से शरीर सुखी व स्वस्थ बनता है राष्ट्र की सेवा हो पाती है।

३) **ते वायवे वि तस्थु** :—शरीर स्वस्थ रहे इसके लिए आहार के साथ साथ पाचन जठराग्नि का प्रदीप्त होना आवश्यक है। वह प्रदीप्त होगी शुद्ध वायु और प्राणायाम द्वारा। 'न सौ गिजा न इक हवा' प्राण की शक्ति से ही खाद्य व पेय-पदार्थ हज़म होते हैं। प्राणायाम के करने वाले को आहार व वीर्य का संयम अनिवार्य है। प्राण के माध्यम से शरीर का मल विसर्जित होता है, प्राण ही रक्त साफ करता है। प्राण की शक्ति से शरीर में

रक्त दौड़ता है, इन्द्रियां कार्य करती हैं, ज्ञान तन्तु सक्रिय होते हैं कितना उपयोग है प्राणों का परन्तु हम इस पर ध्यान नहीं देते।

४) **समनस** :–संयम, शुद्ध आहार व प्राणायाम से विचार और मन पवित्र होते हैं। पवित्र विचारों वाला मन ही एकाग्र और बलवान् बन पाता है। पवित्र बलवान् मन ही इन्द्रियों पर नियन्त्रण कर सकता है। शिवसंकल्प ही मानसिक प्रसन्नता व स्वास्थ्य का राज (रहस्य) है। पहले विचार/मन पवित्र बलवान् होंगे तो कर्म/व्यवहार भी शुद्ध पवित्र बन सकेगा। मन एक महती व तीव्र शक्ति प्रभुदेव ने मनुष्य जीवन में प्रदान की। इसके सही उपयोग से ही तो प्रीतम का प्यार उपजेगा। सत्य की साधना, श्रद्धा इत्यादि सद्गुण उपलब्ध हो सकेंगे। मानसिक बल श्रद्धा से ही राष्ट्र के हित में स्वार्थ त्याग व बलिदान सम्भव हो सकेगा।

जिनके मन शुद्ध, पवित्र, बलवान थे वे ही राष्ट्र के प्रति अपने प्राण न्योछावर कर गये, शहीद हुए, हंसते-गाते फांसी चढ़े। जिनके मन अपवित्र संकुचित हुए उन्हीं राष्ट्र द्रोही गद्दारों ने देश की रक्षा व उन्नति के राज़ बेचे।

५) **श्वेत सुमेधा** :–निर्मल धारणावती बुद्धि ! बुद्धि वेदाग होगी जो परमेश्वर की न्यायकारिता, दयालुता, सर्वशक्तिमत्ता व अन्तर्यामिता पर दृढ़ विश्वासी होगी। परमेश्वर किसी के अशुभ कर्मों को नहीं भुलाता, सब कर्मों के फल तुझे भोगने पड़ेंगे ! वहाँ कोई सिफारिश या रिश्वत नहीं चलेगी।

जीव अल्प है, एक देशीय है ससीम है उसे सफलता हेतु प्रभु का सहारा आवश्यक है। प्रकृति का सम्पूर्ण वैभव क्षणिक सुख देता है नश्वर है, इससे वियोग अवश्य होगा। इन तथ्यों पर मनन करते

करते जब दृढ़ता आती है तो उसी का नाम गीताकार ने स्थित-धी स्थित-प्रज्ञ रखा है, तभी सुमेधा बनती है। यह बुद्धि ही मन इन्द्रियों पर शासन करती है, वही ऋतम्भरा बनकर प्रभु प्रीतम की प्रतीति कराती है। वही बुद्धि जहा ब्रह्मज्ञान कराती है वहां क्षात्र शक्ति को भी उपजाकर राष्ट्र व संस्कृति की रक्षा भी अवश्य कराती है। ब्रह्मज्ञान व राष्ट्र रक्षा हेतु क्षात्रशक्ति दोनों राष्ट्र यज्ञ के लिए अनिवार्य अंग हैं, दोनों राष्ट्र वृक्ष को सींचते हैं।

६) **रयिवृधः**—राष्ट्र यज्ञ के लिए धन भी आवश्यक है। राष्ट्र को सींचने वाले राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को भी सुदृढ़ बनाये रखते हैं धन कमाओ, खूब कमाओ परन्तु अंकुश भी लगाये गये।

क) धन कमाते धर्म न त्यागना, चरित्र की हानि न करना, धनदाता भगवान को न भुला देना। (ख) धन कमाने के लिए अपने स्वास्थ्य का बलिदान न करना। (ग) धन में आसक्त न होना।

७) **अभिश्रीः**—अपनी व राष्ट्र संस्कृति के यज्ञ की वृद्धि कीजिए। यज्ञ की वृद्धि तप, त्याग, याज्ञिक स्वभाव, उदारता, सेवा से सम्भव होगी। यज्ञ आत्मा का भोजन है आत्मा तृप्त प्रसन्न होती है।

परन्तु सावधान यश से अभिमान अहंकार न बढ़े वरना पतन अवश्य होगा।

८) **विश्वा स्वपत्यानिचक्रुः**—राष्ट्र उत्थान – राष्ट्र सिंचाई का काम समाप्त न हो जाये। हमारे शरीर अन्तवन्त तो हैं ही! वेद-माता आदेश दे रही है कि यह राष्ट्र सेवा का कार्य रुक न जाये इसके लिए सुन्दर सन्तान, प्रजा-अनुयायी तैयार करते रहें। उत्त-राधिकारी तैयार अवश्य करें।

यह सेवा ऋषियों के युग में वानप्रस्थी करते थे। गुरुकुलों

में या धर्म-संस्थाओं में ऐसे ब्रह्मज्ञानी, वीर, अनासक्त कर्मयोगी तैयार किये जाते थे जो ज्ञान, रक्षा, वैभव, शोभा की वृद्धि में सदैव जुटे रहते थे।

विद्वान् राष्ट्र हितैषी इस वेद आज्ञा पर ध्यान देवें।

नोट :– यही सारा का सारा क्रम महर्षि दयानन्द जी महाराज की बताई संध्या में है। उद्देश्य–इन्द्रियों, की प्राणों की, मन की बुद्धि की साधना, इन्हीं से राष्ट्र की उनन्ति सम्भव होगी। आर्यों का चक्रवर्ती राज्य स्थापित हो सकेगा। महर्षि दयानन्द जी के स्वप्न सार्थिक होंगे, विश्व के मानव शान्त सुखी चरित्रवान् बन पावेंगे।

राष्ट्र यज्ञ : दुर्दिन मिटावें

ओं जातो जायते सुदिनत्वे अह्नां समर्य आ विदथे वर्धमानः।
पुनन्ति धीरा अपसो मनीशा देवया विप्र उदियर्ति वाचम्॥

ऋ ३/८/५

अन्वय–जातः विदथे समर्ये वर्धमानः देवया विप्रः वाचं उत् इयर्ति धीरा मनीषा अपसः पुनन्ति अह्नां सुदिनत्वे आ जायते॥

१- **दुर्दिन :–** क) जाति व राष्ट्र में दुर्दिन आ ही जाते हैं। आर्य जाति महापुरातन है। इसने कंस का राज्य देखा जिसने पिता, बहिन, बहनोई और ३० राजाओं को क़ैद कर रखा था।

दुर्योधन का राज्य भी देखा, जो बिना युद्ध के भाइयों को सूई की नोक भर स्थान न देना चाहता था। उसने कृष्ण को कहा :– **"जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिः, जानामि अधर्मं न च मे निवृत्ति"**

धर्म को जानता हूं परन्तु उसमें रुचि नहीं, अधर्म को जानता हूं उसे छोड़ने की इच्छा नहीं।

ख) जाति-राष्ट्र में अज्ञान, अकर्मण्यता, अन्याय, अभाव आया। हम ईश्वरों को बनाने वाले बने, उनमें प्राण प्रतिष्ठा करने लगे क्षात्र शक्ति को त्याग, अहिंसा के गलत अर्थ करके अहिंसा परमो धर्मः, सोऽहं इत्यादि बोलने लगे। हम कुछ न करें, प्रभु हमारी रक्षा करेंगे इत्यादि अज्ञान युक्त मान्यताओं ने देश को पंगू बना दिया। गुलाम बनें, पिटे, कटे, लुटे, बेइज्जत हुए ये राष्ट्र के दुर्दिन थे। इस से भी अधिक।

ग) चर्चा तो करते हैं कि ये कैसे बुरे दिन आए हैं, विश्व व्यापी भ्रष्टाचार, अत्याचार, व्यभिचार, अन्याय, भूख, अभाव, अशिक्षा, अज्ञान सर्वत्र फ़ैले हुए हैं। यारों में यारी नहीं, पत्नियों में वफादारी नहीं, पतियों में सदाचार नहीं, पुत्र व शिष्य आज्ञाकारी नहीं, राजा धर्मशील नहीं, प्रजा कर्मशील नहीं।

बन्धुओ ! रोने धोने और केवल शिकायतें करने से तो दुर्दिन दूर नहीं हो पावेंगे।

बिगड़ी कौन बनावे ? तो मन्त्र में आदेश है दो मोर्चों पर एक साथ भूझना होगा।

२- **जात विदथेः समर्ये वर्धमानः** :– जातः—पैदा करो-परमेश्वर बख़्शे, राष्ट्र हितैषी सुमति वालों को।

क) विदथे—राष्ट्र में विचारों की क्रान्ति पैदा करने वाले ज्ञानी–विदुर–चाणक्य, गुरु राम दास, विरजानन्द, तिलक, वीर सावरकर।

विदथे द्वारा पैदा की राष्ट्र संस्कृति के सम्मान की अग्नि को आगे बढ़ावें। इन में तीव्र तड़प हो, रुके नहीं, चाहे प्राण भी जाएं।

ख) समर्ये—सं=अर्ये, रण बांकुरे, समर विजेता, अर्जुन,

चन्द्रगुप्त, शिवाजी, सुभाष, बिस्मिल, भगत सिंह समान ।

विदथे—विद्वान् राष्ट्र के अज्ञान, मानसिक दुर्बलता, हीन भावना, अकर्मण्यता को दूर करें। जो उत्साह हीन हैं उनमें उत्साह, निराशों में आशा भर दें। मानसिक क्रान्ति, जनता को राष्ट्र यज्ञ के लिए श्रद्धा, बलिदान की भावना को उभार देवें ।

समय—संगठित होकर राष्ट्र का सुदृढ़लोहा संसार को, विरोधियों को दिखावे। अपनी सांस्कृतिक व शस्त्र शक्ति को अद्वितीय बनावें कि किसी को हिन्दु राष्ट्र–व–संस्कृति पर कुदृष्टि डालनें का साहस न हो–यदि कोई दुसाहस करे तो वीर उसे छट्टी का दूध याद करावें महर्षि दयानन्द जी का स्वप्न कि आर्यों का चक्रवर्ती राज्य हो, को सार्थक बना कर ऋषि ऋण चुकावें ।

विदथे के रूप में आर्य विद्वान् और समर्ये के रूप में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ आज देश में विद्यमान हैं। कोई दिव्य विभूति इनको संयुक्त करके दुर्दिन दूर करने का सौभाग्य प्राप्त करे। united we stand–divided we fall. इसे अनुभव कर चुके हैं।

३- **देवया विप्रः वाचं उत् इयर्ति** :—विदथ तो वेद ज्ञानी थे परन्तु विप्र तो विशेष प्रज्ञा वाले तीव्र मेधावी. जिनकी वाणी में ओज व प्रभाव होता है. उच्च कोटि के सन्त महात्मा जिनके विचार, भावना, व्यवहार नितान्त पवित्र, सत्यवादी सत्य कर्मी हों। वे भी राष्ट्र व संस्कृति के दुर्दिनों को देख पसीजते हैं और मानव कल्याण, प्रभु की इस प्रजा को सन्मार्ग पर आरुढ़ करने के लिए समाज में आते और उत्कृष्ट भाषण देते हैं। चरित्र निर्माण संस्कृति की रक्षा के लिए इनके भाषण मुर्दा दिलों में नई रूह फूंकनें का कार्य करते हैं।

"चिड़ियां बाजूं बाज लड़ावां–तदे गोविन्द सिंह नाम कहावां"

४- धीरा मनीषा अपसः पुनन्ति :— धीर कौन ? अकामों धीरः (अ० १०–८–४४) कामना रहित, निस्स्वार्थ, अनासक्त, शान्त, सम्भीर, धैर्यवान पुरुषों की संज्ञा धीर होती है (विद्यानन्द जी विदेह) कामना रहित का अर्थ यह न समझें कि उनकी कोई इच्छा नहीं, लक्ष्य ही नहीं होता। महर्षि दयानन्द जी जैसा वीतराग संन्यासी दीखता नहीं -- परन्तु आर्यों का चक्रवर्ती राज्य हो। यह कामना तो कई जगह की है। तो भाव यह है कि निज जीवन या परिवार के लिए नहीं। समष्टि कल्याण की भावना भी कामना रहित कोटि में आती है।

मन्त्र में धीर को परमेश्वर ने गिनाया कि वह राष्ट्र संस्कृति के दुर्दिन दूर करने का माध्यम बनते हैं–पुरुषार्थ करते हैं।

मनीषी कौन है ? वे भाग्यवान् जिनकी बुद्धि निर्मल, स्थिर गहन और प्रभु में समाहित हो।

तो यह धीर व मनीषी दुर्दिन दूर करने के लिए राष्ट्र में कुकर्मों को दूर कराते हैं। कुकर्म कैसे होते हैं ? पहले बुद्धि दूषित होती है, विषयों में लिप्त होती है और पाप करने की योजनाएं बनाई जाती हैं। पाप में जाहिर क्षणिक लज्जत होती है। श्रम कम उपलब्धि अधिक इत्यादि प्रलोभन सामने आते हैं, जब यह योजना पक्की हुई तब जाकर व्यक्ति शरीर से अपराध की करता है।

राजा शारीरिक अपराध को देखता, अपराधी को पकड़ कर दण्ड देता है परन्तु वह अपूर्ण है कारण कि अपराधी की बुद्धि में पाप समाया रहता है अवसर पाने पर पुनः-पुनः अपराध करता है।

धीर व मनीषी महापुरुष अपनी ओजस्वी वाणी से दयालू दृष्टि से पापी की बुद्धि का शोधन कार्य करते हैं बुद्धि एक बार

शुद्ध हुईं फिर पतन की सम्भावना नहीं रहती यह है राष्ट्र की अद्वितीय (Un comparable service) सेवा जो ये करते हैं।

५- **अह्नां सुदिनत्वे आ जायते** :–विद्वानों, वीरों, धीरों, मनिषियों, विप्रों के राष्ट्र के दिन सुदिन कैसे होते होंगे ? निम्न चिह्न होंगे :–

(i) प्रजा चरित्रवान, सुरक्षित व तृप्त होगी।

(ii) राष्ट्र के नेता राष्ट्र के प्रति समर्पित हों ! तीव्र बुद्धि वाले सदैव सावधान जगरुक रहें।

(iii) राष्ट्र में स्वास्थ्य, सुरक्षा, सम्पन्नता सम्बन्धी नए-नए आविष्कार होते हों ! विद्वानों को सम्मानित किया जाता हो।

(iv) राष्ट्र में शिक्षा सरल, सुगम, सुलभ हो कोई अज्ञानी न रहे। विशेषतः राष्ट्रीय चरित्र (National Character) पर पूरा-पूरा बल दिया जाता हो।

(v) राष्ट्र के राज्याधिकारी न्यायकारी, देश के गौरव को बढ़ाने वाले धर्मात्मा हों। प्रजा को पुत्रवत् और मातृ-भूमि, मातृ-संस्कृति को माता-वत् मानते हों।

(vi) राष्ट्र में समय पर वर्षा होती हो, राष्ट्र में खाद्य व पेय पदार्थों की कमी न हो। राष्ट्र सम्पन्न हो।

निष्कर्ष :–नेता राष्ट्र के नेत्र होते हैं। नागरिक राष्ट्र की भुजाएं नेताओं को चाहिए नागरिकों में आत्म गौरव, चरित्र बल और क्षात्र शक्ति को भरते व बढ़ाते रहें। नेत्र राह दिखाएं और भुजाएं पराक्रम करें तभी राष्ट्र समुन्नत होगा।

राष्ट्रोदय का अचूक क्रम मन्त्र में बताया गया है।

(क) सदाचारी वेदज्ञ नेता, शासक, रणवीर क्षत्री रक्षा करें।

(ख) विप्रों द्वारा वेद प्रचार और अज्ञान की निवृत्ति की जावे।

(ग) धीरों मनिषियों द्वारा राष्ट्र सदस्यों का व्यवहारिक पूर्तीकरण निरन्तर चलता रहे।

यह त्रिसूत्री साधना बताई गई राष्ट्र के दुर्दिनों को दूर करने के लिए।

राष्ट्र यज्ञ — सफलता कैसे ?

ओं सं जानामहै मनसा संचिकित्वा मा युष्महि मनसा दैव्येन।
मा घोषा उत्स्थुर्बहले विनिर्हते मेषुः पप्तत् इन्द्रस्य अहन्यागते ॥

अ० ७-५२-२

अन्वय :– दैव्येन मनसा मा युष्महि मनसा सं जानामहं चिकित्वा बहुले विनिर्ह्यते घोषाः मा उत्स्थुः अहनि आगते इन्द्रस्य इषुः मा पप्तत्।

अर्थ— यह विश्व द्वन्द्वों से भरा है, जहां खुशहाली रही होती है। वहां कंगाली भी आती है। हर कमाले बा ज़वाल' बसन्त के बाद पतझड़ का आना कुदरती नियम है। आर्य जाति ने विश्व पर राज्य किया। महाभारत युद्ध के बाद अवनति आरम्भ हुई तो १३०० वर्ष की गुलामी दुर्दिन भी देखे। कहां ईरान अफगानिस्तान से लेकर बर्मा लंका पर्यन्त एक राष्ट्र था। अब कितने भाग अलग हो गए ? स्वराज्य प्राप्त किया परन्तु उसे सुराज्य नहीं बना पाए। उस स्थिति में वेद माता राष्ट्र के नेताओं को समझाती है कि मेरे पुत्रो !

१ दैव्य मन से वियुक्त न होवो। मां! जो दैव्य मन होता है तो आसुरी मन भी होता होगा उनके रूप क्या होते हैं समझा दो !

क) आसुरी मन-क्षुद्रता, Selfishness मैं और मेरा पहले राष्ट्र व धर्म पीछे हों :—

i) वर्तमान जीवन में ठाठ बने रहे। मेरी आमदनी में कमी न आवे—स्वार्थ

ii) अपने परिवार हेतु राष्ट्र व समाज का बलिदान कर देना पक्षपात, अपने व्यक्तियों की seliction नियुक्तियां करना, Quotas (कोट) देना। —आसक्ति

इस तरह योग्य व्यक्तियों को आगे न आने देना।

iii) मेरा सम्मान बना रहे, मेरे आदेश सब मानें, मेरी कुर्सी सुरक्षित रहे, हर बात को Pustige issue (आत्म सम्मान का सुरक्षा) बना देना। —अहंकार

ऐसे विचारों वाले राष्ट्र हन्ता, राष्ट्र द्रोही, अथवा आसुरी मन वाले होते हैं।

ख) दैव्य मन : विशाल हृदय. बलिदानी, स्वार्थ त्याग की भावना, राष्ट्र व संस्कृति जीवन से बहुमूल्य प्रतीत हों।

i) अपने जैसी आत्मा सब में है। राष्ट्र व संस्कृति, जाति के लिए सर्वस्व/प्राणों के बलिदान का सुअवसर मिलना सौभाग्य है।

ii) परिवार : सब मतलब के यार हैं। ये न तो पीड़ा बाटें न मौत से छुड़वाएं, न प्रभु दरबार में मददगार हों। इनके लिए चरित्र व परलोक नहीं बिगाड़ेंगे।

iii) मुझ अल्पज्ञ का सब कुछ सीमित है, एक देशी हूं, फिर अहंकार क्यों करना।

iv) निर्मोही. कर्तव्य निष्ठ, धुन का पक्का, प्रभु विश्वासी होकर वेद आज्ञाओं का पालन करना, पूर्वज ऋषियों के पद-चिन्हों पर चलना, यह जीवन का मार्ग हो।

२) ऐसे दैव्य मन वाले राष्ट्र के नेतागण, राष्ट्र के कल्याण के लिए मिल कर बैठें, सच्चे मन से विचारें, सामाजिक रोगों का निदान करें। यदि दुरित बहुत हों तो उनकी निवृत्ति का क्रम बनावें। उपयुक्त व्यक्तियों का चयन करके उनको कार्य सौंपें। कार्य चलाने के साधनों का उपार्जन करें। हिम्मत बढ़ाते रहें, योग्य कार्यकर्ता को पुरस्कार मिले, सम्मानित किया जाए। प्रत्येक को कार्यकुशलता दिखाने का अवसर मिले। इसमें भाई भतीजा वाद न हो, जातिवाद, प्रान्तवाद न हो, केवल योग्य को बढ़ावा मिले विचारो सज्जनों !

अ) राष्ट्र की युवा शक्ति को कैसे सुकर्मी बनाकर सुसंगठित करें ! इनमें राष्ट्रीयता National character भरें। वेद भक्त वेद अनुगामी बनावें।

ब) हिन्दु केवल नोट व वोट को ही अपना सब कुछ मान बैठे हैं। देश और जाति के प्रति उत्तरदायित्व इनमें कैसे जागृत किया जावे ?

स) त्याग, धैर्य, साहस, विवेक, क्षात्र शक्ति कैसे उपजे।

द) छुआछूत की निवृत्ति,शुद्ध किये व्यक्तियों के साथ रोटी बेटी के सम्बन्ध कैसे जोड़ें ?

य) यह भाषावाद, जातिवाद, प्रान्तवाद, कैसे राष्ट्र से निकलें, राष्ट्र अखण्ड बने।

र) राष्ट्र से अज्ञान, अभाव, अकर्मण्यता कैसे दूर हो ? राष्ट्र के गरीबों को अन्न, इलाज, इलम, इन्साफ कैसे सुलभ हो।

ल) राष्ट्र का प्रत्येक व्यक्ति, परिवार, समाज, स्वस्थ, चरित्रवान्, बलवान् आत्म निर्भर ईश्वर विश्वासी सदाचारी कैसे बने ?

क) नेता गणो ! अपने तपस्वी सदाचारी संयमी सत्य प्रिय जीवन की उपमा राष्ट्र के सम्मुख रखो। साधारण जनता अनुकरण करेगी। Life speaks louder than the lips इसे आज़माओ।

ख) देशवासियों को जचा दिया जावे कि हम आत्मा हैं शरीर नहीं हैं। परमेश्वर कर्मफल दाता हमारे ज्ञान युक्त पुरुषार्थ का फल हमें अवश्य देंगे। जीवन रहते मातृभूमि, मातृ संस्कृति के ऋणों से मुक्त होवो। यह सुअवसर है।

३) राष्ट्रवासियों को आपत्काल का मुकाबला करने के लिए तैयार अवश्य करें। Be prepared to face the calamities रात तो जीवन में आवेगी उसके लिए पहले से तैयारी कीजिये। कहीं संकट समय भगदड़ न मचे व्यवस्था भंग न हो।

क) आपत्काल के लिए अपनी कमाई का कुछ भाग नियमित रूप से अलग रखें।

ख) क्षात्र शक्ति, शस्त्र अभ्यास, आक्रमण अभ्यास, सहनशक्ति इन सबकी सदैव तैयारी रहे।

ग) प्रहार कहां से हो सकता है। बचाव के साधन, उपयुक्त उपचार तैयार रहें।

घ) सब कार्य योजना बद्ध हों, योग्य व्यक्ति जुटाए जावें। उन पर निरीक्षण कड़ा रहे।

ङ) खाद्य व शस्त्र आपूर्त्ति के साधन निर्बाध बने हों।

च) हौसला व हिम्मत बढाने के लिए प्रभावशाली प्रेरणा Guidance मिलती रहे।

४) सफलता मिल रही हो तो अहंकार ऐयाशी में न पड़ें।

क) सर्व प्रथम परमेश्वर का धन्यवाद कीजिए।

ख) शत्रु से असावधान न हों। शत्रु को कभी कमजोर समझकर रहम न करें।

ग) राष्ट्रवासी सफलता उपरान्त भी संगठित, ब्रह्मचारी, चरित्रवान् ब्रह्मज्ञान व शस्त्र विद्या में प्रवीण, राष्ट्र की अर्थ व्यवस्था सुदृढ़ रहे।

निष्कर्ष : क) पथ्य व परहेज दोनों आवश्यक होते हैं।

ख) राष्ट्र के नेताओं के जीवन का अनुकरण जनता करती है। वे वेदाग् हों विशेषतः स्वार्थ, आसक्ति, अहंकार के भयंकर रोगों से स्वयं बचें। और अनुयायियों को बचावें।

ग) संगठन, राष्ट्रीय चरित्र, कर्तव्य निष्ठा, सादगी की वृद्धि करें।

घ) आपत्ति काल के लिए सतर्क, सावधान, तैयार रहें, जनता का योगदान प्राप्त हो ऐसा प्रशिक्षण देते रहें।

ङ) उन्नति में संतुष्ट व ऐयाश न बनें।

राष्ट्र यज्ञ : विजय रहस्य

ओं संगच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते॥

ऋ० १०। १९१। २। अ० ६। ६४। १॥

अन्वय–सं वो मनांसि जानताम् सं वदध्वं सं गच्छध्वं यथा पूर्वे सं जानानां देवा भागं उपासते।

१- सं वो मनांसि जानताम् :– मिल करके मनों को जानें। मानसिक जागृति करें। जागृति विचारों की उज्ज्वलता– परिपक्वता, सुदृढ़ता ही मानसिक जागृति है। इस जागृति से धैर्य हिम्मत, साहस मिलता है। बल मिलता है जो कि शरीर के बल से कहीं अधिक ऊंचा श्रेष्ठ होता है। इसे वेद ने ज्योतियों की ज्योति कहा। यह जागृत व एकाग्र हो तो दूर-दूर तक जाता है

इससे कमाल होगा यदि राष्ट्र-जन के मानसिक बल को उभार कर संगठित कर दिया जाए; फिर उसे राष्ट्र कल्याण की ओर मोड़ दिया जावे।

२- प्रश्न :—मानसिक बल को कैसे जागृत किया जावे ?

उत्तर :—(i) सिद्धान्त है जलता दिया ही दूसरों को जला/जगा सकता है।

यत् जाग्रतः दूरं उत् एति। यजु० ३४/१।।

क) समर्थ गुरु रामदास जी ने शिवाजी को जगाया और औरंजेब के जीवन काल में ही हिन्दु राज्य की स्थापना करा दी।

ख) अकेले महर्षि दयानन्द जी के जगे जीवन ने देश के अंधकार को मिटाने के लिए आर्य समाज जैसी क्रान्तिकारी सस्था खड़ी कर दी। आधुनिक भारत के पथ द्रष्टा बने और सब से पहले स्वदेशी राज्य का घोष उन्होंने किया जब कि यह कांग्रेस अभी पैदा भी नहीं हुई थी।

ग) अकेले सुभाष बोष ने एक विशाल आजाद हिन्द फोज इकट्ठी कर ली।

(ii) दीया पहले स्वयं जलता है फिर अन्धकार मिटा करके प्रकाश देता है।

आत्महुत, आत्म बलिदानी ही इस प्रकार की क्रान्ति ला पावेंगे। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आत्महुत आहुति देकर जाति को कितने बहुमूल्य रत्न दिए। ऐसे वे ही होंगे जिनके अन्दर स्वार्थ नहीं, जिन्हें किसी के साथ व्यक्तिगत द्वेष नहीं, वही महान् विभूतियां ही राष्ट्र को जगा सकेंगी।

३- यहां वेद माता ने विशेषण लगाया सं का !

श्रेष्ठ, शालीन, शिव संकल्प वाले मन/विचार धारणाएं।

आततायियों को अवश्य नष्ट करें-कुरीतियों से अवश्य लोहा लें, निवृत्त करें परन्तु स्वयं चरित्रहीन न हों। संयम ब्रह्मचर्य, तप, ईश्वर प्रणिधान को त्यागने वाले न हों। असफलता में निराश न हों। कार्य पुरुषार्थ न त्यागे और सफलता में अहंकार-गफलत न करें।

मुसलमान आतातायी हिन्दु देवियों पर अत्याचार करते थे परन्तु मरहठा सम्राट शिवाजी ने मुसलमान औरतों को सम्मान के साथ उनके घरों को वापस किया, बुराई की नकल नहीं की बुरों के सामने एक श्रेष्ठ चरित्र की उपमा रखी।

रण क्षेत्र में जर्मनों के जोरदार प्रहारों के बावजूद श्री चर्चिल (इग्लैण्ड के प्रधान मन्त्री) ने राष्ट्र का मनोबल बनाए रखने हेतु V for victory का घोष अपने देश वासियों को दिया। हिम्मत बांधे रखी।

उसी के अनुरूप आज हिन्दुस्तान में हिन्दुओं को हिन्दु राष्ट्र राम राज्य का घोष देना नितान्त आवश्यक है। प्रत्येक नर-नारी बाल, युवा, वृद्ध के सम्मुख हिन्दु राष्ट्र का दृढ़ संकल्प बन जाना चाहिए। वह अपने जीवन का लक्ष्य तथा व्यवहारिक जीवन में हिन्दुओं के चरित्र को पुनः ऐसा प्रदर्शित करें कि संसार मानें व जाने कि हिन्दुस्तान हिन्दुओं का है। धर्म परिवर्तन करके इस पवित्र राष्ट्र को ईसालैण्ड व इस्लामी देश बनाने के स्वप्न देखने वालों को अपनी पराजय मानने को विवश होना पड़े और षडयन्त्र त्यागने पड़ें। भारत निवासी भारतीय बन कर रहें वरना पलायन करें।

२- संवध्वम् :-श्रेष्ठ विचारने वाले आर्यो ! वेद माता दूसरा उपदेश देती है कि श्रेष्ठ बोलो, मधुर, सत्य, देशहितकारी वचन शालीनता से बोलो।

क) प्रश्न :– वाणी में शालीनता कैसे आवेगी ?

उत्तर :–वाणी का स्वर, लहजा वैसा होता है जैसे मानसिक विचार होते हैं।

उपमा :–एक अन्धे साधु जंगल में रहते थे। एक बार एक राजा शिकार के लिए उसी जंगल में गया। राजा जी को प्यास लगी, पहले अरदली को भेजा कि पानी लाओ; वह न ला सका तो मन्त्री गया, तो उन्हें भी साधु ने जल न दिया। अन्त में राजा स्वयं गया तो साधुने सम्मान से जल पिलाया, राजा ने प्रश्न किया महात्मन् ! पहले जल क्यों नहीं दिया था ? साधु ने कहा पहले आप का अरदली आया था, फिर आपका मन्त्री आया, अब आप आए हैं। राजा इतना सुन कर चकित हुआ और पूछा आप नेत्र-हीन हो आपको यह कैसे पता चला कि पहले अरदली, फिर मन्त्री ! अन्त में राजा पानी मांगने आया। साधु जी ने उत्तर दिया, राजन् ! मैं देख नहीं सकता परन्तु सब के बोलने से उनकी हैसियत को जान जाता हूं। कहावत सत्य है कि :

A man is known by language he speaks.

ख) राष्ट्र सेवा, सुरक्षा के लिए सुमित्र मण्डली को तो बढ़ाना ही पड़ेगा, वहां ऊंच नीच की भावना को अवश्य त्यागना होगा। सबके अन्दर अपने जैसी आत्मा की प्रतीति करनी होगी, यदि मुझे सत्य मधुर वाक्य सुनना अच्छा लगता है तो मैं भी सबके साथ मधुर सत्य बोलूं। यह मेरा धर्म बने, मैं नहीं चाहता कि मेरे सन्मुख कोई झूठ बोले, मुझे धोखा दे तो में किसी के साथ अप्रिय व असत्य वचन न बोलूं।

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्–आपकी वाणी सज्जनों को आकर्षित करे आर्य बनावे।

ग) राष्ट्रीय जनों को कभी निराशा की बातें नहीं करनी चाहिएं। संसार में परमेश्वर ने हमें सब अंग सब जैसे ही तो दिए हैं। जो इनका सदुपयोग करता है, ज्ञान युक्त पुरुषार्थ करता है, वही स्वस्थ और श्रीमान बनता है सम्मान पाता है। इसलिए राष्ट्र के नेताओं को जनता का उत्साह बड़ी युक्ति व दलील से बढ़ाना चाहिए। भरसक प्रेरणा करके जन-साधारण के अन्दर राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण करना चाहिए। आलस्य अकर्मण्यता को दूर करना चाहिए।

घ) राष्ट्रजनों के सामने एक लक्ष्य रखो। जीवन का कोई उदेश्य हो। अपने क्रियात्मक जीवन की प्रतिमा (Model) पेश करो। रोचक उपमाएं, प्रेरणाएं दीजिए, विशेष करके अध्यापक वर्ग राष्ट्र की नन्हीं पौद को ऐसा बनावें कि उनकी नस-नस के अन्दर National characte राष्ट्रीय गौरव स्थाई रूप में भरा हो।

३. स गच्छध्वं : सम्यक गमन, समानता का व्यवहार।

क) केवल विचारने और बोलने से विजय नहीं होगी। विजय भाषणाओं और नारेबाजी का विषय नहीं है। उद्यमेन सिध्यन्ति कार्याणि। पवित्र पूर्ण पुरुषार्थ से सफलता मिलेगी।

ख) मिलिट्री की प्रेड इसकी एक अत्यन्त सुन्दर उपमा है। सब सैनिकों को हाथ पांव एक साथ उठाना सिखाया जाता है। यह अभ्यास जतलाता है कि संगठन में शक्ति है। दूसरा अनुशासन आर्डर पर चलना। आर्डर मिलते तेज होना या रूकना इत्यादि।

ग) देश का विकास, देश के भ्रष्टाचार को दूर करना। देश से देशद्रोहियों को खदेड़ना देश की सीमाओं की रक्षा करना देशवासियों में स्वदेश प्रेम भरना, इनके लिए निष्ठावान निर्मोही

निर्लोभी अनुभवी नेताओं की परमावश्यकता होती है जो कि राष्ट्र के सूत्रधार बनें।

आर्यो ! राष्ट्र को भीम अर्जुन की अपेक्षा कृष्ण की बहुत अधिक आवश्यकता है। जो केवल crude शक्ति नहीं परन्तु नीति निपुण हों और बुद्धि युक्त रण कौशल से रणक्षेत्र-कुरुक्षेत्र में विजय प्राप्त करें।

घ) नेता व सैनिक परस्पर कंधे से कंधा मिलाकर राष्ट्र सेवा व रक्षा के लिए कर्तव्य भूमि में उतरें। यही तो कुरुक्षेत्र है। कर्तव्य निभाने का स्थान व अवसर है।

ङ) यह सम्यक् गमन होगा तभी जो हम सब न्याय व नियम पर आधारित सत्य का व्यवहार करेंगे। एक ध्येय एक लक्ष्य एक ध्वज जय वन्देमातरम् की भावना को लेकर अग्रसर हों रहे होंगे।

४. **यथा पूर्वे संजनाना देवाः भागं उपासते** : जैसे हमारे पूर्व हुए श्रेष्ठ पुरुषों ने श्रद्धा निष्ठा से राष्ट्र की उपासना की, सम्मान बढ़ाया, व कायम रखा धन व पद का लालच न करते हुए Duty with devotion के सिद्धान्त पर पूर्वज ऋषियों के पद चिन्हों पर चलते रहे तभी सुराज्य बनाया, रामराज्य बनाया। मातृभूमि के ऋणों से उऋण हो पाए। राम कृष्ण की सन्तान कहलाने का गौरव उन्हें प्राप्त हुआ। परमेश्वर की आशीर्वाद के पात्र बने। सच्चे आर्य थे। हम सब नर नारियों को वेदादेश पालना चाहिए तथा पूर्वजों के पद चिन्हों पर चलकर राष्ट्र व जाति के सम्मान को कायम रखना चाहिए।

निष्कर्षः हिन्दु राष्ट्र की स्थापना के लिए राष्ट्र जन मनसा वाचा, कर्मणाः दृढ़ व्रत, दृढ़ संकल्प से संगठित होकर कर्तव्य निभावें। निर्लोभी निष्कपटी होकर ऋषियों के देश व संस्कृति के सम्मान व ध्वज को ऊंचा करें।

राष्ट्र यज्ञ–विदुषी महिलाएं

ओं इमा ब्रह्म सरस्वति जुषस्व वाजिनीवति ।
या ते मन्म गृत्समदा ऋतावरि प्रिया देवेषु जुह्वति ।।

ऋ० २/४१/१८

या इमा ते प्रिया मन्म देवेषु जुह्वति ब्रह्म जुषस्व ऋतावरि वाजिनीवति सरस्वति गृत्समदा ।

राष्ट्र यज्ञ एक महान् कार्य है । इस यज्ञमें राष्ट्र के प्रत्येक वर्ग को अपनी सेवाएं अर्पित करनी होती हैं । उन सब के लिए, सबके कर्तव्यों के प्रति उपदेश परमेश्वर प्रदत्त वेद में दिए गए हैं प्रस्तुत मंत्र के अन्दर विदुषी महिलाओं-व-उनकी योग्यता के सम्बन्ध में पूर्ण उपदेश दिया है ।

माताओं में स्वभावतः सन्तान के प्रति स्नेह अधिक होता है । यदि माताएं इस ऋत नियम eternal law को समझें व धारण करें कि जिसने जन्म लिया है एक न एक दिन उसके इस भौतिक शरीर का अन्त भी अवश्य होगा । तो इस मरण धर्मा शरीर का श्रेष्ठतम सदुपयोग होगा जो यह राष्ट्र व संस्कृति पर बलिदान हो और अपने यश को, नाम को अमर कर जावें । इस सत् नियम को धारण करने वाली माताएं स्वयं वीरांगना बनती हैं और वे ही वीर सन्तान, राष्ट्र रक्षक सन्तान पैदा करती हैं । ये ही देवियाँ सन्तान को भरत व अभिमन्यु बना स्वयं अपना नाम अमर करती हैं ।

१- **मा इमा ते प्रिया मन्म** :–जिन इन विदुषी माताओं ने तेरे इस प्यारे मनोहर विज्ञान को समझा ।

अन्त वन्त इमे देहाः गीता

यह शरीर हम सब का क्षण भंगुर है । यह शरीर बहुमूल्य

भी है कि इसी मनुष्य शरीर में रहते ब्रह्म ज्ञान पाकर आवागमन के चक्र को काटा जा सकता है। यहां तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा: —यजु० ४०/१

त्याग की वृत्ति से भोगों को भोगना जीवन चलाने के लिए भोगना है और फिर अमर पद को प्राप्त करना है।

२. **देवेषु जुह्वति** : यह उपरोक्त ज्ञान, ब्रह्मविद्या की प्राप्ति की अभिलाषा रखने वाले जीवों में स्थापित करती हैं। वही ज्ञान को आहुतियाँ देती हैं। वही अपने दूध व कोख को सफल करने का सत्य प्रयास करती हैं वे ही माताएं वन्दनीय प्रातः स्मरणीय होती हैं।

३. **ब्रह्म जुह्वति** : ब्रह्म का अर्थ वेद का ज्ञान-या-परमेश्वर जो भी करें। जब माताए इस प्रकार तप करके राष्ट्र को ऐसी श्रेष्ठ सन्तान देती है। व्यक्ति को बना कर, उच्च आर्य मानव समाज को बनाती है। जो वीर, आस्तिक, भक्त, योगी, वेदवेत्ता विद्वान हों जो जहां राष्ट्र संस्कृति की रक्षा करते हों, वहां प्रभु चरणों के पूर्ण विश्वासी आस्तिक भक्त हों, सच्चे योगी बन परमेश्वर का साक्षात् करने वाले, तथा वेद के मर्म रहस्यों को जानकर स्वयं आचरण करें-व-दूसरों में श्रद्धा उपजाकर आचरण करावें। यह भी महान् प्रभु पूजा है जो शक्ति भर पाती है।

अब प्रश्न होगा कि उपरोक्त प्रकार को प्रभु पूजा करने वालों के अन्दर क्या गुण होंगे-या-किस प्रकार की साधना उनसे अभिप्रेत होगी ? मन्त्र ने कहा :

(८) राष्ट्र यज्ञ—पितर

ओं अवन्तु नः पितरः सुप्रवाचना उत देवी देवपुत्रे ऋतावृधा।
रथं न दुर्गाद्वसवः सुदानवो विश्वस्मान्नो अंहसो निष्पिपर्तन ॥

ऋ० १/१०६/३

ओं अवन्तु नः पितरः सु प्र वाचना उत देवी देवपुत्रे ऋतावृधा,
विश्वस्मात् नः अंहसः निष् पिपर्तन दुर्गात नः रथं वसव वः सुदानवः।

१. **अवन्तु नः पितरः**—पुकार है पितरो ! हमारी रक्षा करो।

संस्कृति संकट में है। दिधर्मी षड् यन्त्र बना; संगठित हो प्रहार कर रहे हैं विद्वानों में स्वार्थ के कारण संगठन नहीं। शरीर, संपत्ति के मोह के कारण संघर्ष से किनारा कर रहे हैं। स्वाभिमान आत्मगौरव नाम को नहीं। वेद, धर्म बहुत चिल्लाते हैं परन्तु न उसका ज्ञान है न आचरण है। राष्ट्र के नेता आर्ष ग्रन्थों व संस्कृति के सिद्धान्तों से अनभिज्ञ हैं।

अल्प संख्यकों की चाटुकारी कर रहे हैं बहु संख्यकों के हितों का हनन कर रहे हैं जिनके सहयोग व वोटों पर कुर्सी प्राप्त की उन्हीं धक्का मार रहे हैं।

पितर कौन ? जो पैदा करें—पालन करें—रक्षा करें। माता, पिता, आचार्य, उपदेशक, अतिथि, राजा ये सब पितर हैं—सर्व-प्रथम माता, माता निर्माता भवति, निर्माण कर मां सन्तान का। सन्तान को, लव कुश, प्रद्युम्न बना, आचार्यों ! उपदेश को ! निर्माण करो जनता का कि सब आत्म बलिदानी वीर बनें। राष्ट्र व संस्कृति के संकटों की निवृत्ति अर्थ सब कुछ आहुत कर देवें।

कैसे पितर करेंगे यह राष्ट्र सेवा ?

२. **सु प्र वाचना** : वह पितर जिनके अपने सीने में अग्नि जलती हो और वे सुन्दर, प्रभावशाली प्रवचन करते हों। स्वा-

ध्यायशील मनीषी और आचरणवान् भी हों उन्हीं के आदेशों का प्रभाव होगा। सिद्धान्त है, चर्म की वाणी से सुधर्म+सुकर्म की वाणी अधिक प्रभावी और सुप्रेरक होती है Life speaks louder ? than the lips ये पितर कम बोलते हैं परन्तु जो बोलते हैं वह बाअसर व बा मैनी (अर्थ पूर्ण प्रभावशाली) होता है। दिलों में स्थान ग्रहण करता है सोने वालों को जगाता है।

३. **उत देवी** : और देवी-दिव्यताओं से युक्त ज्ञानी+दानी इनके अन्दर सुमति और सुभावना दोनों दैवी गुण एक साथ होंगे ऐसे दैवी गुणों वाले सुप्रवाची पितर करते क्या है ? तो मन्त्र ने कहा :—

४. देव **पुत्रे ऋता वृधा** : देव पुत्रों को : पात्रों को, जिज्ञासु मुमुक्षुओं को सदाचार में ईश्वरीय नियमों के समझने, पालने में प्रोत्साहित करते हैं व बढ़ाते रहते हैं। साधना की हर कठिनाई को सुगमता से पार करने की युक्तियां बताते हैं।

ये पितर महाभारत में शस्त्र स्वयं नहीं चलाते परन्तु अपने आश्रित को विजय दिलवाते हैं।

ये शिष्य की पीठ पर हाथ रखकर आततायी आसफजाही को पराजित कराते हैं। ये ही राम लक्ष्मण को बाण विद्या सिखा कर ताड़का आदि राक्षसों का अन्त कराते हैं।

ये ही रत्नाकर को बाल्मीकि और अमींचन्द को सन्त शिरोमणि भी बनाते हैं।

अपने अनुयायियों में ब्रह्म ज्ञान, क्षात्र शक्ति भर कर राष्ट्र की रक्षा करते हैं। पाप का उन्मूलन करते हैं।

सुमति, सुभावना, सुप्रवाची की साधना आरम्भ तो गृहस्थ आश्रम में पितर करा देते हैं। गृहस्थियों के जीवन कुपथ से हट कर सुपथ पर चल पड़ें तो संसार का स्वर्ग बनाना सुगम होगा।

५. विश्वस्मात् नः अंहसः निष् पिपर्तन : हमें संपूर्ण भूलों/पापों/अपराधों से मुक्त कर दें।

प्रश्न होगा, कि भूल, पाप, अपराध का रूप क्या होता है। इन से मुक्त कराने की विधि, साधना क्या होगी ?

क) ज्ञान व सावधानी की कमी के कारण भूल हो जाती है।

ख) मस्तिष्क में दुश्चिन्तन, कुमति के कारण जब पराया अहित विचारते हैं। किसी को हानि पहुंचाने की बात सोचते हैं। वह पाप कहलाता है। इस पाप को दूसरा नहीं देखता।

ग) जब सोची बुराई पर आचरण करते हैं तो वह अपराध बन जाता है। इसका दण्ड राजा देता है।

अज्ञान व दुश्चिन्तन को दैवी सुप्रवाची पितर दूर करते हैं। कहीं प्रवचनों से, कहीं अपना क्रियात्मिक जीवन प्रस्तुत करके। यह निश्चित बात है, जब तक मनुष्यों के मस्तिष्क मलिनता से शुद्ध नहीं तब तक बाह्य शारीरिक अपराध भी समाप्त नहीं हो पावेंगे।

६. दुः गात् नः रथम् : कुपथ से हमारे जीवन रथ को हटाओ। कुपथ क्या ?

क) जिस कर्म के कारण शरीर रोगी हो।

ख) जिस कर्म के कारण दूसरों का अहित हो, द्वेष शत्रुता बढ़े।

ग) जिसके कारण मन मलिन व संकीर्ण हो।

घ) जिससे बुद्धि मन्द, स्थूल, अपवित्र, नास्तिक बनें।

ङ) जिसके कारण आत्मा की स्वतन्त्रता स्थाई न रह पावे।

७. वसवः सुदानवः—हमें सुन्दर ऐश्वर्य का दान दीजिये ऐश्वर्य वही सुन्दर होगा।

अ) जिसकी प्राप्ति के लिए पाप न करना पड़े।

ब) जिसकी प्राप्ति के लिए शरीर का स्वास्थ्य न बिगड़े।

स) जिसकी प्राप्ति के लिए अध्यात्म अभ्यास न त्यागना पड़े।

द) जिसके कारण चिन्ताएं झगड़े न पैदा हों।
क) जो मुकदमें बाज़ी या डाक्टरों की फीसों में न खर्च हो।
ख) धन वही जो धन्य बना दें। अहंकार आसक्ति न जगे।
ग) जो ब्रह्म ज्ञान की वृद्धि में व्यय हो।
घ) जो जलवायु की शुद्धि हेतु बृहद् यज्ञों में लगे।
ङ) जो मोहताज पीड़ितों की सहायता में पक्षपात रहित लगे।
च) जिससे राष्ट्र व संस्कृति की रक्षा हो।
मानव समाज के चरित्र सुधार में व्यय हो।
छ) श्रेष्ठतम ऐश्वर्य तो आत्म ऐश्वर्य योग ऐश्वर्य है जो पितर हमें प्राप्त करावें।

निष्कर्ष : क) पितर वही जो सुमति सदभावना वाले सु-प्रवाची आचरणवान मनीषी हों वे हमारी रक्षा करें।
ख) हमें ऋत नियमों पर चलावें, बढ़ावें।
ग) हमारी भूलों, पापों, अपराधों को दूर करें।
घ) कुपथ से हटाकर सन्मार्ग पर चलावें।
ङ) श्रेष्ठ ऐश्वर्य (योग ऐश्वर्य) प्रदान करें।

१) **ऋतावरि :–** ऋत नियमों का पालन करने वाली हों– ऋत=ईश्वरीय नियम (Unchangable truths) ऐसे नियम जो आदि सृष्टि से अन्त तक एक सरीखे चलें जिन के अन्दर कोई तबदीली संभव न हो। जैसे उदाहरण के रूप में—
क) सूर्य प्रकाश देगा, अन्धकार को दूर करेगा।
ख) वायु सब प्राणियों को प्राण दान करेगी।
ग) आंखें देखने का कार्य करेंगी।
घ) कान केवल सुनने का कार्य करेंगे।
ङ) रातके बाद दिन, दिन के बाद रात, ग्रीष्म ऋतु के बाद वर्षा,

वर्षा के उपरान्त पतझड़–शीत–हेमन्त–बहार आती रहेंगी इत्यादि ।

च) सत्य सीधा सरल मार्ग होता है, प्रेम द्वारा सबको आकर्षित किया जाता है, शान्ति प्राप्त करनेका साधन त्याग है इत्यादि

इन सिद्धान्तों को समझ कर निराकार नारायण की शक्ति, ज्ञान, कर्मफलदाता रूप को पहचानने वाली विदुषी महिलाओं को वेद ऋतावरि नाम से पुकारता है ।

इन नियमों, सिद्धान्तों को समझने की योग्यता प्राप्त करने के लिए प्रत्येक को स्वाध्याय शील होना होगा वेद, शास्त्र आदि आर्ष ग्रंथों का पठन पाठन अनिवार्य साधना होगी ।

केवल पढ़ना भी पर्याप्त नहीं होता, पढ़ने के उपरान्त आचरण करना परम आवश्यक है । इस सफलता का रहस्य तपस्वी होना कर्त्तव्य निष्ठ होने में है । जिन्होंने अपने आप को आत्मा माना होगा आत्मोत्थान जीवन का लक्ष्य बनाया होगा किसी भी स्थिति में आत्म विस्मृति न होती होगी उन्हीं को ऋतावरि माना जाएगा ।

२) **वाजिनीवति** :– वाज का अर्थ आचार्यों ने किया-अन्न, धन ज्ञान, घोड़ा, गति और संग्राम-ये सब एक दूसरे के पूरक हैं । मानवीय जीवन तो एक प्रकार का संग्राम ही है । यहाँ नेकी बदी का युद्ध निरन्तर चलता है इस युद्ध में वे ही महिलाएं विजय प्राप्त करती हैं जो स्वभाव से आलस्य रहित और ज्ञानयुक्त गति वाली हों । अपने जीवन के साथ परिवार और समाज की कुरीतियों, दुर्गुणों से टक्कर ले विजय प्राप्त करती हों । कारण कि यह ऋतावरि है सदाचारिणी-ऋत नियमों का पालन करने वाली है इसलिये अदब्धा=किसी से न दबने वाली, अन्याय के सम्मुख ललकारने

वाली हों। ऐसी कर्त्तव्य निष्ठ निर्भीक देवियाँ ही राष्ट्र के जहां दोषों को निवृत्त करती हैं वहां राष्ट्र जनता में शक्ति का संचार करती हैं। येही दुर्गा बनकर पाप को पाश चूर चूर करती हैं येही दशरथ को रणक्षेत्र में पराजित होने से बचाती हैं।

येही महारानी पद्मनी बनकर राणा भीम सिंह को इलाऊद्दीन की कैद से छुड़वाती है और खिलजी तल्लियां मलता रह जाता है।

येही अकबर की छाती पर कटार रखने का दम रखती है।

येही शिवा प्रताप को जन्म देकर राष्ट्र रक्षा करती हैं।

परमेश्वर ने जीवन निर्माण का कार्य मातृ शक्ति को प्रदान किया यदि मां विदुषी वीरांगना हो तो गर्भ में सन्तान की शिक्षा दातृ बने गर्भ में आए जीव को वीर, भक्त, योगी, विरक्त विद्वान वृत्रहंता जो चाहें सो बना लें। जिस भवन की नींव ठीक सीधी रखी जाए वही भवन मजबूत दीर्घायु वाला होता है। जहां वीर पुत्रों का नाम अमर होगा वहां वीरों की जन्मदातृ व जीवन निर्मातृ माताओं का नाम भी अमर होगा।

३) सरस्वति :– सरस्वति को हमारे पूर्वजों ने माता माना है। सरस्वति श्वेत वेश भूषा में, श्वेत हंस पर सवार है और एकतारा पर गाती है। यह अलंकारिक चित्र है आर्य विदुषी महिलाओं का सरस्वति अथाह सागर में रहती है डूबती नहीं अर्थात् संसार के अथाह भोगों के ऊपर रहती है लिप्त नहीं होती। श्वेत वस्त्रों से भावना निर्दोष चरित्र का है। हं स से संकेत है प्राण व उपासना का। इनकी वाणी के अन्दर इतना माधुर्य होता है कि सबकों मंत्र मुग्ध कर लेती हैं। बुद्धि की देवी होने के नाते ऐसी प्रभाव शाली प्रेरणाऐं देती है कि जीवन पलट जाते हैं। येही माताएं मन्दालसा गार्गी अनुसूया होती हैं येही लव कुश जैसे पुत्र पैदाकर राष्ट्र के हित में अपनी सन्तान अर्पित करती हैं।

४) **गृत्समदा:** :– सबको आनन्दित करने वाली, सब का हित चाहने वाली सब को नेक सलाह देने वाली, सब के अन्दर अपने जैसी आत्मा की विद्यमानता को मानने वाली, जिन्हें अपने पराया गरीब अमीर ऊंचे नीचे में कोई भेद पक्षपात नहीं होता। सर्वथा द्वेष मुक्त होती हैं इसलिए उनके वचनों में प्यार= आकर्षण भरा रहता है। अपरिचित को भी अपना बना लेती हैं। याज्ञिक प्रवृति से ओत-प्रोत, परहित में अपना सब कुछ न्योछावर करना एक प्रिय खेल हो जिनका, गरीब की सेवा को गरीब निवाज़ की सेवा मानती हों ऐसी देवियां राष्ट्र माता होती हैं।

परमेश्वर कृपा करके ऐसी विदुषी महिलाएं हमारे राष्ट्र में उत्पन्न करके आर्यवर्त राष्ट्र का पुनः उत्थान करें।

(६) राष्ट्र–यज्ञ : अध्यापक

ओं संज्ञानमसि कामधरणं मयि ते कामधरणं भूयात्।
अग्नेर्भस्मास्यग्नेः पुरीषमसि चितःस्थ परिचित ऊर्ध्वचितः श्रयध्वं

यजु० १२/४७

अग्ने संज्ञानम् असि, अग्नेः भस्म असि, अग्नेः पुरीषं असि ते कामधरणं कामधरणं मयि भूयात् चितः परिचितः ऊर्ध्वचितः श्रयध्वं

१. **अग्नेः संज्ञानं असि** :– हे विद्वान् आचार्य! आप अपने विषय के पूरे ज्ञाता हो। जिस विषय को पढ़ाने अध्यापक जावे उसे उस पर पूर्ण अधिकार हो, बड़े विश्वास से जमकर पढ़ावे। यह मत सोचे कि छात्र अबोध है, कभी-२ छात्र ऐसी विचित्र बात पूछते हैं कि अध्यापक भी एक बार तो चक्कर सा खा जाते हैं। छात्रों के अन्दर भी आत्मा आप सरीखी चैतन्य है। कुछ बच्चे पूर्वले जन्मों के प्रबल संस्कार लेकर आते हैं। अतः छात्रों की शंकाओं प्रश्नों का पूरा समाधान करने की क्षमता हो, प्रत्येक

Why and what (क्यों और क्या) का उत्तर अध्यापक दे सके। विषय की पृष्ट भूमि को विस्तार से बतावें। प्रस्तुत विषय से क्या उपलब्धियां होंगी, इत्यादि बता कर छात्रों में पढ़ने की रुचि उत्पन्न कर देवे। विशेषत: उदाहरण ऐसे रोचक वीर रस से भरे हुए हों कि बच्चे उत्साहित हों। अपनी मातृ भूमि व मातृ संस्कृति के प्रति अपने उत्तरदायित्व को इसी उभरते जीवन में समझने वाले हों। विषय नवीन लगे, भाषान्तर करके. उदाहरण बदल कर देवे। इस योग्यता को प्राप्त करने के लिए अध्यापक महोदय को अपना विषय स्वयं पढ़कर गहन मनन करके आना चाहिए। इस प्रकार जहाँ छात्रों पर प्रभाव पड़ेगा, सम्मान मिलेगा वहाँ अपना ज्ञान भी बढ़ेगा।

२. **अग्ने: भस्म असि** :– उपरोक्त निपुणता होते हुए भी अध्यापक के अन्दर अहंकार कठोरता न हो, बल्कि विनम्रता हो।

विद्या ददाति विनयं : समिधा कठोर थी परन्तु जलकर राख बनी और अत्यन्त मुलायम हो गई। यह ज्ञान परमेश्वर की सम्पत्ति है। दयालु प्रभु ने किसी योग्य गुरु द्वारा मुझे प्रदान की है, मैंने स्वयं तो पैदा नहीं की। इसलिए अध्यापक महोदय को यह प्रभु की दात सुपात्रों में सहर्ष बांटनी चाहिए ताकि ऋषि ऋण से ऊऋण हो जावें।

विनम्रता इसलिए भी हो कि जहाँ परमेश्वर ने यह ज्ञान ज्योति मुझे प्रदान की वहाँ मेरी वाणी के अन्दर वक्तृत्व शक्ति भी तो उसी देव ने प्रदान की। तीसरी बात जीवन में इस प्रकार की सेवा का सुअवसर भी परमेश्वर देता है।

३. **अग्ने: पुरीषं असि** : अध्यापक के पढ़ाने की खूब सूरती इसमें है कि—क) छात्रों में नित नया ज्ञान भरा जाए। नई सूझ

उन्हें मिले। ख) उसका पढ़ना रूखा बोझ न हो, रसीला हो कि छात्र सावधान रहें। ग) सब छात्र एक जैसी तीव्र बुद्धि वाले नहीं होंगे। अध्यापक के अन्दर वात्सल्य प्रेम हो। सब की उन्नति उसका उद्देश्य हों किसी गरीब व मन्द मति वाले की उपक्षा न करे। उनमें हीन भावना (inferiority complex) निराशा न न आने देवें। जैसे बीमार बच्चे पर मां का ध्यान अधिक रहता है वैसे ही अध्यापक का ध्यान इन पिछड़े बच्चों पर अधिक रहना चाहिए।

यह तभी संभव होगा यदि अध्यापक अपने इस अध्यापन कार्य को अपने प्रीतम परमेश्वर की पूजा का रूप बना लेगा। हर गरीब छात्र के अन्दर गरीब निवाज प्रभु की विद्यमानता को देखता होगा। इसी पढ़ाने के द्वारा ही परमेश्वर को नमस्कार की जा रही होगी।

यों समझो कि दुगुनि उपलब्धि हो रही है। एक परमेश्वर ज्ञान स्वरूप का पूजन हो रहा है। ऋषियों का ऋण उतर रहा है। फिर अपने ज्ञान में भी वृद्धि हो रही है।

4. ते कामधरणं कामचरणं मयि भूयात् : आप के अन्तः-करण के अन्दर जो काम करने की सूझ व उमंग हो वह शिष्यों के अन्दर भर देनी चाहिए। इसका साधन है अतीत की उज्ज्व-लता को उत्साह पूर्ण शब्दों में नन्हीं पौद (छात्रों) में वैसे बन दिखाने के संकल्पों को उद्बुद्ध कर देना। अध्यापक का जीवन वस्तुतः एक सुयोग्य माली का जीवन है। माली अपने बागीचे में साधारण फलों के पौदों में कल्में लगाता है, उनकी जिन्स को बढ़िया व कीमती बना देता है।

माली इस बात को नहीं भुलाता कि बाग मालिक का है। ठीक इसी तरह अध्यापक मूढ़ बच्चों के अन्दर अपने श्रेष्ट उदात्त

विचार देकर उन्हें श्रेष्ठ नागरिक बनाता, राष्ट्र का श्रेष्ठतम सिपाही बनाता उनके जन्म का सुधार करता मातृ भूमि, मातृ संस्कृति का प्यार उपजाकर उन्हें ज्ञानी, वीर बनाता है। प्रति दान में कुछ नहीं चाहता।

ये उपलब्धियां तब होंगी यदि अध्यापक महोदय में याज्ञिक बुद्धि होगी, पढ़ाने में खूब तप करे, स्वयं चरित्रवान् बनकर छात्रों में चरित्र के महत्त्व को जचा दे भर दे। यही कार्य महर्षि चाणक्य समर्थ गुरु रामदास, महर्षि विरजानन्द जी ने किया। आज राष्ट्र को ऐसे अध्यापकों की आवश्यकता है। अध्यापकों में एक होड़ हो कि यदि वसिष्ठ जी राम आदि को वीर बना सके, यदि संदीपनी ऋषि कृष्ण सुदामा को बनापाये, हम भी वैसा पुरुषार्थ करें। राष्ट्र की सेवा होगी और अध्यापक का भी नाम अमर हो जावेगा।

५. **चितः परिचितः उर्ध्वचितः श्रयध्वम्** :– चित को परिचित और फिर ऊर्ध्वचित बनाकर प्रयोग करो (सेवन करो)। प्रत्येक मनुष्य के अन्दर चेतना शक्ति परमेश्वर ने रखी हैं, जो उस का प्रयोग करते हैं तो ये तीव्र बुद्धि दूर दर्शी बन उपयोगी होते हैं। वेद माता उससे भी आगे संकेत करती है ऊर्ध्वचितः का ऊपर उठने का। ऊपर उठने उठाने का साधन अग्नि होती है। जीवन इस ज्ञान को प्राप्त करके ऊपर तभी उठपावेगा जो लोभी व स्वार्थी न होगा, वरना अभी भी पतन संभव होगा। लोकोक्ति है-ज्ञानस्य पराकाष्ठा वैराग्यं। ज्ञान उच्च कोटि का उसे मानिये जो नश्वर जगत् के आकर्षण से ऊपर उठ गया हो। यही कारण था कि अध्यापन व चिकित्सा का कार्य वानप्रस्थियों को सोंपा जाता था। जो अपने हरे भरे परिवार को त्याग कर राष्ट्र व विश्व की सेवा

हेतु अपना जीवन अर्पित करते थे। तभी विद्या चिकित्सा निःशुल्क थी, सुलभ थी। वेद मे अत्यन्त सुन्दर चेतावनी दी।

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्। यजु० ४०/१७

भाव स्पष्ट है कि लोभ की वृत्ति सत्य के मुख को ढक देती है। लोभी कभी न्याय नहीं कर सकता। जिन अध्यापकों में लोभ की वृत्ति होगी उन्हें शोभा कभी न मिलेगी। वे तो राष्ट्र हत्यारे होंगे जो निजी ट्यूशन लगवाने के लोभ में पड़कर बच्चों की नींव कच्ची करते हैं। परमेश्वर ऐसे राष्ट्र हत्यारों को कभी क्षमा नहीं करेगा। प्रभु जहां छत फाड़कर देता है वहां सजा देते चमड़ी उधेड़ लेता है। आचार्य नें शिक्षा दो कि 'डरो वह बड़ा जबर-दस्त है।'

निष्कर्ष : अध्यापक का जीवन सफल होगा वह राष्ट्र की बड़ी सेवा करेगा। सम्मान पावेगा। यदि :—

क) अपने विषय में निपुण हो। ख) उसमें अभिमान न हो-विनम्र हो। ग) जो शिष्यों में उत्साह भरे। घ) उज्ज्वल अतीत को समझाकर राष्ट्रीय चरित्र भर दे। ङ) स्वयं अलिप्त रहे दूसरों को अलिप्त कर दे। इस तरह ऋषियों की, परमेश्वर की आशीर्वाद का पात्र अपने क्रियात्मिक जीवन से बने।

(१०) राष्ट्र यज्ञ – उपदेशक

ओं गृणाना जमदग्निना योनावृतस्य सीदतम्।
पातं सोममृतावृधा॥ –ऋ० ३-६२-१०८

ऋतावृधा जमदग्निना ऋतस्य योनौ सीदतम्
गृणानां सोमम् पातम्॥

ऋतावृधा—आर्य उपदेशक की सदैव ऋत नियमों–सरलता, सत्यता, सदाचार में वृद्धि हो—सदैव जीवन आलस्य रहित,

कार्यरत. मर्यादित, वेदोक्त मार्ग पर चलने वाला, अपनी उन्नति में सन्तुष्ट नहीं, अपितु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति मानने वाला हो। दिनचर्या बुद्धियुक्त हो और धर्म पर आरूढ़ हो।

प्रश्न होगा कि ऋत नियम क्या होते हैं, कौन बनाता है, क्यों बनाता है? ऋत नियम क्या हैं? — यह ऋत नियम — Unchangeable truths (अपरिवर्तनीय सत्य) — इन्हें सृष्टि के उत्पत्ति काल में सृष्टि रचयिता परमेश्वर बनाता है और सर्वत्र लागू होते हैं। ऋत नियमों में कभी भी परिवर्तन नहीं होते। ये ऋत नियम जीवों के कल्याण हेतु परमेश्वर बनाता है। इन्हीं नियमों के द्वारा ही परमेश्वर की सर्व-शक्तिमत्ता सिद्ध होती है। इन नियमों के पालने से जीवों का कल्याण होता है, परमेश्वर की प्रतीति होती है।

ऋत नियमों को समझने के लिए सरल, पवित्र, आस्तिक बुद्धि की आवश्यकता होती है। ऋतंभरा बुद्धि वाले मार्ग प्रदर्शन करते हैं। एक ज्वलन्त उपमा है आदि सृष्टि में सप्तऋषि हुए, उनमें महर्षि भृगु वयोवृद्ध और कुशाग्रबुद्धि के थे। उस जमाने में आधुनिक यन्त्रों के आविष्कार नहीं हुए थे। ऋत बुद्धि के स्वामी भृगु जी ने सृष्टि के लोक-लोकान्तरों को जाना, उनकी दूरी, उन की गति, गति के दायरे, एक दूसरे पर क्या प्रभाव होता है, राशियां नक्षत्र इत्यादि सब जाने। ज्योतिष शास्त्र बनाया—जिसका उपयोग आज भी ज्योतिषी करते हैं। वर्ष भर पहले बताते हैं कि सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण कब लगेगा, कब छुटेगा, सूर्य ग्रहण हमेशा अमावस्या को और चन्द्र ग्रहण हमेशा पूर्णमासी को लगते हैं – यह गणित विद्या है – आज तक कोई विद्वान् महर्षि भृगु को बताई इस विद्या को काट नहीं सका। ऐसे थे ऋतावृधा महर्षि। इसी तरह उपनिषदों के लेखक, दर्शन शास्त्रों

के लेखक सब ऋतावृधा महर्षि थे। कारण कि उनके सिद्धान्त, शिक्षा, एक जाति या एक युग के लिए नहीं थे परन्तु सम्पूर्ण मानव समाज और प्रत्येक युग और प्रत्येक देश, प्रत्येक धर्मावलम्बी पर यकसाँ (समान रूप से) लागू होते थे।

इन सार्वभौम नियमों को जानना – उन पर आचरण करना उन्हीं का प्रचार सर्व-साधारण के हित में करना, ये लक्षण हैं ऋतावृधा जनों के (आर्य उपदेशकों के)।

जमदग्निना – हमारी ज्ञानेन्द्रियों में ऋषियों का निवास माना गया है। ये ऋषि शक्तियां (Detective faculties) पाप को प्रवेश पाने से रोकती हैं। तो दाईं आंख में महर्षि जमदग्नि रहते हैं।

खुले ज्ञान नेत्रों से विचारें। हर हरकत करने वाली देह के अन्दर आत्मा परमात्मा का निवास है। इन्हीं दोनों के दर्शन हमारे मानवी जीवन का लक्ष्य हैं। परमात्मा विश्व में एक है परन्तु जीवात्माएं एकसी हैं असंख्यात (Uncountable)। परन्तु सब हैं सत्चित्। चूंकि मनुष्य देह के अन्दर जीवात्मा को अपनी इच्छा अनुसार कर्म करने का अधिकार प्रभु ने दिया है, जो तत्व-ज्ञान पर चलती हैं वे उच्च बनती हैं। जो अज्ञान अविद्या में फंस कर आत्म-बिस्मृति करती हैं वे निकृष्ट प्रतीत होती हैं। किन्तु आत्माएं ज्ञान अज्ञान के आधार पर अच्छे-बुरे भले ही प्रतीत हों परन्तु उनके अस्तित्व में अन्तर नहीं होता।

ज्ञान व सिद्धान्तों पर आचरण करके सिद्ध करने वाला दक्ष व्यक्ति बाह्य व्यवहार को देखकर यथा-योग्य व्यवहार तो करता है परन्तु आत्मदर्शी होने के नाते द्वेष किसी से नहीं करता। उनका शिव रूप या रुद्र रूप दोनों आत्मोन्नति के लिए होते हैं, न्याय युक्त होते हैं।

इन में दिव्य दृष्टि होती है जिनकी निम्न उपमाएं हैं—

क) ये मनीषी ही थे जिन्होंनें सूर्य-चन्द्र की रश्मियों के प्रभाव वनस्पतियों पर जानें।

ख) इस मनुष्य शरीर के अन्दर विषयों के स्थान कहां-कहां हैं उन चक्रों का भेदन कैसे करें कि विषयों पर विजय पावें ?

ग) प्राण शरीर में क्या-क्या कार्य करते हैं ? इसी प्राण विद्या को जान कर कैसे जीवन में रोगों से मुक्त हो पावेंगे ?

घ) शरीर में कितनी नाड़ियां हैं, कितनी प्रकार की हैं ?

ङ) गुरुदेव पात्र-शिष्य में शक्ति संचार करते हैं दृष्टि, स्पर्श, संभाषण द्वारा। कौन शिष्य कैसा पात्र है, किस प्रकार की साधना से सफल हो पावेगा ?

च) राष्ट्र की संकट निवृत्ति, समाज को कुरीतियों से छुटकारा दिलाने के लिए कौन उपयुक्त व्यक्ति होगा ? जमदग्नि-कोटि के ऋषि की सूक्ष्म दिव्य दृष्टि इन्हें पहचानती है।

क) गुरु रामदास ने शिवाजी को पहचाना।

ख) गुरु विरजान्नद जी ने स्वामी दयानन्द को उपयुक्त माना।

ग) परमहंस रामकृष्ण जी ने नरेन्द्र की योग्यता को पहचाना। उपदेशक महोदय ऐसे राष्ट्र वीरों को रणाक्षेत्र में निकालें।

३. **ऋतस्य योनौ सीदतम्** :—ऋत की गोद में स्वयं बैठा हो, अर्थात् क्रियात्मिक जीवन ऋतनियमों सिद्धातों को पालन करने वाला हो। किसी प्रलोभन व भय की स्थिति में इन नियमों से विचलित न होता हो। ऋत की गोद में परम सहारा मानता हो, अटूट विश्वास हो। ऋत नियमों के बनाने वाले के परम आश्रित बन जाते हैं। विचित्र मस्ती होती हैं। साम प्राणं प्रपद्ये यजु-३६।१ आर्य संस्कृति के उपदेशक ने अपने प्राणों की चिन्ता त्यागी प्राणों

की रक्षा का उत्तरदायित्व प्रभु चरणों में रख दिया, बस फिर अदीन, अभय पद को प्राप्त हुआ निश्चिन्तता से आर्यत्व के प्रचार में जुट गया। साधारण लोग मृत्यु भय से कांपते हैं ये मस्ताने मृत्यु से मज़ाक करते हैं। फांसी की रस्सी की चूमते हैं, इस निश्चिन्तता की कोई कीमत न आंकी जा सकती है न अदा की जा सकती है। "जां दें दी तलाशे हक के लिए फिर और इबादत क्या होगी।"

४. **गृणाना** :—इस मस्ती में मस्त गाते हैं, प्रेम विभोर हो कर गाते हैं, स्वयं रीझते हैं, अपने प्रभु को रिझाते हैं। जो संपर्क में आजाए उसे भी बेखुदी हो जाती है। इनके गाने में सोज़ (वेदना) भी होता है प्रेम व कृतज्ञता भी भरी रहती है। गायन वह कला है जो कि श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर देती है। जो अच्छे विद्वान् नहीं कर पाते वह गायक कर दिखाते हैं। बल्कि शीघ्रता सुगमता से करते हैं।

हरियाणा में भजनोपदेशकों कों (श्री बस्तीराम जी फूल सिंह जी इत्यादि) ने आर्य समाज का खूब प्रचार किया एक कर्ण-रस दूसरा प्यार से सनी सुधार की भावना बहुत महत्त्व पूर्ण असर करती है।

उपमा :– (क) मलिका विक्टोरिया का भारत में राज्य था। महाराजा उदयपुर को स्टार आफ इंडिया (Star of India) की उपाधि दी गई उदयपुर से दिल्ली खुशियाँ मनाते जा रहे स्पेशल ट्रेन में। भरतपुर स्टेशन पर इंजन पानी लेने के लिए रुका। एक ब्राह्मण महाराज उदयपुर को अपनी कविता सुनाने के लिए आया। महाराजा ने अन्दर बुला लिया। पंडित जी ने महाराज के वंश की प्रशंसा की। अन्त की कली में कहा मुझे बड़ा दुःख है कि जिन के वंश का चिह्न तो सूर्य रहा। आज वे दिल्ली में सितारा बनने जा रहा है।

महाराज को अपनी गलती की प्रतीति हुई-वहीं से गाड़ी वापस उदयपुर को करवा दी, वाईसराय को तार दिलवा दिया कि तबीयत खराब हो गई। ये हैं कवियों के प्रभाव !

(ख) एक टीस जिगर में उठती है,एक दर्द सा दिल में होता है।
हम चुपके चुपके रोते हैं, जब सारा आलम सोता है। –भगतसिंह

राष्ट्र में संकट की घड़ियों में इन उपदेशकों ने रणबांकुरे जीवन दानी रणक्षेत्र में ला खड़े किए। राष्ट्र के संकटों का विमोचन अपनी ओजस्वी वाणी से किया।

५. **सोमम् पातम्** : – शान्ति-परम ऐश्वर्य को प्राप्त करते/ कराते हैं। ठण्डे दिमाग़ वाला ही तो अपनी-पराई, राष्ट्र की उलझनों का समाधान अपने ध्यानस्थ मन से प्राप्त करता है। वही कार्य सही भी होता है। सुना है वीतराग महर्षि दयानन्द जी महाराज ने १८५७ के संकट काल में अपना योगदान दिया था। संन्यासी बन्दा बैरागी ने आपतकाल में तलवार हाथ में ली।

निष्कर्ष : –उपदेशक ऋत नियमों को समझने वाले हों और आचरण के धनी हों, स्वयं आलिम बा अमल हों। प्राणों की चिन्ता परमेश्वर पर छोड़कर निर्भीक हों। सदैव परमेश्वर की स्तुति गाते उसी के आश्रित बने रहें। इसी तरह अपनी प्रिय मातृ भूमि की रक्षा सेवा में योग दें।

– – –

ओ३म्

(११) राष्ट्र यज्ञ – प्रचारक

ओ प्र सोमासो विपश्चितो ऽपो नयन्त ऊर्मयः ।

अन्वय : वनानि महिषा इव ।। ऋ० ९-३३-१, **साम ४७८**

सोमासः विपश्चितः ऊर्मयः वनानि प्रनयन्त महिषा इव ।।

प्रचारक को राष्ट्र के अतीत की जानकारी हो, कर्तव्य के प्रति जागरूकता हो, तो प्रचार के लिए राष्ट्र हितैषी प्रचारकों की नितान्त आवश्यकता होती है। प्रचार क्षेत्र में जानें वाले के अन्दर क्या गुण होने चाहिएं उनका सुन्दर उल्लेख प्रस्तुत मन्त्र के अन्दर दिया गया है। आज के प्रचारक महोदय किसी न किसी आर्य समाज में आधे घण्टे का भजन व उपदेश दे आते हैं और मन में सन्तुष्ट रहते हैं कि हमने राष्ट्र व जाति की बड़ी सेवा कर दी। एक-दो ग्रन्थों उपनिषद्, गोता, योगदर्शन, इत्यादि का स्वाध्याय करके कुछ उपदेश बनाये होते हैं; प्रायः उन्हीं पर कुछ भाषान्तर करके बोलते रहते हैं। बहुत बार श्रोताओं के लिए रोचक भी बना देते हैं,परन्तु मैं क्षमा चाहूंगा यदि यह कहूं कि ये प्रचार नहीं है। पहले तो अपने शास्त्रों का भी न होने लायक ज्ञान होता है फिर अन्य मज़हबों की पुस्तकों का ज्ञान तो नितान्त नहीं होता, सब ठीक हैं, सब सत्य पर हैं, कहकर छुटकारा पाते हैं। तुलनात्मक स्थिति न स्वयं जानते हैं न श्रोताओं के सन्मुख रखते हैं। आर्य धर्म प्रभुकृत सृष्टि के कितना अनुकूल है. आर्य भाषा शरीर से निकलने वाले वर्ण क्रम के कितने अनुकूल हैं। जबकि अन्य मज़हब–अन्य भाषाएं इन तथ्यों से सर्वथा अनभिज्ञ व दूर हैं। इस प्रकार के तुलनात्मक अध्ययन comparative study जब तक न की जावे तो न तो वेदों व आर्य संस्कृति, आर्य भाषा

का महत्व स्वयं जानते है न जनता को जना पाते हैं।

केवल आर्य समाजों के अन्दर रटी रटाई बातों को पुनः पुनः दोहराना यह क्या प्रचार हुआ ? प्रचार तो अनभिज्ञ जनता के अन्दर जाकर उनकी भ्रान्तियां शास्त्र के उदाहरण बताकर दूर करना है। मुसलमानों व ईसाइयों में जाकर अपने पक्ष व उनके पक्ष की साथ साथ तुलनात्मक स्थिति को रोचक व जचने वाली युक्तियों व उपमाओं से देकर बतावें। तभी वास्तविक प्रचार होगा, ऋषियों के ऋण से मुक्त होंगे और अन्तरात्मा शाबास देगी। इसके लिए आवश्यक है:--

१. हमारा शास्त्र सम्बन्धी स्वाध्याय गहन हो, मनन इतना विशाल हो कि आपको अपने बोलने पर पूरा-पूरा विश्वास हो। अकाट्य युक्तियों से अपने सिद्धान्त को सिद्ध करें। आधुनिक उपमाएं दें, विशेष करके प्रकृति के नियमों से अपनी बात को वैज्ञानिक रूपदेकर जचावें।

२. बोलते समय प्रसन्न वदन बने रहें, प्यार की दृष्टि रखें, घृणा बिल्कुल न हो। ठीक है कि अधिकांश जनता अज्ञान में फंसी पड़ी है, परन्तु यह मेरे प्रभु प्रोतम के मन्दिर हैं। इनकी उपेक्षा नहीं करनी।

३. कुछ लोग बार-बार प्रश्न करेंगे, कटाक्ष करेंगे तो प्रचारक को गम्भीर रहना चाहिए, गाली देने वाले के प्रति भी आवेश में न आवें, उद्विग्न न हों वरना अपनें अभीष्ट प्राप्ति में असफल होंगे। महर्षि दयानन्द महाराज का जीवन एक उज्जवल उदाहरण है। आर्य जनता का हित किया और उन्होंने विष पिलाया फिर भी उनके उद्धार के प्रयत्न नहीं त्यागे।

४. किसी भी विधर्मी के रसूल, नबी, पीर पैगम्बर, अवतार व उनके बनाये ग्रन्थों पर आरम्भ से आलोचना न करें, बुरा भला न कहें बल्कि उसकी कुछ अच्छाइयों को कहकर सद्भावना उत्पन्न करें फिर मीठे शब्दों में अपना दृष्टिकोण रखें। प्रस्ताव करें, सुझाव देवें, श्रोताओं को सोचने का समय देवें, उनकी अपनी भ्रान्तियों का एहसास बड़ी प्यारी वाणी से करावें। मोटी भाषा में उनके अन्दर अपने मिथ्या मन्तव्यों के प्रति शक सन्देह उपजा देवें कि वे सही नहीं हैं, और बस।

ये मनुष्य जन्य मत कहीं तर्क की कसौटी पर टिक न पावेंगे। आप उनको स्वयं असत्य न कहें परन्तु ऐसी तुलना उपस्थित करें कि वे स्वयं अपनी भ्रान्ति को स्वीकारें। उपमा के लिए निम्न कुछ बातें लिखी जाती हैं।

क) मैथुनी सृष्टि में मैथुन बिना सन्तान सम्भव नहीं।

ख) आत्मा एक बार किसी शरीर को त्याग दे वह फिर उसी शरीर में प्रविष्ट नहीं होती।

ग) परमेश्वर न्यायकारी है। उस प्रभु के नियम अटल हैं। सबको अपने अच्छे बुरे कर्मों के फल स्वयं भुगतने पड़ेंगे।

घ) न्यायकारी प्रभु के दरबार में सिफारिश नहीं चल पाती। इत्यादि प्रस्तुत मन्त्र में यही परमेश्वर का आदेश उपदेश प्रचारकों के प्रति है।

१. **सोमासः**—(क) सोम=शान्तचित्त, गम्भीर

उपमा :-जैसे डाक्टर आप्रेशन करते समय मरीज़ की गाली सुनकर

भी अपनी शल्य चिकित्सा को नहीं छोड़ता, क्रोधित नहीं होता, ठीक वैसे ही प्रचारक को भी प्रतिकूल व्यवहारसे खिन्न नहीं होना चाहिए।

(ख) १. प्रचार क्षेत्र में जाने वाले को कठिनाइयां बहुत आती हैं। पहले तो यात्रा स्वयं ही कष्टप्रद होती है, थकाती है। २. बीड़ियों का धुआं अस्वास्थ्यप्रद होता है। ३. जलवायु का थोड़े-थोड़े काल में परिवर्तन स्वास्थ्य पर असर डालता है। ४. प्रत्येक परिवार में भोजन पकाने की विधि में अन्तर रहता है। नमक मिर्च की मात्रा में फर्क रहता है। "कहीं घी घना, कहीं मुठ्ठी भर चना।" इन सबको प्रभु प्रसाद समझकर संयम से खावें। ५. कहीं बुलाकर बोलने का अवसर न देंगे या कहीं शक्ति से अधिक भार डालेंगे। इन सब में तटस्थ रहें। संसार विरक्त व प्रचारक को पहचान खाने व बोलने में करता है। इस विषय में हमेशा सावधान रहें।

२. **विपश्चित**–sharp vision–ज्ञानी श्रोताओं की रुचि, योग्यता को देखकर बोले। कहीं 'सत्यवचन महाराज' वाले मिलेंगे, तो कहीं उद्दण्ड बेहूदा प्रश्न करने वाले होंगें, कहीं आप की योग्यता की परीक्षा लेने वाले होंगे, इन के संमुख सिद्धान्त पर पक्के बने रहें। हाजिर जवाब हों, शालीनता को कभी भी न त्यागें।

ज्ञानी वही जिसे अपने वक्तव्य में अहंकार न हो, अपनी प्रशंसा स्वयं कभी न करे, विनम्रता हो, श्रोताओं में ज्ञान युक्त योग्यता भर दे। उसके वक्तव्य के कारण झगड़े फसाद न हों।

३. **ऊर्मय** :– वक्ता उत्साही हो, निराशा जनक स्थितियों

में भी हार न माने, अपने सत्य सिद्धान्त व प्रयत्न में ढील न आने दे। राष्ट्रीय संस्कृति, लोक कल्याण की उमंगे उसके हृदय में सदा लहरों की तरह उठती रहें। इनका प्रचार वह जनता जर्नादन में करता चले। ऊन जैसे स्वयं ठण्ड को सहन करके अपने पहनने वाले को गर्मी आराम देती है उसी तरह राष्ट्र में प्रचारक स्वयं कष्ट सहन करके राष्ट्र व जनता का कल्याण करे विशेष करके उज्जवल बुद्धि वाले लग्नवान् व्यक्तियों को राष्ट्र उत्थान के क्षेत्र में निकाले।

४. **अप प्रणयन्त वनानि प्रणयन्त** :–प्रचारक केवल पोथी पंडित ही न हो, केवल लम्बे भाषण लम्बी बाते करने वाला न हो, स्वयं कर्म निष्ठ और कर्त्तव्य परायण हो। जनता में अपनी बात को क्रियात्मक जीवन से भी पाठ पढ़ावे। उन्हें ज्ञान की बातों को कैसे Practicle व्यवहार में लाना है यह सिखावें। कहावत है Life speaks loudr than the lips राष्ट्रके अन्दर आए अकर्मण्यता के दोष की निवृत्ति अपने ओजस्वी प्रचार द्वारा करे।

५. **महिषा इव** :–उपरोक्त पुरुषार्थ करने वाले सफल प्रचारक होते हैं। वे ही पूनजीय और वन्दनीय बनते हैं। कारण हृदय से पवित्र, तपस्वी, परहित में जीवन आहुत कर रहे होते हैं, राष्ट्र यज्ञ के ऋत्विज होते हैं।

निष्कर्ष :–प्रचारक. तपस्वी, संयमी, गंभीर, ज्ञानी, उत्साही अनुभवी हो। केवल वाणीं ही नहीं उसका जीवन अनुकरणीय बना हुआ हो, ज्ञान रहित व भ्रान्तियों में फंसे अज्ञानी मनुष्यों में हित से ज्ञान चर्चा करें भय न खाए।

राष्ट्र में संस्कृति के रक्षक प्रचारक उपजावें ताकि राष्ट्र में (भाषण लेखन) का कार्य समाप्त न हो। राष्ट्र में अंधकार की

निवृत्ति होती रहे। राष्ट्र में PL. ४८० व पैट्रोडालर के आए धन द्वारा षड् यन्त्रों को सफलता से विफल किया जा सके।

ओ३म्

(१२) राष्ट्र यज्ञ – अतिथि

ओं मार्जाल्यो मृज्यते स्वे दमूनाः कविप्रशस्तो अतिथिः शिवो नः।
सहस्रशृङ्गो वृषभस्तदोजा विश्वा अग्ने सहसा प्रास्यन्यान्॥

ऋ० ५।१।८

अन्वय-दमूनाः अग्ने कविप्रशस्तः शिवः सहस्रशृंगः तत् ओजाः वृषभः मार्जाल्यः स्वे प्र मृज्यते अतिथिः विश्वान् सहसा न अन्यान् असि॥

राष्ट्र कल्याण, राष्ट्र उत्थान में केवल राजा मन्त्री व सेनापति ही नही, बल्कि विरक्त अतिथि भी बड़ा महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं। जहां राजा सेनापति बाह्य अपराधियों को पकड़ते दण्डित करते हैं वहां अतिथि अपनी ओजस्वी वाणी से उपदेश देकर अपराधियों के मस्तिष्कों को परिवर्तित कर डालते हैं। राजा के दण्ड विधान से पूर्ण व स्थायी सुधार नहीं होता, परन्तु तपस्वियों द्वारा सुधार मुस्तकिल (स्थायी) होता है।

क) मुगला डाकू को सरकार न तो पकड़ सकी और न ही उसके अपराध छुड़वा सकी। परन्तु आर्य विद्वान् के एक उपदेश के कुछ भाग को सुनने से मुगला डाकू का जीवन बदल गया।

ख) समर्थ गुरु रामदास जी के उपदेशों ने शिवाजी के अन्दर वह सामर्थ्य भर दी कि उसने आसफजाहियों की जड़ें हिला दी औरंगजेब के आतंक काल के शासन में एक हिन्दू राष्ट्र की स्थापना करवा दी।

१. **दमूनाः अग्ने** :— ऐसी शक्ति अतिथि के अन्दर क्यों कर आ जाती है तो वेद ने कहा कि यह इन्द्रियों के स्वामी, प्रत्येक इन्द्रिय की वश में रखने वाले होते हैं। जैसे अंगारे पर कालिख नहीं रह पाती वैसे निर्मल जीवन अतिथि का संसार के लोगों को प्रकाश व गति प्रदान करता है राष्ट्रकी जनताके अन्दरसे निराशा, कायरता, कुरीतियों को दूर करके, राष्ट्र के प्रतिजो उत्तरदायित्व है, शूरत्व है उसे उभारते, नश्वर मोह को हटा अजेय स्थिति पैदा करते हैं।

२. **कवि प्रशस्त** :—प्रशंसनीय विद्वान जिन्हें स्वार्थ सम्मान, सेवा की लालसा बिल्कुल न हो परन्तु संसारी लोगों की चरित्र-हीनता को देख देख कर दुःखी होते है और उनके सुधार हेतु प्रयत्न शील होते हैं। देश वासियों की गरीबी अज्ञानता और चालाक रक्त चूसने वालों के षड्यंत्रों को देखते हैं तो अत्यन्त पीड़ित होते हैं।

एक टीस जिगर में उठती है,एक दर्द सा दिल में होता है।
हम चुपके चुपके रोते है, जब आलम सारा सोता है॥ भगतसिंह

ये क्रान्तिकारी अन्दर ही अन्दर घुलते रहते हैं। प्रभुदेव से सदैव प्रार्थना करते रहते हैं कि भगवान सामर्थ्य दो कि देश व जाति का सुधार कार्य कर सकूं। राष्ट्र व जाति की फूट, छुआ छूत, पार्टीबाजी को दूर कर सकूं। यह ऋषियों का समाज व पवित्र देश पुनः ज्ञान, शक्ति, समृद्धियों से भरपूर हो। विश्व का गुरु बने। खुश हाल हो। यह आर्य जाति संगठित होकर क्षात्र शक्ति को अपनाए चरित्र की धनी हो। राष्ट्र में शान्ति का साम्राज्य स्थापित हो।

३. शिवः—जिन के उपदेश और समालोचना, दोनों की पृष्ट भूमि में शिव संकल्प ही भरा रहता है। उनका प्यार व फटकार सब संवार के लिए होते हैं। वह सौम्य मूर्ति मनुष्य की राक्षसी प्रवृत्तियों को मोड़ने की शक्ति रखती है। विध्वसंक क्रियाओं को रचनात्मक कार्य में परिवर्तित कर देती हैं। वह द्वेष को प्यार में, मोह को विश्व प्रेम में बदलने का कार्य करते रहते हैं।

४. सहस्रभृंगः – प्रायः मनुष्य श्रम से बचकर Short cut methods अपनाता है। मेहनत न करनी पड़ें धन बहुत मिल जाए लाटरी हमारे नाम की खुले-बेंक लूट कर महफलें उडावें–ऐसे आलसी अकर्मण्य व्यक्तियों को ये महान् तेजस्वी बुराइयों-अकंर्ण्यता से छुड़वा कर सिखाते हैं उद्यमेन परा पूजा। अग्निवत् अवगुण छुड़वा कर सन्मार्ग गामी बनाते हैं। ये हैं वे पारसमणि जो स्वयं दूषित नहीं होते परन्तु सम्पर्क में आने वाले को कुन्दन बनाते हैं।

५. तत् ओजाः वृषभः :—इन के अन्दर पराक्रम, कार्य क्षमता भी आश्चर्यजनक होती है। थोड़ी गाढी निद्रा लेकर अधिकांश समय राष्ट्र सेवा में संस्कृति के प्रचार-प्रसार में लगाते हैं। संयमी जीवन, शरीर नीरोगी-वज्र सदृश बलवान होने के साथ-२ मस्तिष्क में आस्तिकता, ईश्वर विश्वास अद्वितीय सुदृढ़ होता है। तभी सदैव अदीन व निर्भीक बने रहते हैं।

इन ओजस्वियों के पास दो प्रकार की शक्तियां विद्यमान होती हैं। आकर्षण, आक्रमण। आकर्षण शक्ति से ये साधकों को खींच लेते हैं– (मुंशीराम) आक्रमण शक्ति से ये दोषों की निवृत्ति कर पाते हैं। (अमींचन्द) की भांति।

ये फकीर परिव्राजक महान दानी भी होते हैं। प्यार भरे शब्दों में ज्ञान की वर्षा करते हैं। पक्षपात रहित सब के भले के लिए अपने ज्ञान व अनुभव के आधार पर सत्य सूझ देते हैं। आधिभौतिक आध्यात्मिक कष्टों को दूर करने के उपाय बतलाते हैं। उदारता की पराकाष्ठा होती है। पिछड़े लोगों का उद्धार मातृ शक्ति को विश्व वन्दनीय बनाते हैं, मनुष्य मात्र के लिये वेद के बन्द मार्ग को खोलते हैं।

६. **माजल्यः स्वे प्र मृज्यते** :— अत्यन्त मंजा जीवन, प्रत्येक इन्द्रिय से बल पवित्रता प्रकट होती है। यम नियमों की कसवटियों पर खरा तुलने वाला जीवन जो साधारण व्यक्तियों के लिए अनुकरणीय हो, अपने आप में एक उपमा हो।

जीवन में यश, बल, पवित्रता को बनाए रखने के लिए योगाभ्यास व स्वाध्याय निरन्तर चलता रहता हो, समाधिस्थ हो कर परमेश्वर से शक्ति, राष्ट्र कल्याण की सूझ, अंधकार इत्यादि की निवृत्ति के उपाय प्राप्त करते हैं।

७. **अतिथि** :—ऐसे परिव्राजक विरक्त महात्मा परहित में अपने आराम व स्वास्थ्य की चिन्ता न करके घूम-घूम कर गृहस्थियों का सुधार करते हैं। वेद की ज्योति का प्रचार-प्रसार करते रहते है। इनके आने की तिथि भी मालूम नहीं होती। तभी तो नाम अतिथि बना है। राष्ट्र के आपत्काल में भी सक्रिय रहते हैं।

८. **विश्वान् सहसा नः अन्यान् असि** :— इस सुधार प्रचार में वे अपनी संपूर्ण शक्ति लगाते हैं, जीवन खपा देते हैं। इन अतिथियों का ज्ञान पुरुषार्थ अपने व अन्य मतवालों की रक्षा हेतु

निरन्तर चलता रहता है। ठीक ऐसे ही थे युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी सरस्वती; जिन्होंने विकास सुधार के लिए दस समुलास लिखे व दुरित दूर करने के लिए चार सम्मुलास सत्यार्थ प्रकाश के लिखें। भ्रान्तियों में पड़े मनुष्यों के लिए पथ्य परहेज दोनों बतला दिए। महान उपकार किया। भ्रान्तियों के अंधकार से निकाल कर सन्मार्ग की सुन्दर राह दिखा दी।

यह है संन्यासी का यज्ञ मय जीवन जो बिना प्रतिदान की भावना के राष्ट्र कल्याण राष्ट्र यज्ञ करता है।

(१३) राष्ट्र यज्ञ—याज्ञिक बुद्धि

ओं आ वो धियं यज्ञियां वर्त ऊतये देवा देवीं यजतां यज्ञियामिह।
सा नो दुहीयद् यवसेव गत्वी सहस्रधारा पयसा मही गौः॥

ऋ० १०/१०१/६

अन्वय–देवाः वः देवीं यज्ञियां यजतां यज्ञियां धियं ऊतये इह आवर्ते सा यवसा गत्वी इव सहस्रधारा मही गौ पयसा नः दुहीयत्॥

शब्दार्थ–देवो ! तुम्हारी दिव्य पूज्य यज्ञ भावना का रक्षण करता हूं। तुम भी इस यज्ञ भावना की रक्षा करो। जैसे जौ के खेत से तृप्त हो लौटी गाए दूध की सैंकड़ों धाराएं देती हैं उसी प्रकार याजक भावना याज्ञिक बुद्धि को उपजावेगी जो तुम्हारी कामनाओं को पूरा कर देगी।

प्रस्तुत मन्त्र के शब्दार्थ से निम्न प्रश्न उपजते हैं—

१) याज्ञिक बुद्धि कैसी होती है ?
२) याज्ञिक बुद्धि की उपज– रक्षण किस प्रकार हो पावेगा ?
३) याज्ञिक बुद्धि चली क्यों जाती है– फिर किस प्रकार लायी जा सकेगी ?

४) जौ की उपमा सदृश याज्ञिक बुद्धि क्या स्वीकारती है ?

५) याज्ञिक बुद्धि से दूध की सहस्रों धाराओं का क्या रूप, भाव होगा ?

६) याज्ञिक बुद्धिवालों की कामनाएं किस प्रकार पूर्ण हो जाती हैं

उत्तर– १ क) याज्ञिक बुद्धि वाला सदैव निःस्वार्थ परोपकार ही करता है ।

ख) परहित में आत्मबलिदान देने से कभी न झिझकेगा ।

उपमा– १) ग्रीष्म ऋतु है नदी के किनारे एक वृद्ध किसी बच्चे को खिला रहा है और अपने पांव जल में डाल रखे हैं । मगरमच्छ ने बुड्ढे की टांग पकड़ी । साधारण बुद्धि वाला तो बच्चे को मगरमच्छ के आगे डाल अपनी टांग छुड़वाने की चेष्टा करेगा परन्तु याज्ञिक बुद्धि वाला अपनी मृत्यु की परवाह न करके बच्चे को बाहर दूर धकेल देगा ।

२) देश व संस्कृति को बचाने के लिए शहीदों ने अपनी भरी जवानी में हंस हंस कर बलिदान दिए । ये अपने को अमर आत्मा मानते हैं, नश्वर शरीर नहीं ।

२–क) याज्ञिक बुद्धि उपजेगी शुद्ध भावनाओं से तथा किसी पवित्र आत्मा के सम्पर्क से। पूर्वज ऋषियों की जीवनियों को पढ़ने से । किन-किन भयंकर कठिनाइयों का मुकाबला करते हुए वे सत्य पर स्थिर रहे, अपने सुचरित्र की रक्षा की । राष्ट्र व संस्कृति की निस्वार्थ सेवा की ।

ख) रक्षण होगा शुद्ध आचरण से, राष्ट्र व संस्कृति का रक्षण व सम्मान बनाए रखनें के लिए कोई सी भी कुर्बानी दे देने से । ज्ञान युक्त यज्ञ करें/करावें, यज्ञ के रहस्य बतावें, अनुसंधान करें ।

सेवा करने वाले उल्लास से फ़र्ज समझ कर सेवा करें। वीरों का साहस बंधाए रखें, शरीर तो नाशवान है ही, यदि राष्ट्र रक्षा हेतु प्राण अर्पण करने का सुअवसर मिले तो इस जीवन का परम सौभाग्य मानें। प्रभुदेव का धन्यवाद करें।

३–क) याज्ञिक बुद्धि चली जाती है– अज्ञान, आत्म विस्मृति, भोग प्रवृत्ति, स्वार्थ, द्वेष के कारणों से। जीवन में सत्युग व कलि-युग कभी कभी आया ही करते हैं।

उपमा– १) वाजश्रवा ऋषि ने यज्ञ किया, सब कुछ लगा दिया परन्तु दक्षिणा में बेकार गाएं देने लगा।

२) भर्तृहरि जी ने राज्य त्याग दिया, जंगल में थूक को लाल समझ कर उठाने लगा।

३) गुरु मच्छन्दरनाथ पुराने योगी थे। रावी नदी में मगर-मच्छ को सन्तान के साथ जाते देख वैराग्य को खो बैठे और विवाह कर लिया।

ख) याज्ञिक बुद्धि चली गई उसे फिर से लाने में बड़ी मेहनत पड़ती है। उसके साधन हैं। १) विरक्त सन्तों का संग सहवास। २) सत् शास्त्रों का स्वाध्याय। ३) वैराग्य–हर आकर्षक वस्तु व व्यक्ति अन्तवन्त है। वियोग अवश्य होगा, जो मोह किया तो दुःख होगा, फंसोगे। जड़ भरत की कथा–एक हिरण के बच्चे से मोह हो गया। तो उसे हिरण की योनि में जाना पड़ा। बार-बार मन में ऐसे विचार लाने। ४) अभ्यास—परीक्षा होगी, हम सुअवसर का कितना उपयोग कर पाए। वैराग्य के उद्गारों पर आचरण करके देखो। अनुभव करो, प्राकृतिक आकर्षण से कितना छुटकारा पाया है। भोगों की आसक्ति घसीटती तो नहीं ? अभ्यास के अन्दर कड़ा आत्म निरीक्षण पड़ा है।

४–खेत में खड़े जौ बड़े रसीले स्वादिष्ट पौष्टिक होते हैं, जिन्हें पेट भर खा कर गाय तृप्त होती है। जो कुदरती देन है। प्रकृति माता जो कुछ देती है उसी पर निर्वाह करके तृप्त होने से ही साधक स्वाद की दासता से छूटता है। तभी जाकर अदीन बन पाता है।

याज्ञिक बुद्धि तृप्त होगी–सत्पुरुषों के संग से–आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय से, एकान्त में मनन करने से, अन्त में आचरण करने से परिणाम स्वरूप नित्य नये उत्कृष्ट उत्थान कारक विचार ध्यानस्थ अवस्था में मिलेंगे। उन दिव्य प्रेरणाओं का उपयोग प्राणिमात्र –व–राष्ट्र कल्याण हेतु प्रयोग करने में होगा।

५–गाय पेट भर खाकर जुगाली करती है, उससे उसका खाया हुआ हज़म होता है। फिर जाकर अमृत तुल्य दूध देती है।

इसी तरह साधक जब उपरोक्त रीति से अपनी याज्ञिक बुद्धि को तृप्त करता है। हर हाल में सन्तुष्ट तृप्त शुक्रगुज़ार होता है तो उसकी बुद्धि शिव संकल्प की धाराएं बहाती है। अशान्त जीवों को शान्ति का दान देती है। राष्ट्र की समस्याओं को सुलझाने पर गम्भीरता से सोचते हैं।

एकान्त में मनन करना मन्थन ही होता है। जब अनुभव सिद्ध कर लेते हैं। उनको पुष्टि के लिए अन्य आर्ष ग्रन्थों के विचार एकत्रित कर संयुक्त करते हैं। इन सिद्धान्तों के लिए प्राकृतिक जगत् से उपमाएं ढूढ़ते हैं। गूढ़ रहस्यों को सरलतम बनाकर सर्वसाधारण जनता को सन्मार्ग का रास्ता रोचक बनाकर बतलाते हैं। यही याज्ञिक, तीव्र, सूक्ष्म बुद्धि एक-एक संकेत से अनेक रहस्य खोलती है। यह दूध की सैंकड़ों धाराओं से नवनीत बनाकर देना है।

गाय के स्तन दूध से भर जाते हैं तो वह रंभाती है बछड़े को बुलाती है अवसर मिले तो स्वयं भी पहुंच जाती है, इसी तरह याज्ञिक बुद्धि वाले विद्वान भी पात्र शिष्यों को चाहते हैं। शिष्य आएं वरना ये स्वयं भी पहुंच जाते हैं। उदार होते हैं। वेद विद्या का प्रचार प्रसार हो–मानव कल्याण हो और आस्तिकता परिपक्व हो, यही जीवन की इच्छा रहती है। मनुष्य बुराइयों से छूटें।

दूध की उपमा देकर वेद माता ने याज्ञिक विद्वानों के लिए आदर्श रखें हैं।

क) दूध श्वेत होता है बेदाग़ होता है, याज्ञिक का जीवन चरित्र बेदाग़ होना चाहिए।

ख) दूध में स्निग्धता होती है याज्ञिक विद्वान् की वाणी सरल मधुर रोचक प्रिय होती है श्रोता ऊबते नहीं।

ग) दूध पौष्टिक होता है, याज्ञिक विद्वान् का जीवन, वाणी पुष्टि देती है। निराशा दूर करती है रुके कदमों में गति प्रदान करती है। उत्साह भरती है।

घ) दूध खटाई से फट जाता है याज्ञिक बुद्धि का माधुर्य द्वेष से फट जाता है।

६–याज्ञिक बुद्धि वाले की बुद्धि वस्तुतः देखबुद्धि, मातृ बुद्धि बन चुकी होती है उनका जीवन पर हित मे जुटा होता है। अपनी आवश्यकताएं न्यूनतम बना ली होती हैं। समत्व होने के कारण कहीं राग नहीं होता; अतः वह आप्त काम हो जाते हैं।

उपमा महर्षि दयानन्द जी महाराज आप्तकाम परम विरक्त ऋषिथे। परन्तु आर्यो के लिए चक्रवर्ती राज्य की जगह-जगह पर प्रार्थना की है। स्वदेश की स्वतन्त्रता के प्रबल प्रवर्तक थे, वेदज्ञानमनुष्य मात्र को पहुंचाना चाहते थे। इन सब में

उनके व्यक्तिगत जीवन की कोई चाह नहीं थी इसलिए महर्षि जी आप्त काम थे। प्रभु भक्त राष्ट्र भक्त थे।

(१४) राष्ट्र यज्ञ — राष्ट्र नेता को वेदोपदेश

ओं सम्प्रच्यवध्वमुप संप्रयाताग्ने पथो देवयानान् कृणुध्वम्।
कृण्वाना पितरा युवानान्वातासीत् त्वयि तन्तुमेतम्॥

यजु० १५/५३

अग्ने ! पुनः कृण्वाना देवयानान् पथो कृणुध्वं सं प्रच्यवध्वं उप सं प्रयात युवाना पितरा त्वयि तन्तुम् अनु आ तासीत्॥

१. **अग्ने** :—हे ज्ञानी नेता ! राष्ट्र में पवित्रता, कर्त्तव्य निष्ठा-गति लाने के इच्छुक ! उन्नति के मार्ग पर स्वयं व राष्ट्र को ले जाने वाले नेता ! वेद माता आप को अपना अभीष्ट प्राप्ति हेतु निम्न उपदेश देती है।

२. **देवयानान् पथो कृणुध्व** :—अपने रास्ते को देवयान बना सरल प्रकाश युक्त आकर्षक बना। सत्यवादी चरित्रवान का जीवन आकर्षक होता है और वह दूसरों के जीवनों को सन्मार्ग का रास्ता दिखा सकता है। देखो राष्ट्र नायक ! आप राष्ट्र की जनता को अपनीदो आंखों से देखते हो परन्तु जनता की लाखों आंखें आप के चरित्र को देखती हैं। तुम्हारी तनिक त्रुटि राष्ट्र में भयंकर दुष्परिणाम ला सकती है।

उपमा—महर्षि चाण्क्य के सादा जीवन व ऊंचे विचार ने राष्ट्र को सम्मान युक्त बना दिया। पराजित देश को विजयी बना दिया।

दूसरी उपमा है कि राष्ट्र की सहस्रों वर्षों की गुलामी पतन स्थिति के उपरान्त स्वतन्त्रता पाकर राष्ट्र के चरित्र उत्थान पर

ध्यान न दिया-और राष्ट्र में घोष दिया living standard ऊंचा करने का। परिणाम राष्ट्र की जनता का प्रत्येक व्यक्ति अपना जीवन भड़कीला बनाने का इच्छुक बना और गलत रास्ते अपनाए भ्रष्टाचार की वृद्धि हुई। आज कोई राज्य का department, business productionदेश की ऐसी नहीं जहां सत्यता बर्ती जाती हो।

स्वयं सत्ता वालों ने गुण्डे पाल रखे हैं, कुर्सी बचाने के लिए वोट खरीदने के लिए। कितने अपमानजनक, देश में अहितकर कार्य ये लोग नहीं करते ? मुसलमानों, ईसाइयों को बुला-बुला कर बसाते हैं।

फिर पापियों को सज़ा नहीं मिलती जिसके परिणाम स्वरूप दूसरों को पाप करने का हौसला बढ़ता है।

खाना आसुरी, पहनना अश्लील, साहित्य ब्रह्मचर्य बिगाड़ने वाला,शिक्षा निकम्मी पतन की पराकाष्ठा करने के लिए सिनेमा-रेडियो-वीडियो-टैलीवियन कार्य कर रहे हैं और अधिकारी इन विलासिता चरित्र हीनता के साधनों को Living standard ऊंचा करने का रूप मान रहे हैं और प्रसन्न हैं, तृप्त हैं।

एक टीस जिगर में उठती है, एक दर्द सा दिल में होता है।
हम चुप के चुप के रोते हैं, जब सारा आलम सोता है॥

--भगतसिंह

३. **त्वयि तन्तुम् अनु आ तासीत्** :—बीती ताहि बिसार दे-
आगे की सुधिले।

अपने ताने को (कार्य क्षेत्र को) सीधा कर, दोष मुक्त कर जनता में National character भर देश वासियों में स्वदेश अभिमान को जगा। स्वयं बन, दूसरों को बना।

'सत्यमेव जयते' बड़े गर्व के साथ कहते हो, उसे आचरण में लावो। सिनेमा, रेडियो, टैलीवीयन, वीडियो, शिक्षा संस्थाएं अत्यन्त उपयोगी बन सकती हैं यदि उद्देश्य चरित्र निर्माण हो।

हुस्न सूरत पर न जाओ हुस्न सीरत भी है कुछ
हुस्न सूरत पर फकत नादान मरते हैं सदा
Hand some is he who does handsome.

कैसे बने बनाएं ? तो वेद ने आगे कहा--

४. **सं प्रचयध्वम्** सुन्दर योजनाएं बनें,जो Practicable (क्रियात्मक) हों सर्व साधारण जनता जिस में हिस्सेदार हो-योगदान दे सकें। जहां तक हों सके स्वावलम्बी बने-अपने पैरों पर खड़े हों-भीख न माँगें कितनी शर्मनाक बात है कि ये जर्मन-जापान छोटे देश जो दूसरों विश्वयुद्ध में पिस गए थे-वहीं हमें कर्ज दे रहे हैं शिक्षा देते हैं। हम से बहुत अधिक संपन्न हैं।

हमारे देश में सब कुछ पैदा होता है। विशाल देश है। फिर हम भिखमंगे हैं कर्जे लेकर खुश होते हैं। उन रकमों का दुरुपयोग होता है। चरित्र निर्माण, देश कल्याण की जगह विलासिता बढ़ रही है अमीर-अमीर,गरीब-गरीब बनता जा रहा है। गरीबों को कर्ज देने बांटने वाले अधिकांश स्वयं हड़प जाते हैं। ये हिस्से ऊपर से नीचे तक बंटते हैं। यदि पकड़ में आजावें तो पर्दा-पोशी होती है।

ओ देश नायक ! इन विकृतियों को दूर कर।

५. **सं प्रयात** :–सफलता होगी Organise-Deputise-supervise सुन्दर, कर्मठ, उपयुक्त, राष्ट्र हितैषी साथियों को साथ लो प्रियवर ! राष्ट्र के क्षेत्र के सूखने का कारण है कि बाड़ ही खेत को खा रही है रक्षक भी डाकुओं के हिस्सेदार हैं। Politicians are

poluted अपराधियों के संरक्षक हैं। गरीबों को भय मुक्त करने की बजाय आतंक फैलाते हैं भ्रष्ट चाहे कोई हो उन्हें examplary punishment शिक्षाप्रद दण्ड अवश्य मिलना चाहिए। ताकि पाप की ओर जनता की हिम्मत न बढ़े।

६. **युवानां पितरा** : पितर युवा हों माता पिता तो मर गए पितर कहां से लावें ? यहां पितर के दो अर्थ हैं। क) राष्ट्र के अनुभवी विद्वान् वे उत्साही हों विद्वानों का उत्साह बढ़ता है यदि उनकी बात को राष्ट्र नेता सुनते हैं और अमल करते हैं। experiments (परीक्षण) होते हैं उन्हें सम्मान मिलता है। पुरस्कृत किये जाते हैं। यही सच्चे ब्राह्मण होते हैं जो राजा को उस की गलती पर फटकाते हैं। यही हमारा अतीत इतिहास बताता है वस्तुतः राष्ट्र के (नीति निर्माता) policymakers ये ही तपस्वी, निस्स्वार्थ राष्ट्र हितैषी विद्वान् होते हैं इसलिए मंत्र में इन्हें पितर कोटि में गिनाया गया है।

ख) जीवन में पितर है : अ) मन, ब) वाणी, ये दोनों युवा हों उत्साही हों, अदब्ध हों।

अ) मन में राष्ट्र हित भरा होगा तो बाह्य परिस्थिति कैसी भी क्यों न हो कभी निराश न होगा। प्रतिकूलताएं बताती हैं कि राष्ट्र-हित में कुर्बानी, पुरुषार्थ की आवश्यकता है। उस कमी को पूरा कीजिए। सफलता आपके चरण चूमेगी।

ब) वाणी, ओजस्वी, मित व मधुर भाषिणी हो।

सफलता लम्बे भाषणों से और ऊंचे नारेबाजी से नहीं मिलती, सफलता के साधन हैं 'प्यार युक्त सुधार' किसी को ताड़ना भी करनी हो तो एकान्त में करें, वरना व्यक्ति प्रतिकार करेगा।

निष्कर्ष : राष्ट्र को clear effecient administration

देनी है तो सर्वप्रथम अपने चरित्र का निर्दोष (आदर्श) model सबके सामने रखो।

फिर कार्य को organise-deputies & supervise करें योजन बनाना, उपयुक्त व्यक्तियों की नियुक्ति, कड़ी निगरानी करनी यह श्रम साध्य अवश्य है। यह परमेश्वर की कल्याणी वाणी का सुन्दर अकाट्य संदेश है।

विचारो, अमल करो, सफलता प्राप्त करो।

ओ३म्

राष्ट्र यज्ञ – वीर नेता (१५)

ओं निषसाद धृतव्रतो वरुणः पस्त्यास्वा।

साम्राज्याय सुक्रतुः॥ ऋ १–२५–१० यजु० १०–२७/२०–२

अन्वय-साम्राज्याय धृतव्रतः वरुणः सुक्रतुः पस्त्यासु आनि ससाद॥

महर्षि दयानन्द जी महाराज की दो महत्त्व-आकांक्षाएं थी।

१) कृण्वन्तो विश्वं आर्यम् ऋ० ९/६३/५ विश्व का आर्य करण

२) आर्यों का चक्रवर्ती राज्य हो। आर्याभिविनय में ये दोनों कामनाएं एक दूसरे की पूरक हैं, विरोधी नहीं। प्रस्तुत मंत्र में भी आर्यों के साम्राज्य प्राप्ति की प्रार्थना है।

साम्राज्य = साम् + राज्य = सार्वभौम राज्य–विश्व शासन। ऐसे साम्राज्य के आगे महर्षि आर्य शब्द लगाते थे। वह वर्तमान प्रजातन्त्रवाद, पूंजीवाद, कम्युनिस्टों के राज्य की तरह न होगा। आर्यों में आचार, धर्म, न्याय प्रमुख रूप में रहते हैं। इनकी पृष्ट-भूमि में ब्रह्मशक्ति, क्षात्रशक्ति, संगठनशक्ति, अर्थशक्ति–रहेंगी। यह सुसंपन्न, सुशक्ति शाली, सुविज्ञ, न्याय पूर्ण, सक्षम साम्राज्य होगा। इस प्रकार की सुव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के

लिए किसी ज्ञानी, बलवान्, युक्तिवान्, समय व परिस्थिति के अनुसार ढलने वाला योग्य शासक चाहिए और वह साम्राज्य को स्थापित करे, नेतृत्व करे।

ऐसे साम्राज्य की स्थापना के लिए ओजस्वी नेता/राजा वहीं बन सकेगा जिसमें वेदमंत्र प्रतिपादित चार गुण अवश्य हों।

१. धृत व्रतः— व्रतः=ऊंची धाराएं-ऊंचे पवित्र Principles सिद्धान्त धृत=उनकी प्राप्ति हेतु बड़े मज़बूत इरादे हों। ऐसे वीरों के अन्दर निराशा नाम कोई वस्तु नहीं होती। असंभव शब्द उनके मस्तिष्क में नहीं उपजता। संकल्प के पक्के, हर कठिनाई के साथ जूझने हैं। वे रुकते, ऊबते नहीं, ये ही धुन के धनी सफल अवश्य होते हैं।

क) ये ही भागीरथ प्रयत्न करने वाले राष्ट्र में भागीरथी को बहाते हैं राष्ट्र की पिपासा को बुझाते हैं।

ख) ऐसे ही जांबाज़ औरंगजेब की कैद से निकल पुनः अपने मिशन को आगे बढ़ाते हैं। हिन्दु राज्य की स्थापना करने में सफल होते हैं।

ग) ऐसे ही उत्साही संसार से अंध विश्वास को निकालने के लिए जेहलम से कलकत्ते तक पैदल चलकर शास्त्रार्थ प्रचार करतें हैं। न दबते, नभय खाते हैं।

घ) ऐसे ही शूरवीर ज़ालिम अंग्रेज की कैद से भाग कर आज़ाद हिन्द फ़ौज को खड़ा कर देते हैं।

मुश्किलात रुकावटें अनेकों बेशक हों, परन्तु वीरों के कदम नहीं रुकते, हिम्मत नहीं छूटती। सिवाए लक्ष्य प्राप्ति के कुछ वहीं सूझता।

२. वरूण :— सबके प्यारे, सबके विश्वास पात्र बने होते हैं, क्योंकि सबल, विद्वान् गम्भीर, सौम्य, न्यायशील होने के नाते शरणीय, वन्दनीय होते हैं। निजी आवश्यकताएं नहीं, किसी प्रकार का छल कपट दंभ दिखावा नहीं होता।

सार्वभौम आर्य साम्राज्य की स्थापना केवल शस्त्रबल से नहीं हो पावेगी। इस शक्ति के साथ-साथ स्नेह, सेवा, साधना युक्त जीवन वाले राष्ट्रहितैषी वीरों की परम आवश्यकता अवश्य होगी।

आर्यों के साम्राज्य में अज्ञान, अन्याय, अविद्या, अभाव इत्यादि के लिए कहीं स्थान न होगा। यह वही वीर, चरित्रवान् सम्राट् होंगे जो घोषणा करने का साहस रखते होंगे कि मेरे राज्य में कोई चोर व्यभिचारी, पापी, शराबी, जुआरी नहीं है। यहां किसी के घर में ताला लगाने की आवश्यकता नहीं है। छतें यज्ञ के धुएं से काली हैं।

सत्य और न्याय पर अडिग रहने वाले शासक हरिश्चन्द्र, रघु, धर्मराज युधिष्ठिर इसी भारत भूमि पर हुए। आज संसार को ऐसे उत्साही सर्वप्रिय चरित्रवानों की आवश्यकता है।

वरुण की दूसरी विशेषता होगी कि उसके अन्दर पक्षपात न होगा। वहां परिवार पालन, भाई भतीजावाद को स्थान (आरक्षण) न होगा Reservation of seats न होगीं योग्यता का सम्मान होगा। Appreciation wins co-operation ऐसे शासकों को सबका सहयोग प्राप्त होगा।

३. सुक्रतु :— सुन्दर सर्वप्रिय क्रियात्मक जीवन। सक्षम, सुयोग्य, कर्मकुशल, सुदक्ष, चतुर, सुयाज्ञिक हो। राष्ट्रहित में मृत्यु को आलिंगन करना आसान हो। ऐसे सुक्रतु की अटूट धारणा

होती है कि ज्ञानयोग, राजयोग, भक्ति योग से पता नहीं कब मोक्ष मिलेगा परन्तु **वीरगति पाने वाला अवश्य मोक्ष को प्राप्त करेगा। वीर गति से इस लोक में परलोक में जयकार निश्चित होती है।** वीर गति पाने वाले के लिये मोक्ष द्वार अवश्य खुला रहता है। वीर को अपना सख्य प्रदान करते हैं, उसके रक्षक बनते हैं, उसे तत्वदर्शी बना आत्मा की पहचान करा, युद्ध में सफलता दिलवा, परमधाम में भी पहुंचाते हैं। महाभारत का इतिहास इस का साक्षी है। और प्रमाण मिलें न मिलें, ये तो प्रत्यक्ष है, संसार जानता है कि वीर हंसते-हंसते प्राण त्यागते हैं, उन्हें फांसी की रस्सी भयानक नहीं लगती बल्कि वे तो अपने फदे को चूमते हैं। कारण कि जीवन के लक्ष्य को पा चुके होते हैं। ऐसे सुक्रतु, ये राष्ट्र के परवाने संघर्ष से झेंपते नहीं, उसका स्वागत करते हैं। इसे जीवन में सुअवसर मिला मानते हैं।

४. **पस्त्यासु आनि ससाद :**— ये वीर नेता प्रजाओं व राष्ट्रघटकों के साथ निकटस्थ बने रहते हैं, प्रजा के दुःख-सुख में हिस्सेदार बनते हैं, प्रजा के दुःख को अपना दुःख मानते है, प्रजा की आवज को कद्र करते हैं। सबकी सम्मति लेते और सहयोग प्राप्त करते है, सबके विश्वासपात्र बनते हैं। इस तरह राष्ट्र के संगठन को मज़बूत करके फूट के भूत की निवृत्ति होती है।

इसी तरह अन्य राज्यों के साथ भी आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनैतिक सम्बन्ध जोड़े रहते हैं। इस प्रकार के निकट सम्बन्ध रखने से मित्र व शत्रु की पहचान सुगम हो जाती है।

व्यापार इत्यादि द्वारा साम्राज्य की श्री, आर्थिक स्थिति सुधरती है। अभाव दूर होते हैं।

५. **प्रश्न:—ऐसे राष्ट्र पुरुष-व-लोह पुरुष अपनी मातृभूमि में कैसे उपजें ?**

उत्तरः— साधन एक है कि मातृशक्ति के विचार उदात्त हों। वे स्वयं वीरांगनाएं बनें, विदुषी बने, तथा राष्ट्र हित में रत रहें। इसी तरह कुल पुरोहितों, आचार्यों का सहयोग वांछनीय है। राष्ट्र की शिक्षा पद्धति ऐसी हो कि किशोर अवस्था में बच्चों के अन्दर राष्ट्रीयता के दृढ़भाव भरे जावें–आत्म गौरव जगाया जावे।

निष्कर्षः— राष्ट्र को सुराष्ट्र बनाने के लिए योग्य वीरों का नेतृत्व आवश्यक है जो कि धृतव्रतः, वरुणः, सुक्रतुः, पस्त्यासु नि ससाद हों—प्रभुदेव दया करें।

ओ३म्

राष्ट्र यज्ञ — भक्त–वीर (१६)

ओं पवस्व सोम महे दक्षायाश्वो न निक्तो वाजी धनाय ।।साम-३०

अन्वय–सोम निक्तः पवस्व महे दक्षाय वाजी धनाय अश्वः न।

१. क) सोम निक्तः—हे भक्त ! यदि भक्ति रस शुद्ध है तो परिपुष्टता व परिपक्वता देने वाला चाहिए।

जो भक्ति तेरी ठीक है तो उसके चिन्ह होने चाहिएं- सिद्धान्तों पर सुदृढ़ता। चाहे वह प्रभु भक्ति हो, संस्कृति की भक्ति हो, अथवा राष्ट्र की भक्ति हो।

ख) पवस्व :—भक्ति यदि ठीक रूप में चल रही होगी तो उस में पवित्रता और परिपक्वता प्रत्यक्ष होगी-भक्त कहीं न तो डांवाडोल होगा न कहीं कि कर्त्तव्य विमूढ़ होगा। ये ही सच्चे वीर मनुष्य होते हैं। ये ही अपने तप व बलिदान के माध्यम से आत्मा की अमरता के विश्वास को संसार के सामने सिद्ध करते हैं। इति-हास इन की सुन्दर उपनाएं प्रस्तुत करता है।

उपमा क) हकीकतराय छोटे से बालक के सामने जल्लाद तलवार लेकर खड़ा है। काज़ी निर्णय देता है कि या तो इसलाम कबूल करो वरना मृत्यु दण्ड भोगना होगा। माता, पत्नी सामने खड़ी हैं चाहती हैं कि किसी तरह हकीकत का जीवन बचाया जाए। वीर आर्य पर न प्राणों के, न परिवार के मोह ने प्रभाव डाला, वह सिद्धान्त व धर्म पर अडिग रहा। संसार को संस्कृति की भक्ति का पाठ पढ़ा अपने यश को अमर कर गया।

२. शहीद-ए-आज़म भक्त सिंह जो लाहौर पुलिस हैडक्वार्टर में पुलिस अधिकारी सांडर्स को गोली मार कर भाग सका था, वहीं भगत सिंह दिल्ली के एसेम्बली हाल में बम्ब फेंक कर भाग सकता था। उसने स्वयं अपने आप को पकड़वाया। हाई कोर्ट के ज़ज ने अपना फैसला बहुत बाद में सुनाया: शहीद -ए-आज़म नें तो उसी समय अपने जीवन का फैसला कर लिया होगा जब बम्ब फैकने की योजना स्वीकार होगी। कितनी निर्ममता निर्भीकता है। यह है राष्ट्र भक्ति जो कि इतना महान् व अदम्यबल प्रदान करती है। इन्हीं राष्ट्र वीरों का फांसी की सज़ा सुनकर खून बढ़ता है चेहरा चमक उठता है। गाते-गाते फाँसी के तख्तें की ओर कदम बढ़ातें हैं। वे प्रसन्न होते है कि जीवन की जो योजना बनाई थी वह सफलता के अंतिम चरण में जा रही है।

"इस दुनिया में जो आता है उद्देश्य साथ कुछ लाता है
जो पूर्ण उसे कर जाता है वही सफल जन्म कहलाता है"

२. **महे दक्षाय** :—जीवन की सफलता के लिए बलिदान के साथ-२ बड़ी सावधानी और सतर्कता बर्तनी आवश्यक होती है। प्रभु भक्ति में कभी प्रीतम की आज्ञा का उल्लंघन न हो जाए। राष्ट्र भक्ति में किसी गलती के कारण राष्ट्र का नाम मैला न हो जाए।

१. भक्त सदैव सावधान रहता है कि उससे कोई ऐसी अवहेलना न हो जाए कि उसका प्रीतम परमेश्वर उस से रूठ जाए। उसके किसी कुकर्म से उसकी आस्तिकता को लाञ्छन लगे और आने वाली पीढ़ियों के सम्मुख एक ग़लत उपमा बन जावे। राष्ट्र भक्त कहीं भी स्वार्थ अहंकार के वशीभूत होकर कोई कार्य नहीं करता जिस से राष्ट्र बदनाम हो-या-राष्ट्र में किसी प्रकार की कमजोरी आवे।

२. भक्त बड़ा सावधान रहता कि उसे परमेश्वर के उपकार न भूलें, कहीं अभिमान सवार न हो जावे।

राष्ट्र भक्त भी यही विचारता है कि इस राष्ट्र की मिट्टी से यह शरीर बना है बढ़ा-पला है। जो शरीर राष्ट्रहित में अर्पण हो, बलिदान हो सके तो इससे बढ़िया इस नश्वर देह का उपयोग नहीं होगा। इस प्रकार के मरने को राष्ट्रभक्त अपना परम सौभाग्य मानता और कभी चूकता नहीं।

३. भक्त सावधान रहता है कि उसके स्वार्थ का दमन होता रहे, उसकी निजी आवश्यकताएं न्यूनतम बनी रहें ताकि परमेश्वर की प्रजा का शोषण न हों।

लाहौर की इन्कलाबी पार्टी के अध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर आज़ाद थे, वे अपने साथियों को प्रत्येक दिन दो आने भोजन के लिए देते थे परन्तु स्वयं अपने भोजन पर केवल एक आना व्यय करते, कभी कभी तो सूखी रोटी गुड़ के साथ चबा-चबा कर खा लेते, पानी पी जाते। यह है तप त्याग की पराकाष्ठा।

४. सर्वोत्तम सावधानी करते हैं भक्त, कि यही एक मानव जीवन ऋणों से उऋण होने के लिए प्राप्त हुआ है अतः यह सुनहरी अवसर कहीं व्यर्थ न जाए। जीवन राष्ट्र की संपत्ति है, सर्तक रहते हैं

कि राष्ट्रहित के अतिरिक्त अन्यत्र कहीं इसका प्रयोग न हो।

श्री सुभाषबाबू से एक मित्र ने पूछा बाबू विवाह क्यों नहीं करते हो ? थोड़ा विचार कर सुभाष बाबू ने उत्तर दिया कि राष्ट्र सेवा में इतना व्यस्त हूं कि विवाह के सम्बन्ध में विचारने का समय ही मेरे पास नहीं है।

५. भक्त सावधान रहता है कि विषयरूपी डाकुओं से भरे संसार में ज़रा सी ग़फलत हुई तो जीवन की तपस्या का धन लुट न जाए इत्यादि :–

'साधना की राह पे चलना है कठिन
रोकेंगे साधक तुझे लाखों विघ्न'

३. वाजी :–प्रभु का आश्रित बना, प्रभु से संयुक्त हुआ, शिशुवत् प्रभु की गोद में बैठा भक्त बड़ा बलवान् व निर्भीक होता है। महान् सर्वशक्तिमान् के आश्रित को भय कैसा ? वह सदैव निर्भीक, अदीन, अभय की स्थिति में रहता है।

उपमा–कुछ छोटे बालक एक पागल को चिढ़ा रहे थे। पागल ने पत्थर उठा लिया-बच्चे भागे अपने घरों में घुसे डर के मारे। एक बच्चा माँ की गोद में जा बैठा। पागल उसके पीछे घर के अन्दर आया। बच्चा उसे अंगूठा दिखाता है। यह हिम्मत आई जो मां का आश्रय पाया। यही स्थिति भक्त की होती है।

तभी तो राष्ट्र भक्त ने अंग्रेज़ी ज़ालिम सरकार के संमुख गाया––

"सर फिरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है ज़ोर कितना बाजुए कातिल में है'

४. धनाय :–यह परमेश्वर से धन मांगते हैं, उस धन का नाम है संतोषधन ज्ञानधन। रोटी कपड़ा मकान की मांग नहीं जरूरियात की चिन्ता नहीं –

'भरोसा कर तू ईश्वर पर–तुझे धोखा नहीं होगा
यह जीवन बीत जायेगा–तुझे रोना नहीं होगा'

प्रभु विश्वासी ज्ञानी संतोषी कभी अभाव पीड़ित नहीं होता यदि भाग्यवश अभाव आ भी जावें तो उसका मन पर कुछ प्रभाव नहीं पड़ता। यह ऐसा धन है जो संसार के धनियों के भाग्य में नहीं होता, धनी तो हर तरह से कमाते खाते फिर चिन्ताओं में घिरकर असंतुष्ट भी रहते हैं। भक्त हर हाल में मस्त तृप्त संतुष्ट सुखी रहता है।

भीषण जंगल में जहाँ दरिंदे चिंघाड़ते हों यह मजे से सोता है। कारण कि प्राणों की चिन्ता परमेश्वर सर्वशक्तिमान् को सौंप रखी होती है।

५. अश्वः न :–अश्व सदृश, आलस्य रहित सेवा कार्य में चुस्त और स्वामी भक्त होतें हैं। मालिक के इशारे ही पर मुड़ जाना, इनके जीवन की विशेषता होती है। कभी भी बलिदान होने के अवसर को गंवाते नहीं ये राष्ट्र भक्त वीर।

जलियांवाले बाग़ अमृतसर के जनसंहार का काण्ड हो चुका था। चान्दनी चौक दिल्ली में जलूस का नेतृत्व कर रहे स्वामी श्रद्धानन्द ने जब गोरी फौज की संगीनें तनी देखीं तो अपनी छाती आगे तान दी। यह हिम्मत केवल वीर भक्त में ही होती है।

॥ ओ३म् ॥

राष्ट्र यज्ञ–क्षत्रिय-अग्नि होता (१७)

ओं धृतव्रताः क्षत्रिया यज्ञनिष्कृतो बृहद्दिवा अध्वराणामभिश्रियः।
अग्निहोतार ऋतसापो अद्रुहः अपो असृजन्ननु वृत्रतूर्ये॥
ऋ० १०/६६/८

अन्वय — वृत्रतूर्ये अनु अपः असृजन् बृहत् दिवा ऋतसापः अध्वराणां अभिश्रियः अग्निहोतारः यज्ञनिष्कृतः अद्रुहः क्षत्रियाः।

बृत्रतूर्ये अनु अपः असृजन्—चारों ओर से घेरा डालकर आक्रमण करने वाले शत्रु को तद् अनुकूल क्षात्र शक्ति व उचित कर्मों से उसका विनाश करो। इस उग्र कार्य को करने के लिये निम्न प्रकार के ज्ञानयुक्त संगठित पुरुषार्थ आवश्यक होंगे।

१. **धृतव्रताः**—जनता व विशेष करके सैनिकों के विजय पाने के सुदृढ़ संकल्प हों। कितना भी बलिदान देना पड़े, कष्ट सहने पड़ें, विजय अवश्य प्राप्त करेंगे। (करो या मरो) Do or die, विषम परिस्थियों के बावजूद हिम्मत में कमी न हो, कहीं पांव फिसलें नहीं।

२. **बृहत् दिवा**—धृतव्रताः अवश्यमेव वे ही बन पावेंगे जो ब्रह्मचारी और महान् तेजस्वी प्रखर बुद्धिमान हों। मस्तिष्क उज्जवल दीर्घ दृष्टि वाला हो। शत्रु की शक्ति कितनी, साधन कितने, सप्लाई लाईन कहां और कहां से वह कमजोर है ? अपनी आक्रमण शक्ति क्या, उसका लाभदायक प्रयोग किस प्रकार हो ? इन मौलिक प्रश्नों का उत्तर अन्तरात्मा देती हो।

३. **ऋतसापः**—सत्य निष्ठ, ईश्वरीय नियमों का पालन करने वाले, ऋतु अनुकूल अपनी युद्ध कार्य प्रणाली को बनाने वाले, चरित्रवान् सुकर्मी योद्धा बनें।

४. **अध्वराणां अभिश्रियः**—सर्वहितकारी—स्वार्थरहित जो कर्म होते हैं वे ही अध्वर, वेदाग् या यज्ञ कोटि के कार्य होते हैं। राष्ट्र कल्याण के लिये जो भी उग्र से उग्र कार्य करते हैं, चूंकि उसमें न स्वार्थ की भावना है और न द्वेष की भावना है, वह कार्य भी एक राष्ट्र यज्ञ का भाग बनेगा।

५. **अग्नि होतारः**—जैसे होताऋत्विज यजमान के पास बैठकर उसको शिक्षा देता है, ताकि यज्ञ में कोई त्रुटि न होने पावे। फिर वही होता अग्निवत् हो, अग्नि कोटि का हो, अग्नि के दैवी गुणों को अपनें क्रियात्मिक जीवन में पूर्णतः पालन करता हो, वही गुण यजमान के अन्दर भर रहा हो, उसकी हर प्रकार से रक्षा कर रहा हो।

इतिहास में इसकी कई उपमाएं मिलती है। भगवान् कृष्ण चन्द्र जी अर्जुन महारथी के होता (सारथी रूप में) बने। अत्यन्त विकट परिस्थितियों में अपने यजमान को विजय दिलवा दी।

दूसरी उपमा महर्षि चाणक्य की है. किस तरह चन्द्रगुप्त को चक्रवर्ती सम्राट् बनाया। जब कि स्वयं कौपीन धारी कुटिया में निवास करते थे।

तीसरी उपमा समर्थ गुरुरामदास जी महाराज की है। राष्ट्र व संस्कृति के ऊपर महान् अत्याचार मुसलमान कर रहे थे। उस महान् पुरुष ने ऐसी अग्नि प्रज्वलित कर दी कि संसार को चकित कर दिया। स्वयं तलवार लेकर तो रणक्षेत्र में नहीं उतरे परन्तु उन्हीं के मस्तिष्क के उत्साह पूर्ण परामर्श व आदेश ही ऐसे फलीभूत हुए कि जालिमों की जड़ें हिला दीं। एक हिन्दूराष्ट्र की स्थापना करा दी। ये तीनों विद्वान् निस्वार्थ थे, अग्नि होतारः थे।

६. **यज्ञ निष्कृतः**—राष्ट्र यज्ञ के अन्दर सर्वस्व की आहुति दे देने वाले। यह तभी सम्भव होगा यदि सम्पत्ति का, परिवार का जीवन के सुखों का, बल्कि अपने प्राणों का सर्वथा मोह त्याग किया होगा। वस्तुतः ये ही वे सच्चे अर्थों में वाजश्रवा ऋषि होते हैं जो राष्ट्र यज्ञ में सर्वस्व की आहुति देकर तृप्त होते हैं। अपने

लिए केवल परमेश्वर के सहारे को छोड़कर और कुछ भी Reserve (सुरक्षित) नहीं किया होता। एक महान् विलक्षण यज्ञ होता है। असुरों का असुर वृतियों का नाश ही उनके जीवन का यज्ञ होता है। रण क्षेत्र उनका अग्नि कुण्ड,तीव्र लग्न राष्ट्र कल्याण की यज्ञ-अग्नि, राष्ट्रहित भावना–घी, पवित्र उदात्त विचार-हवन सामग्री जीवन/शरीर समिधा का रूप धारण करते हैं। यह महाबलिदानियों धृतव्रतों का यज्ञ-धर्म युद्ध है जिसमें कूदते हैं और विजय उनके चरण चूमती है।

६. अद्रुहः —ऐसे त्यागी वीर राष्ट्र को धोखा कभी नहीं देते। यहां कर्त्तव्य को न निभाना ही धोखा देना है, जिन्होंने अपने प्राणों तक के मोह को त्यागा। फिर वह किसी भय व प्रलोभन के सामने नहीं झुकते। वही अद्रुहः बनकर सच्चे सपूत मातृभूमि, मातृ संस्कृति के परम विश्वास योग्य होते हैं।

८. क्षत्रिया :—ऐसे राष्ट्र–रक्षक क्षत्री–जो शारीरिक बल, बुद्धिबल, साहस वल, अनासक्ति बल, आत्मसमर्पण बल से विभूषित होकर राष्ट्र, संस्कृति, प्रजा, पीड़ितों की रक्षा के लिए रण में लोहा लेते हैं। परमेश्वर उन्हें सत्य, यश, श्री प्रदान करते हैं और वेही इतिहास में अपना नाम अमर कर जाते हैं।

प्रभुदेव ! आज भारत व आर्य संस्कृति के बचाव के लिए ऐसे अग्निहोतारः भेजने की कृपा कीजिये।

—:—

ओ३म्

राष्ट्र यज्ञ – वेदानुयायी राष्ट्र वीरो ! (१८)

ओं प्रेता जयता नर इन्द्रो वः शर्म यच्छतु ।
उग्रा वः सन्तु कहवोऽनाधृष्या यथा सथ ।।
यजु १७/४६ सा १८५२ अ० ३/१९/७

अन्वय : नरः प्रत इत जयत यथा अन आ घृष्याः आसथ ।
वः बाहवः उग्राः सन्तु इन्द्रः वः शर्म यच्छतु ।।

१ कौन ? नरः :–ऐ नरो, वेदानुयायी वीरो, नारायण में रमण करने वाले आस्तिक साधको ! (नर वह जो नारकीय प्रवत्तियों को रौंद डालें) जैसे :—

क) वेदानुयायी–ईश्वरीय आज्ञाओं को जानने वाले, मानने वाले और उन पर आचरण करने वाले, वेद, परमेश्वर प्रदत ज्ञान है, उसमें पूर्ण श्रद्धा रखने वाले ।

ख) जिन्होंने वीर्य की रक्षा की हो, ब्रह्मचर्य व्रत पालन करने वाले, अपनें संकल्प व इरादों के पक्के । हर प्रकार के लोभ भय, मोह पर विजय पा लिया हो जिन्होंने । ऐसे वीर जो संपत्ति नहीं अपने प्राणों के मोह का भी त्याग करके अपने राष्ट्र के सम्मान व हित को महत्व देते हों, मृत्यु भी जिनके लिए कुछ भय दायक नहीं होती ।

ग) नारायण में रमण–परमेश्वर की सर्वशक्तिमत्ता, दयालुता सुहृदयता पर पूर्ण विश्वास और चिन्ता मुक्त होकर कर्तव्य निष्ठा में जुटें हों । प्राणों की रक्षा का भार प्रभु पर छोड़ दिया हो ।

२. वेदादेश :—

क) अच्छा नरो! प्र इत : प्र-गमन करो-आक्रमण करो, कर्तव्य निभाते आगे बढ़ो, बुराइयों पर प्रायश्चित्तों की कड़ी चोट मारो, अन्यायी अत्याचारी, राष्ट्रद्रोही पर कभी रहम अथवा मिलाप न करते हुए उन्हें समूलत: नष्ट कर दो। राष्ट्र के शत्रु पर पृथ्वीराज चौहान ने रहम किया। स्वयं मारा गया। देश गुलाम बना। महा०गांधी ने धर्म विद्रोहियों के साथ मिलाप करना चाहा, तो देश का बट-वारा करा बैठे। चाहिए था स्वामी श्रद्धानन्द जी की विचारधारा को अपनाते, हिन्दुओं को शक्तिशाली बनाते, तो राष्ट्र में शान्ति भी रहती, लाखों का संहार न होता, अरबों की संपत्ति न जलती कांग्रेसियों के गलत निर्णय के कारण फिर भी नासूर बनी ही रही अशान्ति की जड़ नहीं गई, इतनी भयंकर हानि उठाने पर भी स्थिति में सुधार नहीं। दुर्भाग्य यह कि अब भी देश के कर्णधारों में कोई परिवर्तन नहीं आया वही पुरानी Appeasent policy (तुष्टिकरण-नीति) चल रही है, हिन्दुओं के हितों का खून किया जा रहा है। वोट प्राप्ति, कुर्सी की सुरक्षा के लिए अल्पसंख्यकों की रक्षा की घोषणाएं की जा रहीं हैं और बहुसंख्यक हिन्दुओं का अपमान, उपेक्षा करके स्वयं को धर्म निरपेक्ष शासक होने की प्रसिद्धि पाने का प्रयास किया जा रहा है। जानबूझ कर बंगला देश से मुसलमानों को आसाम में आने दिया और हिन्दुओं पर अत्याचार कराए। ताकि उनके वोटों से कांग्रेसियों की कुर्सी सुर-क्षित रहे। वह आज भी समस्या है।

स्वर्गीय वीर सावरकर ने तो १९४२ में चेतावनी दी थी कि ओ भारत छोड़ो का नारा लगाने वालो ! कहीं भारत छोड़ो का कार्य न कर बैठना, और वही हुआ साम्प्रदायिकता का कुछ

रोग अंग्रेज छोड़ गये उसे कांग्रेसी हाकिमों ने अपने स्वार्थ हेतु और अधिक पनपाया।

भारत को हिन्दु राष्ट्र बनाकर इस रोग को निर्मूल करेंगे। वीरो ! ऐसी प्रतिज्ञा करो।

ख) **जयत :** विजय प्राप्त करो। विजय वाणी का विषय नहीं, केवल नारेबाजी अथवा लम्बे भाषणों से नहीं मिलती, कुतर्कवाद वांछनीय नहीं है। विजय प्राप्ति के लिए अदम्य साहस पुरुषार्थ, गमन, बलिदान अनिवार्य साधन हैं। वीरों को यह सुनहरी अवसर प्रभु देता है।

विजय प्राप्ति के लिए संगठन और राष्ट्र के प्रति समर्पित होने की भावना, वीरों वीरांगनाओं को क्षात्र शक्ति का अभ्यास अवश्य कराना अनिवार्य है। समाचार पत्रों, सिनेमा, रेडियो, टी०वी०, वीडियो पर देश प्रेम का, देश पर बलिदान होने का रोचक प्रचार हो। स्कूलों कालिजों की पाठ्य-पुस्तकों द्वारा युवक युवतियों में राष्ट्र प्रेम, आत्म गौरव, संस्कृति का सम्मान उभारा जावे ताकि राष्ट्र में फिर से हकीकतराय, रामप्रसाद बिस्मिल, भगतसिंह, पं० लेखराम पैदा हों, शिवाजी सुभाष सरीखे साहसी आवें। राष्ट्र में कभी भी तपस्वी वीरों का अभाव न हो, राष्ट्र कमज़ोर न पड़े।

ग) **यथा अन आ धृष्या: असथ :** वीरो ! शत्रु दल बड़ा दीखेगा, कठिनाइयां कठोर अवश्य होंगी इन विषम परिस्थितियों में वीरों के आधार होते हैं आत्मबल, चरित्रबल, विजय में अटूट विश्वास, अपराजित संकल्प, अदम्य साहस, निरन्तर पुरुषार्थ, गंभीर चिन्तन और परमेश्वर का सहारा। इन्हीं के आधार पर मस्ताने अपने पथ पर चलते जा रहे हैं। ऐसे कर्म निष्ठ वीरों को

विजय निश्चित मिलती है। आर्य वीरो ! इस सिद्धान्त पर विश्वास करो।

३ (साधना) वः बाहवः उग्राः सन्तुः –

वीरो ! आपकी दोनों बाहें मजबूत, चुस्त, तीव्र हों। जो अपने बचाव के साथ साथ शत्रुओं की जड़ों तक चोट भी मारें। युद्ध विद्या के द्वारा शत्रु के पैंतरे, चाल, आक्रमण के साधन, उन के ठिकाने सप्लाई स्रोत (पूर्ति भण्डार) व सामर्थ्य को पूरी तरह जानें। इस जानकारी के लिए गुप्तचर विभागमें बड़े प्रवीण, चतुर मौका शनास, हाजिर जवाब, सच्चे देशभक्त हों अपने ही देश के नागरिक हों।

राष्ट्र वीरो ! शस्त्रों के प्रयोग का अभ्यास, लक्ष्य को बींधनें की योग्यता प्राप्त करो।

बाहुओं में आलस्य न हो, तीव्रता हो कि अवसर खोने वाले न हों, अवसर कभी भी हाथ से निकल न जावे। आलस्य का दोष उनमें होता है जो अपने आपको शरीर मानते हैं जिन के अन्दर प्राणों इत्यादि का मोह होता है ऐसे लोग वीर नहीं होते, वे राष्ट्र के अर्पित कभी नहीं हो पाते। वीरका तो विश्वास होता होता है कि वह राष्ट्र-व-संस्कृति पर बलिदान होकर अपना नाम अमर कर जावे, जितने शहीद,जिन्होंने अपने प्राण देश-व संस्कृति के लिए अर्पित किए, आज उनका नाम लेते ही कितना उल्लास होता है, श्रद्धा उपजती है, उनकी जीवनी को पढ़कर उनकी हिम्मत व तप को जानकर मुर्दादिलों में भी नवजीवन का संचार होता है।

मेरी हवा में रहेगी ख्यालों की बिजली
यह मुश्ते खाक है फानी-रहे रहे या न रहे। भगतसिंह

वीरो ! अवसर तो जीवन में परमेश्वर की दया से अवश्य मिलते हैं परन्तु उनका उपयोग भाग्यवान, सावधान शूरवीर ही कर पाते हैं, कारण कि अवसर आने से पूर्व पूर्णतः तैयार रहते हैं सफलता इन्हीं का आलिंगन करती है। सहर्ष कठोर तप व अभ्यास कीजिए यही संकेत इस मन्त्र भाग के साधना अंगमें दिया गया है

४. **इन्द्रः वः शर्म यच्छतु :–**

इन्द्र–इन्द्रियों को स्वामी, विश्व शासक, शत्रुओं को विदीर्ण करने वाला, शक्तिशाली हमें स्थिरता व शान्ति प्रदान करेगा। वेद में उसे युवासखा कहा है। निश्चित जानो वह परमेश्वर कर्तव्यनिष्ठ, उत्साही, आत्म बलिदानी, आस्तिक, और समर्पित वीरों का परम हितैषी, मित्र रक्षक विजय प्रदाता बनता है। यह आश्वासन हमें महाभारत का इतिहास देता है।

निष्कर्ष : नरत्व, अपराजित वृत्ति, आक्रमण प्रवृत्ति उग्रबाहु स्थिरता शान्ति प्राप्ति के साधन हैं। दृढ़ विश्वास, ज्ञान युक्त निरन्तर पुरुषार्थ, आत्मबल, परमेश्वर का आधार, प्रभु सब वेदानुयायी आर्य नर नारियों को प्रदान करें।

॥ ओ३म् ॥

राष्ट्र यज्ञ – संयमो राजपुरुष (१९)

ओं यत् संयमो न वियमो – न वियमो यन्न संयमः।
इन्द्रजाः सोमजा आथर्वणमसि व्याघ्रजम्भनम्॥ अ ४. ३. ७.

अन्वय :—यत् संयमः न वि यमः यत् वियमः न संयमः
इन्द्रजाः सोमजाः आथर्वणम् व्याघ्र जम्भनम् असि॥

शब्दार्थ—क) जहां संयम है वहां कष्ट पीड़ा अव्यवस्था और पराजय नहीं होती।

ख) जहां कष्ट पीड़ा अव्यवस्था और पराजय है वहां संयम नहीं होता।

साधना चिह्न–ग) संयमी वे होते हैं जो सूर्य के, चन्द्रमा के गुणों का अनुसरण करते हैं।

घ) १. वे सिद्धान्तों के पक्के होते हैं। सत्य सनातन वेद मार्ग को किसी कीमत पर नहीं त्यागते।

२. वे व्याघ्र के जबड़ों को तोड़ते हैं। शत्रु व्यूहों को तोड़ते हैं। विपदाओं संकटों को अपनें आत्मबल, व पुरुषार्थ से पराजित करते हैं।

१. संयम–सुन्दर व्यवहार=सं यम

यम हैं=अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह।

यम के आगे सं लगा अर्थात् यम सुन्दर हों। सुन्दर तभी होंगे जो इनका बनावटी व्यवहार न हो बल्कि यह साधक का स्वभाव बन गए हों। मनसा वाचा कर्मणा इनका स्वभावतः पालन होता होगा।

ये पांचों सुन्दर होंगे तो जीवन सुखी शान्त सम्मान मुक्त होगा।

१–अहिंसा (क) निर्बल धार्मिक व्यक्ति के बचाव हेतु किसी राक्षस को प्राणदण्ड देना अहिंसा है। राष्ट्र व संस्कृति के शत्रु को मूलतः नष्ट करना अहिंसा है कारण कि हिंसा के कारण को खतम करके अहिंसा की स्थापना का प्रयास है, व्यक्तिगत शत्रुता नहीं।

उपमा–श्रीराम द्वारा ताड़का राक्षसी का वध अहिंसा कोटि में है।

(ख) किसी ज़ालिम-आततायी की पुष्टि करना–या–

उसका विरोध न करना हिंसा है, कारण कि राष्ट्र में अव्यवस्था फैलेगी।

(ग) धर्म स्थानों को गोला बारूद, शराब, चरस, गांजा हिरोइन व हथियारों के भण्डार बनाना, कातिलों को पनाह देना, गुरुओं की आत्मा की भयंकर हिंसा है। यह सब कुछ उनकी मान्यताओं के विरुद्ध है, अतः हिंसा है। इन्हें मूलतः नष्ट करें।

२. **सत्य** :— मनसा वाचा कर्मणा समानता हो। इससे बढ़िया व्याख्या सम्भव नहीं है। सत्य का समझना कठिन नहीं परन्तु सत्य बोलना व पालना बड़ा कठिन है। इसके लिए आत्मबल तप, त्याग चाहिए। फिर सत्य शोभा युक्त होगा यदि सत्य के साथ विनम्रता व मधुरता जुड़ी हुई होगी।

३. **अस्तेय**—चोरी करना विशेषतः यदि ग़रीबी में यह सद्गुण हो तो अत्यन्त सराहनीय होगा।

चोरी केवल अन्न,धन, वस्त्र इत्यादि की नहीं होती,चोरी रूप की और विचारों की भी होती है। रूप की चोरी कामी व्यक्ति करते हैं तो विचारों की चोरी कृतघ्न विद्वान् करते हैं, जो दूसरेके विचारों को अपना बताकर कहते हैं महर्षि पतंजलि कहते हैं कि जो जिस तरह की चोरी करेगा उसे परमेश्वर उसी रूप से कंगाल बनावेगा।

४. **ब्रह्मचर्य**—वीर्य रक्षण एक महान् तप है। इसमें सफलता प्राप्त करने के लिए आहार, विचारों का संयम करना पड़ता है। इन दोनों रूपों की अवहेलना करने वाले वीर्यवान् नहीं बन सकते। चरित्र के धनी नहीं होंगे।

वीर्यहीन स्वयं निर्बल, रोगी, संकल्प के कच्चे, मन्दमति होते हैं। वे समाज राष्ट्र के शत्रु तो होते ही हैं। स्वयं अपनी मातृ-

भूमि, मातृसंस्कृति मातृशक्ति की रक्षा में असमर्थ होने के कारण अपमान जनक जीवन बिताते हैं।

वीर्यहीन भौतिक संघर्षों में भी साहसी नहीं होता। आध्यात्मिक युद्धों में तो पदार्पण कभी नहीं करता वीर (वीर्यवान्) जीवन में एक बार मरते हैं। परन्तु वीर्यहीन कायर प्रतिदिन भय अपयश रूपी मृत्यु का शिकार होते रहते हैं।

४. **अपरिग्रह**—पराये हक पर लालच भरी निगाह न रखना, पराये हक को हथियाना। यह संयम का अन्तिम चरण है। इसमें सफल वही होंगे। जो पवित्रता के पुजारी होंगे। जो पराये धन को लोष्ठवत् मानते होंगे। अपने भाग्य व भोग जो पिता परमेश्वर द्वारा निर्धारित किया गया है। उस पर संतोष करते हे। किसी भाग्यवान् से ईर्ष्या नहीं करते, भाग्य विधाता कर्मफलदाता को गिला नहीं देते। हाँ कामना पूर्ति के लिए प्रभु सहारा लेकर पुरुषार्थ करते हैं। फिर भी यदि इच्छा पूरी न हो तो भी निरुत्साहित व नास्तिक नहीं बनते।

२—मंत्र में साधना बताई कि सूर्य चन्द्र के गुणों का अनुसरण करें। इनके दैवी गुणों को विचारें।

क—(१) सूर्य जब भी आता है अन्धकार को दूर भगाता है। अन्धकार पाप है। साधकों का जीवन पाप रहित होने की उपमा बना हो।

(२) सूर्य में समय की पाबन्दी है। तपस्वी साधक अपने श्वासों की कद्र करते हैं तभी इस अमूल्य निधि को गंवाते नहीं। लक्ष्य प्राप्ति हेतु कठोर नियन्त्रण करते हैं, आलस्य रहित होते हैं।

(३) सूर्य समुद्र के अनुपयोगी जल को लेकर अमृत तुल्य बनाकर संसार को लौटाता है। साधक यदि कहीं से कुछ लेता है

तो उसका कई गुना बनाकर लौटाता है। साधतोगुण ग्रहण, अवगुण त्याग करने/कराने में ही जुटे रहते हैं।

४. सूर्य बिना हमारी मांग के प्रकाश देता है, हमारी फसलों को पकाता है कितने ही जीवनघातक कीटाणुओं को खतम करता है। ऐसे राष्ट्र सेवक किसी के कहने पर परोपकार करें ऐसा नहीं वे तो स्वयं तलाश करते हैं, स्थान व अवसर, जहां वे सेवा कर पावें।

५. सूर्य स्वयं अपने स्थान पर घूमता है वहाँ सौर मण्डल के सब लोकों को अपने गिर्द घुमाता, नियंत्रण में रखता है।

ख) १. चन्द्रमा प्रकाश देता है, आह्लादक प्रकाश देता है।

२. गर्मी हो, सर्दी हो चन्द्रमा के प्रकाश में सदैव शीतलता मिलती है।

३. शिक्षा देता है कि जब अपने गुरु सूर्य के अभिमुख रहे तो प्रतिदिन कलायें बढ़ती हैं यदि गुरु सूर्य के विमुख हो तो कलायें घटती हैं। अमावस्या को पूर्ण अन्धकारमयता को प्राप्त होता है।

४. चन्द्रमा सब से खूबसूरत तभी लगता है जब काली घटा से बाहर निकलता है। साधक का जीवन भी खूबसूरत दीखता है जो सिद्धान्त पर टिका हुआ कठिनाई में से बाहर आता है।

५. चन्द्रमा हमारी वनस्पतियों, फलों, औषधियों में रस भरता है।

३. इन सफल जीवन साधकों के अकाट्य चिन्ह भी प्रत्यक्ष होते हैं।

१. सिद्धान्तों पर अटल अडिग बने रहते हैं।

'रघुकुल रीति सदा चली आई-प्राण जांय पर वचन न जाई'

यह हठ नहीं, परन्तु सत्य सिद्धान्तों पर ध्रुव बने रहते हैं।

२. व्याघ्र के जबड़ें से भावना है भयंकर विरोध, मुसीबतें, मृत्यु का भय इन सब विपत्तियों से कतराते नहीं, बल्कि जूझते हैं, ललकारते हैं, ज़ाहिरा साधनों की कमी हो तो उनका विवेक, साहस, प्रभुविश्वास पर आधारित प्रयत्न ढीला नहीं होता। निरन्तर यत्नशील रहने वाले अवश्यमेव जीतते हैं। यही इन भाग्यवान् वीरों का व्याघ्र के जबड़े को तोड़ने की भावना है।

४. कहां से पावें संयम की शिक्षा ?

जब मनुष्य और मानवता के निर्माण के कार्य का उत्तरदायित्व परमेश्वर ने नारी वर्ग को सौंपा तो संयम का पाठ भी नारी-मां-बहिन-पुत्री ही पढ़ती हैं, फिर आगे पढ़ाती हैं। वस्तुतः मानव के इतिहास में संयम की साक्षात् मूर्ति आर्य नारी ही है। नारी, आर्य नारी ही उमा, सीता, सावित्री, अनुसूया, मन्दालसा, तपस्विनियां ही अपने विवेक व चरित्र बल से अरुन्धती तारे बनकर आकाश में चमकी हैं। पतिव्रत धर्म का पाठ तो आर्यमहिलाओं ने संसार को देवियों के सम्मुख प्रस्तुत किया राष्ट्र सेवा हेतु पन्न दाई से अधिक उपयोगी उपमा कहां है ?

ओ३म्

राष्ट्र यज्ञ — राष्ट्र सेवक के गुण (२०)

ओं धानाः करम्भः सक्तवः परीवापः पयो दधि।
सोमस्य रूपं हविषऽआमिक्षा वाजिनं मधु॥

यजु० १९/२१

अन्वय—हविषः परिवापः धानाः सक्तवः पयो दधि करम्भः आमिक्षा सोमस्य रूपं वाजिनं मधु॥

हविषः —यज्ञ में आहुति देने योग्य द्रव्य-हवि कोटि में वह सामग्री मानी जावेगी—

१. जो निर्दोष हो, अथवा अग्नि में पड़ने पर किसी जीव के लिए हानि कारक सिद्ध न हो। कीड़ा इत्यादि न लगा हो, दुर्गन्ध न आती हो सड़ांद न पड़ गई हो।

२. सत्कमाई से लाई गई हों। पाप द्वारा उपार्जित द्रव्य में हिंसा के परमाणु अवश्य होंगे, रिश्वत इत्यादि के द्रव्य में अन्याय की भावना विद्यमान होगी, जो इस प्रकार की वृत्तियों की वृद्धि परिपक्वता करेगी। इसलिए राष्ट्र यज्ञ में उपयोगी न होगी।

३. पूजा की भावना से अर्पित की जा रही हो। सम्मान व कर्त्तव्य निष्ठा, आर्द्रता से भेंट की जा रही हो।

क) राष्ट्र सेवा करने वाले का जीवन राष्ट्र यज्ञ की हवि तभी बनेगा यदि निर्दोष हो, निर्व्यसनी, ब्रह्मचारी, तपस्वी हो।

ख) उसका व्यवहार न्याय पूर्ण किसी वर्ग का शोषण न होताहो आहार शुद्ध, सात्विक,निरामिश शाकाहारी हो। सात्विक आय, सात्विक आहार के फल स्वरूप उनकी वृद्धि सूक्ष्म सात्विक पाप मुक्त होगी।

ग) राष्ट्र उत्थान, राष्ट्र सम्मान की तड़प हो। निज जीवन से राष्ट्र सम्मान अधिक मूल्यवान प्रतीत हो। उनका निजी स्वार्थ राष्ट्र सेवा में बाधा डालनें वाला बिल्कुल न हो।

२. **परीवापः** —बीजने योग्य बीज की तरह हो। बीजने योग्य वही बीज होता है जिसे कीड़ा न लगा हो और जो टूटा हुआ न हो।

राष्ट्र सेवक जितेन्द्रिय हो। वीर्यवान् हो, वीर्यवान् में ही, आत्म बल होता है, वही मोह के बन्धन से ऊपर उठा होता है। तभी पूर्ण समर्पित हो पाता है। उनके मुख पर ओज, दृष्टि में स्नेह, वाणी में प्रभाव और जीवन नें आकर्षण की प्रबल विद्युत्

होती है। जिसका प्रभाव साधारण व्यक्तियों पर पड़ता है वे ही अनुयायी पैदा कर सकते हैं। वे ही कठिनाइयों को सुगमता से उल्लांघ जाते हैं। परिस्थितियां उन के मार्ग में रुकावट नहीं डाल पातीं। बल्कि विषम स्थिति उनके ईश्वरविश्वास और पुरुषार्थ में वृद्धि करने वाली होती है। जैसे काली घटाओं से निकला चन्द्रमा अत्यन्त खूबसूरत लगता है ऐसे ही इन वीरों का जीवन कठिनाइयों को प्रभु प्रीतम के सहारे चरित्र बल से पार करने पर बड़ा आकर्षक लगता है।

३. धानाः –धानाः भुने चने को कहते हैं। भुना चना हमारी भूख तो मिटाता है परन्तु नया अंकुर नहीं पैदा कर सकता।

इन राष्ट्र वीरों के जीवन की कठोर तपस्या अनथक परिश्रम राष्ट्र की कठिनाइयां दूर करता है परन्तु यह अपना कोई नया पंथ या मज़हब नहीं बनाते।

राष्ट्रसेवक का जीवन समाज के अभावों की पूर्ति में जुटता है, परन्तु वह कर्म बन्धन में नहीं पड़ता क्योंकि कर्तव्य अभिमान को पूर्णतया त्याग चुका होता है। उसे अपनी सेवा के उपलक्ष्यमें कुछ कामना नहीं होती, न उसे धन, सम्मान, कुर्सी की लालसा होती है, न वह प्रतिदान में किसी से सेवा का तलबगार बनता है। वह तो परमेश्वर का, राष्ट्र का कृतज्ञ होता है कि सेवा का अवसर प्रदान करके जीवन को सार्थक बनाने का अवसर प्रदान किया। यहां तो सेवक सेव्य का आभार मानता है बल्कि अपने उपकार को वह भूल जाता है तभी वह स्वयं अहंकार से मुक्त हो पाता है।

४. सक्तवः –सत्तु बनें-आर्य परिवारों में सत्तु बनाने की विधि है –

१. जौ को साफ करना कंकड़ इत्यादि निकाल दें	१. स्थूल दोष दूर हों
२. जौ को धोना ताकि मिट्टी दूर हो जावे	२. सूक्ष्म दोष दूर हों
३. जौ को सुखाना	३. आवश्यकताएं नितान्त कम हों
४. पीसना	४. स्वार्थ समाप्त करना
५. छानना	५. आत्म निरीक्षण करना
६. मीठा मिलाना	६. सब में अपनी सरीखी आत्मा की प्रतीति हो स्नेह प्यार छलकता हो

इस प्रकार के जीवन वाले सच्चे साधक राष्ट्र की सात्विक तृप्ति करते हैं और स्वयं हर हाल में मस्त तृप्त होते हैं किसी से गिला शिकवा नहीं करते। इसी प्रकार के साधन से द्वेष की निवृत्ति परम शान्ति की प्राप्ति संभव होगी।

५. **पयोदधि**--दूध, दही बड़े सात्विक आहार हैं। जहां स्वयं बेदाग़ हैं वहां स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हितकर हैं।

राष्ट्र सेवक का जीवन राष्ट्र के लिए पुष्टिकारक तभी बनेगा जो बेदाग़ हो, निर्मल चरित्र हो। यहां पहले जीवन में दाग़ क्या है उन्हें समझने की आवश्यकता प्रतीत होती है। वेद्य महोदय हमें पथ्य परहेज दोनों बातें समझाता है, मन्त्र भी बतला रहा है।

क) गीता के सोलहवें अध्याय में जो आसुरी संपदा बताई गई है, वह मानवी जीवन में दाग़ होते हैं। बुराइयों की लम्बी सूची होती है। वेद में हर स्थान पर दुरितों को बहुवचन में दिया गया है।

ख) श्री मनु जी महाराज ने धर्म के दस लक्षण बताए उनके विपरीत आचरण करना जीवन में दाग़ माने जाते हैं।

ग) महर्षि पतंजलि जी ने पांच यम, पांच नियम बतलाए ये सब मानव मात्र के लिए हैं चाहे किसी देश-मत मज़हब का क्यों न हो—इनका आचरण न करना जीवन को दाग़ लगाना है।

नोट:—बेदाग़ दूध, दही दोनों हैं। मन्त्र में दही को को गिनाना बहुत उपयुक्त है कि दही दाग़ रहित होते हुए भी छलकती नहीं—निर्दोष जीवन फिर अभिमान रहित हो, सेवा करे और शांत रहे।

६. **सोमस्य रूपं**—शान्त स्वरूप, शान्त स्वभाव, शान्ति प्रद वचन बोलने वाला, क्रिया में भी सौम्यता रहे। विशेषता उसी की है जो कठिनाइयों में होश न खो बैठे, सफलता में संयम को न गंवा बैठे। मंत्र में उपमा दी गई जल की—चन्द्रमा की।

१) जलस्वभाव से शीतल—उबलते पानी को अग्नि से अलग करें फिर ठण्डा हो जाता है। राष्ट्र सेवक ने जल के गुण, कर्म, स्वभाव को अपनाने की साधना की होती है।

क) ठण्डा दिमाग है, तभी अपनी समस्याओं का समाधान सुगमता से, अपने अन्दर से पा लेता है और दूसरों में भी सौम्यता भरता है।

ख) स्वयं नरम जिसमें प्रविष्ट हो उसे भी नरम बना दे। अकड़न से संघर्ष और विनम्रता से मिलाप शान्ति मिलती है।

ग) जल के रास्ते में गड्ढा आए तो पहले उसे भरता है फिर आगे बढ़ता है। राष्ट्र सेवक भी यदि अपने जीवन/अपनी समाज के जीवन में कोई त्रुटि अवगुण प्रतीत हो तो पहले उसे निवृत्त करता है फिर आगे कदम बढ़ाता है।

घ) जल पर कोई अंगारे फेंके तो वह लौटाता नहीं-बुझा कर अपने नीचे रखलेता है। राष्ट्र सेवक का कोई अपमान करे। अपशब्द कहे, वह उनको दोहराता नहीं बल्कि अशान्त क्रोधी पर तरस खा कर भुलाता है और स्वयं अपनी राह यदि निर्दोष है तो चलता जाता है। जीवन उपकार हेतु होता है अपकार के लिए नहीं होता।

ङ) जल पर कोई सोटी मारे तो लकीर नहीं पड़ती। राष्ट्र सेवक अपकार का जवाब उपकार से देता है; यही इसकी विजय पाने का रहस्य है। इसी से वह शान्त सौम्य मूर्ति बनता है।

च) जल का कर्म है, संसार के प्राणियों की तृष्णा बुझाना, तृप्त करना राष्ट्र सेवक निःस्वार्थ सेवा से सब को तृप्त संतुष्ट करने का अनथक प्रयास करता रहता है। अंतिम श्वास तक करता है।

छ) चन्द्रमा आह्लादक प्रकाश देता है, वनस्पतियों में रस भरता है सबसे खूबसूरत लगता है जब काली घटाओं से निकलता है, सूर्य की कितनी तपश संसार में पड़ती हो। चन्द्रमा की ठण्डक में अन्तर नहीं आता। ये ही चारों गुण-मधुर ज्ञान देना, उत्साह भरना, साहसी बनाना तथा मस्तिष्क की ठण्डक गंभीरता किसी भी परिस्थिति में अन्तर न आना। राष्ट्र सेवक के विशेष गुण हैं। इन्ही सद्गुणों के कारण यह भाग्यवान राष्ट्र की अपूर्व सेवा करने में समर्थ हो पाता है।

७. **वाजिनं मधु** :–मधुरता से शक्ति भरना। रक्त शोधन करना। राष्ट्र सेवक की वाणी मीठी पर उत्साह वर्धक रहती है वह तो रुके कदमों में गति उपजाता है। निराशाजनक लोगों को

आशावान् बनाता है, मुर्दा दिलों में नई जिन्दगी का संचार करता है।

रक्त शोधन के रूप में राष्ट्र व समाज की कुरीतियों को दूर करना एक महान् व कठिन कार्यहै जो राष्ट्र सेवक अपने जीवन की बाज़ी लगा कर करता है। वही सफल सुधारक परमेश्वर की प्रजा की पूजा करके प्रभु का सच्चा प्यार पाता है, पग पग पर प्रेरणाएं मिलती हैं।

निष्कर्ष :—राष्ट्र सेवक की साधना होती है, हवि बन कर बलिदान होना, उसकी तैयारी में जितेन्द्रता, वीर्यवान् ब्रह्मचारी, अहंकार रहित होकर सेवा करना। जीवन में हर तरह से बेदाग. सौभ्य गंभीर रहना।

कर्म है इसका प्यार सम्मान से राष्ट्र को दोषमुक्त व शक्तिशाली बनाना, राष्ट्र सेवक राष्ट्रमहल की नींव का पत्थर बनता है, जो प्रायः नजर नहीं आता परन्तु भार सारा उठाता है।

ओ३म्

राष्ट्र यज्ञ—सु राज्य (२१)

ओं पिशाचैः सं शक्नोमि न स्तेनैर्न वनर्गुभिः।
पिशाचास्तस्मान्नश्यन्ति यमहं ग्राममाविशे ॥ अ० ४-३६-७

अन्वय :— न पिशाचैः न स्तेनैः न वनर्गुभिः सं शक्नोमि
अहं यं ग्रामं आविशे तस्मात् पिशाचाः नश्यन्ति ॥

आर्य संस्कृति का सिद्धान्त है'दुरितानि परासुव भद्रं आसुव' पहले बुराइयों को दूर कीजिए। फिर भद्र आपके जीवन में आवेगा।

बन्धुओ ! साँप को दूध पिलाओ तो भी डसेगा, बिच्छू को रक्षा करो तो भी काटेगा। दो विकल्प हैं। अ) इन्हें मार दिया

जाये। ब) सांप के दांत तोड़ दिए जावें और बिच्छू का डंक काट दिया जावे। फिर इनसे भय मुक्त हो जावेंगे। परन्तु सज्जनो ! मत भूलो इनकी सन्तान के दांत व डंक अवश्य होंगे और फिर वे कष्ट देंगे अतः सांप बिच्छू को नष्ट करना राष्ट्र हित में हैं। वे कौन हैं मंत्र में गिनाए :

क) पिशाच=नर मांस भक्षी, जन पीडक, कुकर्मी, दुराचारी

ख) स्तेन—चोर, धन, नारी, भूमि अपहरण कर्ता

ग) वनर्गु =निरपराधों का वध करने वाले।

इन तीनों से भद्रता की संभावना नहीं हो सकती। इन पर दया करना अपराध होगा। राजा को चाहिए कि इनको exampalary punishment शिक्षाप्रद दंड (इबरतनाक सज़ा) देवे, ताकि वे हमारे देश को छोड़ जावें या बुराइयों को त्याग राष्ट्र द्रोही न बनें। प्रजा के नर नारियों को इतना सक्षम बना दें कि इन्हें मुंह तोड़ उत्तर दे सकें और राष्ट्र में इन्हें कहीं संरक्षण न मिले।

ओं मन्द्रा कृणुध्वं धिय आ तनुध्वं नावमरित्रपरणीं कृणुध्वम्।
इषकृणुध्वमायुधारं कृणुध्वं प्राञ्चं यज्ञं प्रणयता सखायः ॥

ऋ० १०/१०१/२

सखायः प्राञ्चं यज्ञं प्र नयत, धियः आ तनुध्वं, मन्द्रा कृणुध्वं अरित्र परणीम् नावं कृणुध्वं, इष कृणुध्वं, आ युधा अरम् कृणुध्वम्

१. **सखायः प्राञ्चं यज्ञं प्र नयत** :—राष्ट्र को सुखी समृद्ध करने के इच्छुक मित्रो ! सबसे पहले राष्ट्र में यज्ञ अथवा बलिदान होने की व चरित्रवान् National character वाले तपस्वी होने की भावना को बनाओ। स्व सुधार के बिना राष्ट्र सुधार असंभव होगा, आत्मोन्नति के बिना सर्वोन्नति संभव नहीं होगी। सबसे पहली तैयारी आत्म विश्वास, चरित्र बल साहस की है।

२. धियः आ तनुध्वं :–राष्ट्र में योजना बनाने व योजना चलाने वाले बुद्धिमानों का ताना बाना बिछा दो। हर Pivot point मार्मिक स्थान पर उनकी नियुक्ति है हर कार्य योजना बद्ध करो। समस्याएं तो आवेंगी परन्तु बुद्धिमान् उनका समाधान अवश्य निकाल लेंगे और राष्ट्र को अन्दर बाहर से सुरक्षित रख पावेंगे Plan you work and work you plan।

३. मन्द्रा कृणुध्वं :–राष्ट्र परिशोधन, विकास, उत्थान का हर कार्य कठिन अवश्य होता है, उसे सुगम बनाने के लिए कर्मचारियों, राष्ट्र के नागरिकों में उत्साह भरो। अच्छा कार्य करने वाले को प्रोत्साहित करो, सम्मान दो। Appreciation wins Co-operation राष्ट्र में काम करने का उत्साह बढ़ेगा कर्मचारियों की रुकावटों–कष्टों को दूर करो, अच्छे साधन जुटावो, अन्ततः कार्यकर्ताओं के काम का अकस्मात् निरीक्षण करो, Surprise inspection ताकि उच्छृंखलता न उपजे, काम का standard निम्न न हो।

४. इष् कृणुध्वं :–अन्न के प्रचुर भण्डार रिज़र्व करो। खाली पेट योद्धा कैसे लड़ेंगे ? खाली पेट यान कैसे चलावेंगे ? राजा का कर्तव्य है जिम्मेवारी है कि देखे राष्ट्र में कोई भूखा न रहे। राष्ट्र में किसी को अन्न अलभ्य न हो। साथ ही राष्ट्र के सदस्य कर्तव्यनिष्ठ मेहनती हों कार्यकाल में समय न गंवाते हों समय की चोरी न करते हों। कृषिविज्ञानवेत्ता आधुनिक तरीकों से प्रचुर मात्रा में खाद्य पदार्थ उत्पन्न करें। बढ़िया बीज किसानों को सस्ते दामों पर मिलें। राष्ट्र में अकाल, भुखमरी, महामारी, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, बाढ़ों का आना, भूकम्प, टिड्डियों का होना ये सब राजा के पापी होने का प्रमाण है।

भगवान् राम १४ वर्ष बनवास में रहे तो भरत ने बनवासी बनकर अयोध्या में १४ वर्ष गुजारे। १४ वर्षों के उपरान्त जब भगवान राम अयोध्या आए तो बड़ा उल्लास था। भरत से पूछा राज्य में वर्षा होती रही अन्न की कमी तो हुई नहीं और फिर दूसरों से बड़े प्रेम से घुलमिलकर बातें करते रहे। भरत जी को रंज हुआ कि मैंने १४ वर्ष गद्दी पर खड़ाऊं रखे, जमीन पर नीचे सोया। फिर भी मुझ से कोई बात ही नहीं की। जब सब चले गए तो भरत ने चरण छुए पूछा कि मुझ से आप नाराज क्यों हैं राज्य की कोई बात ही नहीं पूछी।

श्रीराम जी ने उत्तर दिया भरत संसार में तुम जैसा अनुज भाई मिलना कठिन है तेरे प्रति कितना स्नेह मेरे हृदय में है वह अवर्णनीय है। मैंने सबसे पहले आपसे पूछा कि समय पर वर्षा होती रही। राज्य में अन्न की कमी नहीं हुई। इसमें तुम्हारी सारी कार्य कुशलता निहित थी बोलो कैसे तुझ से कुछ नहीं पूछा भरत जीं शान्त हो गए।

५. **आयुधा अरम् कृणुध्वं** : अस्त्र शस्त्र प्रचुर मात्रा में तैयार करो Latest & effecient अत्याधुनिक तथा कुशल तैयार करो। बिना शस्त्रों के रक्षा कैसे होगी ? अपनी ही आयुध फैक्टरियों में शस्त्र तैयार होनें चाहिएं। दूसरे देशों के मोहताज न बनें। आयुधअधिकारी सदैव नए नए आविष्कार रक्षासम्बन्धी करते रहें। आपत्ति पूछकर या चेतावनी देकर नहीं आती। जब आती है तो चारों ओर से घेरकर आती है अतः राष्ट्र रक्षकों को सदैव होशियार सतर्क तैयार रहना चाहिए। इतिहास शिक्षा देता है कि बहादुरी में राजपूत मुगलों से कम न थे। परन्तु मुग़लों के

पास बन्दूकें तोपें थी जब कि राजपूत तलवार और बरछों से लड़ते थे अत: हथियार Up todaten होने के कारण राजपूत मारे गए, बुरी तरह से हारे।

आर्यावर्त देश में दशहरा क्षत्रियों का त्योहार है। दशहरे से पूर्व क्षत्री अपने हथियारों को तेज करते, चमकाते, अभ्यास करके प्रदर्शन करते थे। इस तरह सदैव राष्ट्र रक्षा की तैयारी बनी रहती थी। प्रजाजनों को सुरक्षित होने का विश्वास रहता राजा प्रजा का परस्पर स्नेह सम्मान स्थाई होता/बढ़ता रहता।

६. अरित्र परणीम् नावं कृणुध्वम्: शत्रु से सुरक्षित पार ले जानें वालीनाव तैयार करो। वेद में समुद्री सेना Navy ships submarinesका आदेश है।

शान्ति काल में भी सेना व शस्त्र पूर्णत: तैयार रहने चाहिएं अभ्यास चलता रहना चाहिए। युद्ध सन्नद्ध राष्ट्र ही स्वतन्त्र व निर्भय रहते हैं। शत्रुओं को चीरकर जाने वाली नौकाएं,जलयान, वायुयान, स्थलयान सदैव तैयार रहने चाहिए।

राष्ट्र के प्रत्येक नर नारी को सैनिक शिक्षा अनिवार्य रूप में देनी चाहिएं। ताकि आपत्काल में यह dead weight न बने,भग-दड़ न मच जाए। कभी कभी आपत्काल का प्रशिक्षण सेना व प्रजाजनों को अवश्य कराया जाना चाहिए।

सज्जनो ! आज भारत वर्ष में किसी वस्तु की कमी नहीं फिर भी कमजोर प्रतीत होता है तो उसका कारण राष्ट्र द्रोही हर मार्मिक स्थान पर बैठे राष्ट्र की मिल्ट्री के राज़ बेचत हैं फिर उन्हें सज़ा नहीं मिलती। कवि ने ठीक कहा है :—

'हर शाख पै उल्लू बैठा हो, अन्जामे गुलिस्तां क्या होगा ।'

दूसरा राष्ट्र के नागरिकों को National charecterका कोई प्रबंध नहीं वहीं अंग्रेजोंके कालकी शिक्षा प्रणाली क्लर्क बाबू बनाने वाली चल रही है । नागरिकों को कभी मिल्ट्री ट्रेनिंग नहीं दी जाती । यह बड़ी anomaly है कमी है ।

राष्ट्र चारों ओर से शत्रुओं से घिरा हुआ है । अरब देश व अमेरिका हमारी उन्नति को देख जलते हैं । अल्पसंख्यकों की खातिर हमेशा बहुसंख्यक हिन्दुओं के हितों का हनन किया जाता है । हिन्दु पहले तो झगड़ा करते ही नहीं फिर राष्ट्र में गृह युद्ध की स्थिति न बन जाए । सब अत्याचार सहन कर लेते हैं परन्तु कब तक ? सहने की भी हद होती है ।

इसके सिवाय कोई चारा नहीं कि भारत वर्ष को हिन्दु-राष्ट्र घोषित किया जाए प्रत्येक नागरिक को सैनिक शिक्षा दी जाए । शिक्षा प्रणाली में तत्काल परिवर्तन हो । राष्ट्र का घोष बने सादा जीवन ऊंचे विचार वन्दे मातरम् ।

आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान पं० शिवकुमार शास्त्री जी द्वारा वेद कथा

आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली का जो वार्षिकोत्सव नवम्बर के तीसरे सप्ताह में मनाया जा रहा है, उस में आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् पं० शिवकुमार शास्त्री जी द्वारा सोमवार १८ नवम्बर से शनिवार २३ नवम्बर तक रात्रि ८ बजे से ९ बजे तक वेद कथा होगी। कथा से आधा घण्टा पूर्व भजनोपदेशक द्वारा भजन होंगे। —रामनाथ सहगल

मन्त्री, आर्यसमाज (अनारकली)

अन्तर्जातीय विवाह विभाग की स्थापना

यह आवश्यक है कि हिन्दू अपनी सन्तानों की शादियां गुण, कर्म स्वभाव के आधार पर करें। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में एक अन्तर्जातीय विवाह विभाग की स्थापना की गई है। यहां इस बातका ध्यान रखा जाता है कि अन्तर्जातीय विवाह में दहेज बाधक न हो। अब तक लगभग ८० अन्तर्जातीय विवाह सम्पन्न हो चुके हैं और सब दम्पती सुखी हैं। आफिस का समय ११ से ५ बजे तक है और सायं ५ बजे से ७ बजे तक व्यक्तिगत बातचीत के लिए सुरक्षित है। विवाह इच्छुक युवक/युवति अथवा उनके संरक्षक निम्न पते पर सम्पर्क करें :—

—डा० मदनपाल वर्मा, अधिष्ठाता-अन्तर्जातीय विवाह विभाग, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

नोटः—सेवा निःशुल्क है।

आश्रम के आँचल से—

आप के प्रिय इस आश्रम में पुरानी गो-शाला का तथा उसके प्रांगण का नव निर्माण पूर्ण हो गया है।

१-११-८६ को अमावस्या यज्ञ के उपरान्त ऋषि निर्वाण दिवस बड़ी श्रद्धा भावना से आर्य नर-नारियों की उपस्थिति में मनाया गया है। सर्व श्री हरिदेव वानप्रस्थी, लाला केवलराम जी, प्रशान्त मुनि वानप्रस्थी एवं पं० विद्याव्रत शास्त्री ने भावभीनी श्रद्धांजलियां एवं कृतज्ञता के भाव व्यक्त किये। महर्षि के क्रियात्मक कार्यक्रमों को अपना कर विश्वहित में योगदान करने का संकल्प लिया।

परमश्रद्धेय स्व० गुरुदेव महात्मा प्रभु आश्रित जन्म-शताब्दी के सम्बन्ध में निम्न प्रगति हुई—

क) शतकुण्ड यजुर्वेद पारायण यज्ञ के सम्बन्ध में आश्रम में संचालक महात्मा दयानन्द जी की अध्यक्षता में बैठक हुई। जिस में प्रगति का लेखाजोखा लिया, तथा आगामी कार्यों को बाँटकर सुभीता और समय पर करने की योजना बना ली गई है। भयंकर महंगाई के कारण, प्रत्येक कुण्ड का व्यय अनुमानतः दो हज़ार होगा। चाहे तो याजक अग्रिम दें, या यज्ञ के अवसर पर दें।

ग) शताब्दी निमित्त उदार दानी महानुभावों के हम अत्यन्त आभारी हैं—जिन्होंने श्रद्धा के साथ पुण्य-कार्य में हाथ भी बटाया है, और अपना आगामी दिव्य बैंक बैलेंस भी बढ़ाया है। पूज्य महात्मा जी ने निम्न सूची प्रदान करते हुए—कुछेक नाम याद न आने के लिये क्षमा माँगी।

श्रीमती कृष्णा माटादन्दून 1000/-
,, रामदेवी – 1000/-
,, शांति देवी – 1000/-
,,लीलावती सूरी रोहतक 1100-
कु० पुष्पा महता करतारपुर 2500/-
श्री तेजभान द दून 100/-
,, केसरदास – 1001/-
श्रीमती सरोज कुकड़ेजा
दिल्ली 1001/-
श्रीमती चेतन देवी – 2500/-
श्री भोलाराम द दून 1001/-
,, छबीलदास – 1001/-
,, रमेशचन्द चांदपुर 1000/-
,, सुन्दरदास – 600/-
,, रामकिशन – 600/-
,, उत्तमचन्द – 600/-
,, हरीशचन्द – 600/-
श्रीमती जानकी देवी चांदपुर 600/-
श्री गोविन्द दास – 1500/-
,, किशन चन्द – 2500/-
,, हाकिमराए – 600/-
,, जगदीश चन्द – 600/-

श्री ओमप्रकाश कलकत्ता 1500/-
,, रामधारी किरतरपुर 2100/-
,, चयनमुनि दून 1111/-
,, मुलतानीराम दिल्ली 1000/-
,, दीपचन्द किरतपुर 2500/-
श्रीमती ईश्वर देवी रोहतक 1100/-
,, लज्जावन्ती दिल्ली 1100/-
,, सत्य भामा कैनेडा 1100/-
श्री चमनलाल महाजन
दिल्ली 1000/-
चौ० लीलाधर – 1000/-
श्री पुरषोत्तम लाल आगरा 1000/-
चड्ढा परिवार दिल्ली 1100/-
श्रीमती सत्यभामा सोनी 2000/-
श्रीमति सुखदेवी कालड़ा
पानीपत 1000/-
श्री देसराज लखनऊ 1000/-
,, अर्जुन देव माहना
लखनऊ 1000/-
द्वारा राजकुमार परवानी
बम्बई 3000/-
द्वारा महेन्द्र वधवा – 3000/-

फोन : २४ शुद्ध तेल एवं खली के निर्माता

मैसर्ज ओंकार आयल मिल

नरखेड़ ४४१३०४ (महाराष्ट्र)

(१) श्री पं० लखपति जी निम्न सूची देकर हार्दिक धन्यवाद व्यक्त करते हैं:—

श्री हरवंसलाल बहलद्वारा 400/-
,, डा. ओमप्रकाश फरीदाद 250/-
(250/- का वायदा भी)
,, रमेश जी फरीदावाद 250/-
,, कृष्ण जी — 150/-
,, चन्द्रप्रकाश कुकड़ेजा द्वारा 1000/-
श्रीमती लोकोवाई द्वारा 1000/-
आचार्य सोमव्रत जी द्वारा 400/-
श्री हरीचन्द्र वीरेन्द्र वत्रा
(यजमान) 1100/-
श्रीसती निर्मल गुप्ता तथा
माता जी-वान. आ. ज्वाला० 2100/-
श्रीमती सुशीला कुकड़ेजा
डिफैंस कालोनी 500/-
श्रीमती राजकपूर करनाल 1000/-
,, चन्द्रकला हांसी 600/-

(२)

श्री वेदराज स्नातक हांसी 1000/-
,, कृष्णकांत बलदेवराज
चारला मायापुरी दिल्ली 1200/-
महा० व्यासदेव जी स्व० धर्मपत्नी
की स्मृति में 'सेवा धर्म'
के प्रकाशार्थ 2350/-
ओमप्रकाश गोगिया गाजियाबाद 500
श्री प्रकाश पुरुषोत्तम डुडेजा
(विशाल इन्क्लेव-दिल्ली 1000/-
,, सुरेन्द्र वर्मा-धर्मज्यूलर्ज
नजफगढ़ 400/-
माता सोहन देवी, सरलाचन्द्रभान चुघ,
कौशल्या नागपाल, मंत्राणी सोहन गंज
आर्य समाज प्रत्येक 200/-

पूज्य स्वामी जीवनानन्द जी सरस्वती के द्वारा ६८०/- की दान राशि भी प्राप्त हुई है ।

घ) आश्रम का कार्तिकमासीय वार्षिक यज्ञ ४/११/८६ से १६/११/८६ तक बड़ी निर्विघ्नता और शोभापूर्ण रीति से पूर्ण सफलता से हुआ। जिसमें ९/११/८६ को स्वर्गीय गुरुदेव जी की तपः स्थली सुन्दर पुर कुटिया पर पवित्र सामवेदपाठ, यज्ञ एवं श्रद्धांजलियों के साथ ऋषिलंगर हुआ । श्रद्धालु नर-नारियों ने रुचि पूर्वक भाग लिया १५/११/८६ को अखण्ड-गायत्री-यज्ञ ५ घण्टों के लिये वातावरण को गायत्री-मय बनाए रहा । १६/११/८६ को पूर्णाहुति, ऋषि लंगर और आशीर्वाद से सम्पन्न हुई । समारोह सात्विक, उत्साह और श्रद्धा से पूर्ण, हृदयस्पर्शी रहा ।

With best compliments from : *Post Box No. 1073*

D. L. GOBIND PERSHAD

1418, Chandni Chowk, DELHI-110006.

Tele. Resi. 227469
743310

Office : 251118
252462

Authorised Distributors for :

DUNLOP' HOSES

Belting, Vee Belts, Trolley Wheels & Solutions etc.

DUCK BACKS:—Rain Coats, Gumboots and Mackantosh & Rubber Sheets etc.

Linoleum, Coir Matting & Mats, Jute Matting, Cotton Durrets, Tapestry Canvas, Rexin Cloth, M. M. Foam Local Rubber Matresses & Pillows, Plastic, Rubber Matting & heets etc.

Halloo : 41580

Durga Thread Manufacturing Com.

Manufacturers of : *All Types of Threads :— D. T. M. Brand, Jehagir Brand and* 261, *Brand, Thread Balls and Cones.*

Factory : 405, Satnami Layout, Central Avenue Road, NAGPUR-440-008

OFFICE : 39-A, Wholesale Cloth Market, Ghandhi Bagh, NAGPUR-440 002

Telephone { 3312251
3312252
3312253

For Efficient Handling

Book Your Cargo

Through

Kwick Handling Service

N-6, IDDLE CIRCLE

NEW DELHI.

फोन { घर —52084
दुकान —35182

अल्फा हवाई चप्पल

गारन्टी ६ मास

निर्माता : जोरो एण्ड सन्स

होलसेलर **राज चप्पल स्टोर**

व० अ० गंगा प्रसाद रोड़, अमीनाबाद (लखनऊ)

बढ़िया सूटिंग शर्टिंग के लिए पधारिये

बाम्बे क्लाथ स्टोर्ज, महाल नागपुर

फोन : ४०५७५

With best compliments from :

THE AGGARWAL FURNITURE HOUSE
KARTARPUR

Head Office : *Phone :* 24

Furnishers and Decorators

Branch Office : *Phone :* **3425**

Cannaught Place, Dehradun

फोन : दुकान ४१६६८ निवास : २३६६३

★ चावला साड़ी केन्द्र ★

—आधुनिक साड़ी व पातल के प्रमुख विक्रेता—

न्यू इतवारी रोड़, बडकस चौक, नागपुर–४४०००२.

शुभ कामनाओं सहित

फोन : **52015, 52031**

संजय सोप वर्क्स

बारा बिरवा

आलम बाग, लखनऊ-२२६००५

उच्चकोटि के साबुनों के निर्माता

—: सत्यकाम साबुन :—

With best compliments from :

Intercraft South [Exports] Pvt. Ltd.

186, Thambu Chetty Street,
Madras-600 001

TELEPHONE : 20947/9 30757–Home 450432/453830
Telex 41 7348 SSC

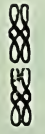

Factory :

13/14, Davidson Street, Madras-600 001

TELEPHONE : 24028 Telex 41 6073 IXES

(ङ) पत्रिका में इस बार राष्ट्रयज्ञ पुस्तक जिसे वेद-स्वाध्याय के प्रति समर्पित पूज्य महात्मा दयानन्द जी ने भावोन्मेषिणी व्याख्या से सुशोभित किया है, दी जा रही है।

(च) ग्राहक बन्धु ध्यान दें:—आपको अक्तूबर—नवम्बर ८६ के संयुक्त विशेषांक की भेंट देने का वचन पूरा किया गया है। अपनी ओर से हम पूरी सावधानी से इसे डाक द्वारा प्रेषित कर रहे हैं फिर भी किसी कारणवश प्रति आपको २४ तिथि तक न मिले, तो पत्र द्वारा हमें सूचित करें—हम भरपाई का प्रयत्न करेंगे।

—सम्पादक

हमेशा खायें फोन : 231702

स्वादिष्ट मजेदार

MEGHRAJ

मेघराज फतेहपुरी (दिल्ली) वाले के मीठे,
नमकीन बिस्कुट

मेघराज बिस्कुट कम्पनी

82 फतेहपुरी देहली 110006

फोन : 2529937

महर्षि निर्वाण

भूतल में छाई सी वेदना साकार आज
दीखता है जगती में दुःखमय विकार आज
चन्द्र ! कहो कारण क्या तम का प्रसार क्यों
मारुत क्यों चलता है पीड़ित सा आकुल क्यों ॥१॥

विस्मित अवाक् शशि होके सजल नयन
स्तंभित हृदय थाम बोले कुछ करुण बयन
दिनकर! क्या ज्ञात नहीं ऋषिवर का निश्चय वह
आज्ञा पा प्रभुवर की सुरपुर का निर्णय वह ॥२॥

जगती को छोड़ आज नश्वर शरीर त्याग
जाएगे आज ऋषि मिलने प्रभु सुर समाज
हा ! क्या यह वज्रपात बोले सुन भानुदेव
विह्वल हो गले लिपट रोये रविचन्द्र देव ॥३॥

तैजस को छोड़ चन्द्रभानु कहां खो गए
आगई आमावास्या तममय सब हो गए
विकल हुए आर्य वृन्द छाया वह तिमिर देख
रोदन कर उठे हाय ऋषि का प्रस्थान देख ॥४॥

जाते हो देव ! कहां छोड़ हमें कर अनाथ
कौन भाग्यशाली है करने जिसको सनाथ
आर्यो की प्रिय समाज नेता ऋषि दयानन्द
सह न सके गौरव क्या पृथ्वी का अमर वृन्द ॥५॥

हतप्रभ हो गए दीप कम्पित वह अवली भी
काँपी यह धरणी भी गिरिमाला चलती सी
ऋषिवर की आत्मा वह चमकी घन ज्योति सी
अन्तर्लय हुई अरे प्रभु में चिर ज्योति सी ॥६॥

पाया वह परम धाम अविकल विश्राम धाम
जगत् वन्द्य मुनि! तुम को बार-बार है प्रणाम

—डॉ० श्वेत केतु शर्मा बरेली।

1061-सं० श्रीमती राजरानी महला
386-- रिहाड़ी कालोनी, जम्मूतवी
180005